|| श्री शासनपति महावीराय नमः ||
|| गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ||

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

पुण्य सम्राट

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | अक्टूबर-2021

दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

चर्चा चक्रवर्ती परम आगमज्ञाता, गुरुदेव श्रीमद् विजय
धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. निर्वाण शताब्दी
वर्ष अपने यहाँ कार्यक्रमों सहित आयोजित कीजिए
अ.भा. श्री सौधर्मतपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ
अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला, तरुण, बालिका परिषद

अहमदाबाद में तपस्या का अद्भुत कुंभ

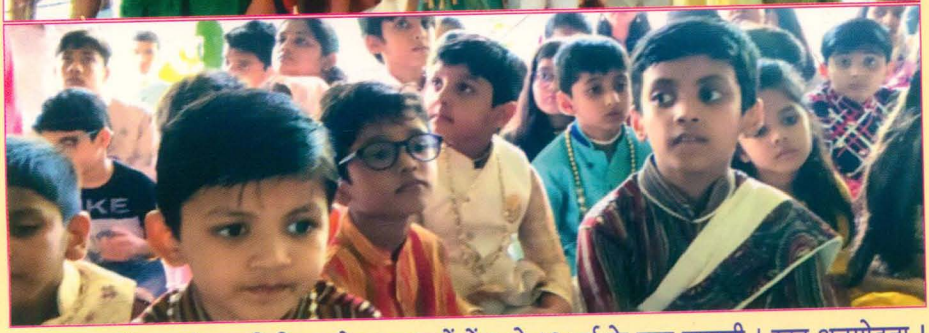

अहमदाबाद में अट्ठाई तथा सिद्धितप के आराधकों में 3 से 12 वर्ष के बाल तपस्वी ! खूब अनुमोदना ।
सान्निध्य-मुनिराज जिनागमरत्नविजयजी आदि मुनिराज तथा साध्वी समुदाय ।

गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित

- अश्विन शुक्ल 7, मंगलवार दि. 12 अक्टूबर 21 श्री नवपद ओली आराधना प्रारंभ ।
- अश्विन शुक्ल 15, बुधवार दि. 20 अक्टूबर 21 श्री नवपद ओली आराधना पूर्ण ।
- कार्तिक कृष्णा 13, मंगलवार दि. 13 मंगलवार दि. 2 नवम्बर 21 धनतेरस ।
- कार्तिक कृष्णा 30, गुरुवार दि. 4 नवम्बर 21 दीपावली शारदा लक्ष्मी पूजन ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, नैनावा (गुजरात)
10. श्री जैन श्वे., त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
11. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
12. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला – जालोर (राज.)
13. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला – रतलाम (म.प्र.)
14. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा म.प्र.)
15. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
16. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम) म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

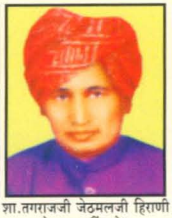

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

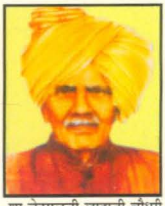

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

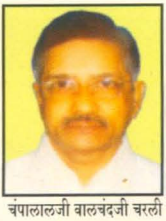

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

वि. ३८२००७

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

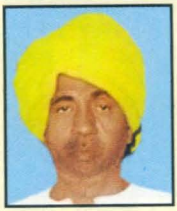

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

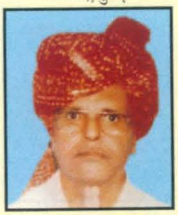

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

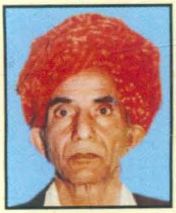

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

36484

हमारे गौरव

शा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

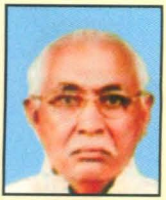

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

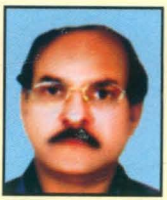

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

स्व.श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-थलवाड़, नेल्लोर

मुथा धानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड़ में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

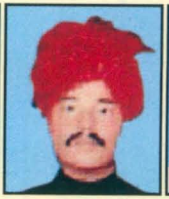

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

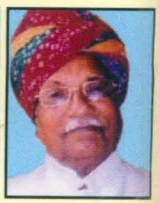

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

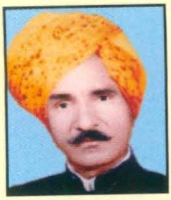
स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

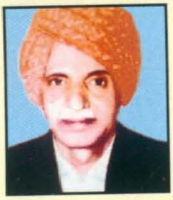
स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

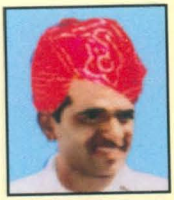
संघवी श्रा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटिवाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

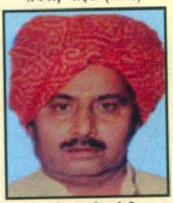
श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

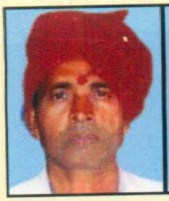
श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

श्रा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

श्रा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

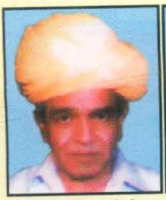
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

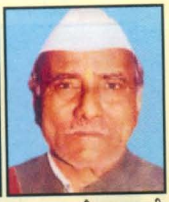
दलाल स्व. श्री बाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामरणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाथाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सचु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

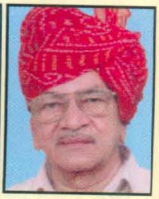
शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी झाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
मोगीलाल रूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

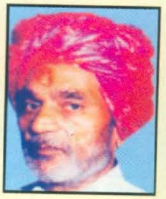
श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

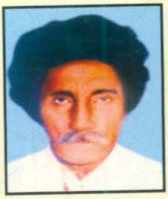
संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

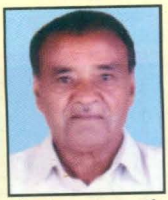
मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

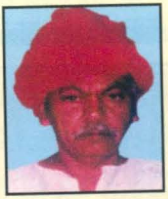
अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

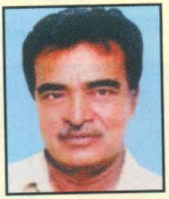
श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तलेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

श्री मानसिंहजी राजगढ़

स्व. श्री कालूरामजी औरा टोपीवाले, रतलाम

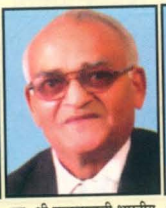
स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय खाचरौद

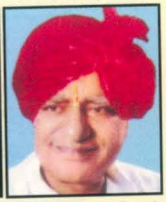
जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी राठौर (बड़नगर)

हमारे गौरव

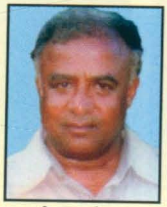

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

स्व.श्री रितेशकुमार
शांतिलालजी डुंगरवाल, इन्दौर

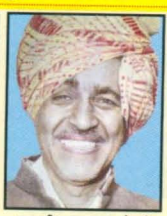

स्व.श्री सागरमल भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

स्व.श्रीमती चन्द्रकान्ता
सागरमलजी भंडारी
(झाबुआ) इंदौर

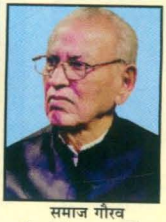

समाज गौरव
श्री शांतीलाल सकलेचा
रानापुर

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावडी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबडी, बीजापुर (कर्नाटक)

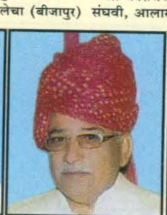

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक
शाश्वत धर्म
अक्टूबर 2021 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 69 अंक 9
वीर सं. 2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2078

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुधीर लोढ़ा	(महामंत्री)
श्री ओ.सी. जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)
आदि	

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

नश्वर का क्या श्रृंगार करना ?

'अरे यह शरीर, यह तो नश्वर है । यह अनित्य है। इस पर ममता, औफ ! मेरा भ्रम है ! इसका सौन्दर्य क्या है धोखा है ?'

भरत चक्रवर्ती आदमकद आईने के सन्मुख खड़े थे। उनने एक – एक कर सभी आभूषण उतार दिये थे।

उनका विचार लगातार चिन्तन कर रहा था।

भरत चक्रवर्ती

छह खंड के राजा थे एवं उनके 64 हजार रानियां थीं।

वे आरीसा भवन में अपने रूप तथा शणगार को निरखा करते थे। तभी उनकी निगाह उनकी एक उंगली पर पड़ी जिस पर कोई आभूषण नहीं था। उनको लगा कि वास्तविक मेरा रूप यही है, शेष सब कृत्रिम बनावटी है।

उनने उस उंगली के पास वाली उंगलियों व अंगूठे के आभूषण उतारे। उनको अपना शरीर हकीकत लगने लगा।

'अरे ! इस शरीर पर क्या रीझना ? इसका कोई भरोसा नहीं । वास्तविक सौन्दर्य तो आत्मा का है। मुझे आत्मा का सौन्दर्य निखारना है। मैं कहां बावला बन रहा हूं? इस नाशवान शरीर के दिखावे में ।'

भरत चक्रवर्ती अनित्य भावना की गोद में समा गये। वे अनित्यता पर विचारों में खोते हुए आत्मोन्नयन की सीढ़ियां चढ़ने लगे।

उन्हें वहीं, केवल ज्ञान हो गया।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

संचालक– अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

अनुक्रमणिका

1.	गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि वचनामृत	9
2.	प्रवचन (श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा.)	10
3.	प्रभुजी (स्व. श्री दीपविजयजी म.)	12
4.	सच्चा यज्ञ (डॉ. दिलीप धींग)	13
5.	काला धागा क्यों बांधा जाता है ? (साध्वी श्री लक्षिताजी म.)	14
6.	सम्पादकीय (श्री सुरेन्द्र लोढ़ा)	16
7.	32 आगमसूत्रों में मूर्तिपूजा का उल्लेख (श्री शान्तिलाल सगरावत)	18
8.	अध्यक्षीय पाती (श्री वाघजीभाई वोरा)	20
9.	अध्यक्षीय संदेश (श्री रमेशभाई धरू)	21
10.	चिन्तन का चित्रांकण (गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	22
11.	अतिथि रचना (वर्धमान तपोनिधि आचार्य श्रीमद् विजय कल्याणबोधि सूरीश्वरजी म.सा.)	23
12.	उत्तम आहार शाकाहार (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	24
13.	गणधरवाद (श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	25
14.	तीर्थंकर - तारेश (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	27
15.	श्री नवकार कल्पद्रुम (मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)	28
16.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)	30
17.	वैराग्य सज्झाय (साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	31
18.	किस्मत की बात (श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	33
19.	श्री जयंतसेन जयनाद (मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.)	35
20.	समकित मोती (पुनीत संजय सकलेचा)	38
21.	राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के हस्ताक्षर	40
22.	पूजा के दस त्रिक (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	41
23.	दादा गुरुदेव :शांति व क्रांति के अग्रदूत (धीमीगतिवाला)	43
24.	आहार वहोराने की विधि (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	45
25.	कालचक्र परिचय (श्री सुरेन्द्र गंग)	48
26.	गुजराती संभाग	49
27.	कुमकुम सने पगलिये	71
28.	श्री संघ सौरभ	81
29.	जैन विश्व	85
30.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	87

गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरि वचनामृत

वैराग्य है तो किसी का भी भय नहीं

* भोगों के भोगने में व्याधियों के होने का, कुल या उसकी वृद्धि होने में नाश होने का, धनसंचय करने में राजा, चोर, अग्नि और संबंधियों का, मौन रहने में दीनता का, बल - पराक्रम मिलने में दुश्मनों का, सौंदर्य मिलने में वृद्धावस्था का, सद्गुणी बनने में इर्ष्यालुओं का और शरीर-संपत्ति मिलने में यमराज का, इस प्रकार प्रत्येक वस्तुओं में भय ही भय है। संसार में एक वैराग्य ही ऐसा है कि जिसमें किसी का, न भय है और न चिन्ता। अतः निर्भय, वैराग्य मार्ग का आचरण करना ही सुखकारक है।

* जिस प्रकार वनाग्नि वृक्षों को, हाथी वनलताओं को, राहु चंद्रमा की कला को, वायु सघन बादलों को और जलपिपासा को छिन्न-भिन्न कर डालता है, ठीक उसी प्रकार असंयम भावना आत्मा के समुज्ज्वल ज्ञानादि गुणों को नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है। जो लोग अपनी असंयम भावना को निजात्मा से निकालकर दूर कर देते हैं और फिर उनके फंदे में नहीं फंसते, वे अपने संयमभाव में रहते हुए अपने ध्येय पर आरूढ़ होकर सदा के लिए अक्षय सुखविलासी बन जाते हैं। इतना ही नहीं उनके आलंबन से दूसरे प्राणी भी अपना आत्मविकास करते रहते हैं।

* संयम को कल्पवृक्ष की उपमा है, क्योंकि तपस्या रूपी इसकी मजबूत जड़ है, संतोषरूपी इसकी स्कंध है, इन्द्रियदमन रूपी इसकी शाखा-प्रशाखाएँ हैं, अभयदान रूप इसके पत्र हैं, शील रूपी इसमें पुष्प हैं और यह श्रद्धा जल से सींचा जाकर नवपल्लवित रहता है। ऐश्वर्य और स्वर्गसुख का मिलना इसके पुष्प हैं और मोक्षप्राप्ति इसका फल है। जो इस कल्पवृक्ष की सर्व तरह से रक्षा करता है, उसका सदा के लिए भवभ्रमण के दुःखों का अंत हो जाता है।

* पर - दोषानुप्रेक्षी होने की अपेक्षा स्वदोषानुप्रेक्षी होना विशेष अच्छा है। परसंपत्ति की ईर्ष्या करने की अपेक्षा अपने कर्मों की आलोचना करना विशेष लाभजनक है। दूसरों की बुराई करने की अपेक्षा अपने आत्मदोषों की बुराई करना उत्तम है।

◆◆◆

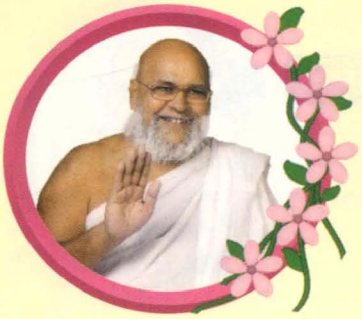

प्रवचन

अहंकार ही नर्क में ले जाता है

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

उत्तर में उसने कहा- '(द्वार किमेकं नरकस्य! नारी) नरक का एक मात्र द्वार है, नारी। इसलिये नारी ही नरक में ले जाती है। किसी साधु ने नारी को नरक की खान तक बताया है (नार नरक की खानि)।'

प्रश्नकर्त्ता : 'यदि नारी ही नरक में ले जाती है तो फिर नारी को नरक में कौन ले जाता है?'

उत्तरदाता : जो काम-भोग में आसक्त हैं, वे अपवित्र व्यक्ति नरक में जाते हैं :-

प्रश्नकर्त्ता : कामभोगेषु, पतन्ति नरकेऽशुचौ ।।

इसलिए काम- भोग स्त्री, पुरुष दोनों को नरक में ले जाते हैं।

प्रश्नकर्त्ता : 'जो व्यभिचार से दूर रहकर विवाहित जीवन के सुख भोगते हैं, वे नरकगामी कैसे होंगे?'

उत्तरदाता : 'काम, क्रोध और लोभ ये तीनों आत्मा के दूषक हैं- नरक के द्वार हैं, इसलिए इनका त्याग करना चाहिये।

त्रिविधं नरकस्यैदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् ।।

इससे मालूम होता है कि काम, क्रोध और लोभ जीवों को नरक में ले जाते हैं।

प्रश्नकर्त्ता : 'श्रीराम, श्रीकृष्ण, पैगम्बर मुहम्मद आदि सुशील व्यक्ति भी काम सेवन करते रहते हैं। अत्याचारियों के विरुद्ध युद्ध में ये तीनों क्रुद्ध भी होते रहे हैं, फिर भी ऐसे पुरुष नरक में जाते हैं- ऐसा कोई नहीं मान सकता। रही बात लोभ की, सो सिंह-साँप - भालू आदि क्रूर प्राणी भी नरक में जाते हैं, जबकि इनमें धन या उपहार का लोभ नहीं होता।'

उत्तरदाता : 'जो मित्रों के द्वेषी होते हैं, कृतघ्न (दूसरों के उपकार का आभार न मानने वाले) होते हैं और विश्वासघाती होते हैं, वे लोग युगों तक नरक में रहते हैं।'

प्रश्नकर्त्ता : ' यह उत्तर भी संतोषजनक नहीं मालूम होता, क्योंकि गाय, बैल, बकरी, हाथी जैसे अनेक पशु नरक में नहीं जाते और हिंसक बाघ, सिंह, भालू आदि नरक में जाते हैं, परन्तु कोई भी पशु मित्रद्रोही, कृतघ्न और विश्वासघाती नहीं होता।'

देर तक चलने वाले इस वाद-विवाद को सुनकर स्वामी विवेकानन्द ने सहसा पूछा- 'यह प्रश्न है किसका ?'

प्रश्नकर्त्ता : 'मेरा।'

स्वामीजी : 'बस, यह 'मेरा-मेरा', अहंकार ही मनुष्य को नरक में ले जाता है।'

इससे प्रश्नकर्त्ता संतुष्ट हो गया और फिर सबने भोजन किया।

मोह के दो मंत्र हैं – 'मैं' (अहंकार) और 'मेरा' (ममता), जो जगत् को अंधा बना देते हैं।

श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाने में बड़े निपुण थे। जब वे उसमें से कोई रागिनी निकालते तो दूर-दूर से स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षी समीप आकर बैठ जाते और उसकी स्वर-लहरी में डूब जाते थे। बाँसुरी की मधुर ध्वनि के बल पर ही भयंकर विषधर कालिया नाग को नाथने (वश करने) में उन्हें सफलता प्राप्त हुई थी। बाँसुरी की मीठी आवाज का महत्त्व वे समझते थे, इसीलिए राधा की अपेक्षा बाँसुरी उन्हें अधिक प्रिय थी। खेल-खेल में जब राधाजी बाँसुरी को छिपा देतीं तो वे अत्यन्त बेचैन हो उठते थे।

एक दिन राधाजी ने बाँसुरी से पूछा- 'हे बंशी ! श्रीकृष्ण सबसे अधिक प्यार तुमसे ही क्यों करते हैं ? क्या रहस्य है इसका ?'

इसके उत्तर में बाँसुरी ने कहा- 'मैं भीतर से पोली हूँ, अहंकार शून्य हूँ, इसलिए मुझे श्री कृष्ण जैसे भी चाहें, बजाकर सबको चकित किया करते हैं।'

यह सुनकर राधाजी ने समझ लिया कि जिसके मन में अहंकार नहीं होता, उसके मुँह से भगवान की ही वाणी प्रकट होती है- वह वाणी जो सभी को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। उस दिन से स्वयं भी राधाजी ने अपने को अहंकार शून्य बनाने का प्रयास प्रारंभ कर दिया।

वैसे देखा जाय तो अहंकारी भी भीतर से शून्य होता है- बिल्कुल खोखला, परन्तु वह अपने को भरने की कोशिश करता है- सपने की सफलताओं से, नकली हीरों से, दिखावटी विजयों से।

शिकार खेलने के लिए कुछ लोगों ने एक दल बनाया। उसमें शामिल होने के लिए उत्कण्ठित एक आदमी वहाँ आया। आदमी दल के कप्तान से मिला। कप्तान ने दल में शामिल करने से पहले उस आदमी से इंटरव्यू लेना उचित समझा और पूछा- 'क्या आपने कभी किसी जंगली पशु को मारा है?' आदमी ने उत्तर दिया- 'जी हाँ ! मैंने एक बार एक सिंह की गर्दन मरोड़ दी थी, एक हाथी की सूँड एक झटके में उखाड़ फेंकी थी, एक भालू के पाँव तोड़ दिये थे और एक अजगर के दो टुकड़े कर डाले थे।'

(क्रमशः) ◆◆◆

प्रभुजी

(स्व. श्री दीपविजयजी म.)

जिनवर अरजी गरजी धार के, ए राह

प्रभुजी - मरुदेवा सुत श्याम के, भेट्या भावसूं रे लो ।।टेर।।
प्रभुजी- आदिकरण अरिहंत के, सुरतरु पेखिया रे लो ।।
प्रभुजी-तारण तरण जिहाज के, मैं तुम लेखिया रे लो ।।
प्रभुजी-महिर करी महाराज के, विरुद विचारिये रे लो।।
प्रभुजी-जाए भवदवताप के, विनती धारिये रे लो ।। प्र.म. ।।1।।
प्रभुजी - रवि देखि नवि घूक के वली जिम चोरडा रे लो ।।
प्रभुजी-शूरसुं कायर हार के, वली अहि मोरडा रे लो ।।
प्रभुजी-तिम मुझ कर्मप्रचार के, तुम दरशे नश्या रे लो ।।
प्रभुजी - निरख्या परम रसाल के, नयणां में वस्या रे लो ।। प्र.म. ।। 2।।
प्रभुजी पंचामृतने पाय के, कुण खलने भख रे लो ।।
प्रभुजी-लहि मुक्ताफल हार के, नवि गुञ्जा रखे रे लो ।।
प्रभुजी - क्षुद्र भुवननी आस के, अमृतथी तजे रे लो ।।
प्रभुजी- चिन्तामणिने लेय के, कुण कंकर भजे रे लो ।। प्र.म. ।।3।।
प्रभुजी- हेमपुरुष ने पाम के, चाकरी नवि धरे लो ।।
प्रभुजी-घर में प्रगट निधान के, मनवांछित करे रे लो।।
प्रभुजी तिम मिलिया मुझ आज के, अवर न रसी रे लो ।।
प्रभुजी- मिथ्या दुरमति टेव के, गई मुझथी खसी रे लो ।। प्र. म. ।।4।।
प्रभुजी-बीबडोदे शुभ यात्रा के, कीनी रंगसूं रे लो ।।
प्रभुजी- रत्नपुरी संघ साथ के, भाव अभगसूं रे लो ।।
प्रभुजी-युग रस गुरु इक, मृगशिर वद एकम दिने रे लो ।।
प्रभुजी सूरिराजेन्द्र पसाय के, दीपविजय गिने रे लो ।। प्र.म. ।।5।।

◆◆◆

सच्चा यज्ञ

(डॉ. दिलीप धींग)

(निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र)

किसी समय द्रव्ययज्ञ का अतिशय प्रचार और यज्ञ के नाम पर हिंसा को खुला समर्थन दिया जा रहा था। यज्ञ में नरबलियाँ और पशुबलियाँ तक होने लग गई थीं। ऐसे समय में निर्ग्रंथ (जैन) परम्परा ने यज्ञ को नवीन और सम्यक् अर्थ दिये। उत्तराध्ययन सूत्र (12/42) में कहा गया है कि जो पाँच संवरों से सुसंवृत हैं, जो असंयमी जीवन की इच्छा नहीं करते हैं, ऐसे देह-ममत्व के त्यागी पवित्र भाव रखने वाले महाजयी श्रेष्ठ यज्ञ करते हैं-

सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणा।
वोसट्ठ काया सुइचत्तदेहा, महाजयं जयइ जन्नसिट्ठं ।।

ऐसे यज्ञ की विधि बताते हुए उत्तराध्ययन सूत्र (12/44) में कहा गया कि तप ज्योति है, जीवात्मा ज्योतिकुण्ड है, मन, वचन और काया की प्रवृत्तियाँ ही घी डालने की कुलछियाँ हैं, शरीर के अवयव ज्योति प्रदीप्त करने के कण्डे हैं, कर्म ईंधन है और कर्मों (पापों) को नष्ट करना ही आहुति है। यही यज्ञ शांतिकारक और सुखदायक है। ऋषियों ने ऐसे ही यज्ञ की तारीफ की है-

तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजम जोग संति, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ।।

इस तरह की सकारात्मक व्याख्याओं का जन-जीवन पर गहरा सुप्रभाव हुआ। फलस्वरूप वैदिक और बौद्ध परम्परा ने भी यज्ञ के आध्यात्मिक और सामाजिक स्वरूप का अनुमोदन किया। उपनिषद् और गीता में भी यज्ञ के अहिंसक और सेवामय स्वरूप का समर्थन किया गया।

इसी प्रकार उस समय कुछ लोग कहते थे कि बाहरी सफाई या शारीरिक स्वच्छता काफी है। कुछ लोग कहते थे कि किसी नदी या जलाशय विशेष में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं। इस प्रकार के निराधार और अवैज्ञानिक तथ्यों के निराकरण के लिए उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया कि धर्म जलाशय है और ब्रह्मचर्य तीर्थ (घाट) है। उसमें स्नान करने से आत्मा, शान्त, निर्मल और पवित्र हो जाती है। उत्तराध्ययन सूत्र में ब्राह्मण और ब्राह्मणत्व को भी उसके सही, श्रेष्ठ व गौरवपूर्ण अर्थ में प्रतिष्ठित किया गया है।

वस्तुतः समय की विभिन्न धाराओं और समाज की प्रचलित मान्यताओं को अर्थवान व मूल्यवान बनाने तथा जन-जीवन को अंधविश्वास से मुक्त करने में जैन परम्परा की ऐतिहासिक, क्रान्तधर्मी और सकारात्मक भूमिका रही है।

(डॉ. दिलीप धींग द्वारा 31 जनवरी 2018 को मद्रास विश्वविद्यालय में प्रदत्त व्याख्यान का अंश)

◆◆◆

काला धागा क्यों बांधा जाता है ?

ज्योतिष के अनुसार काले धागे से लाभ

(साध्वी श्री लक्षिताजी म.)

धर्म शास्त्रों के अनुसार काले धागे का महत्व मानव जीवन में बहुत ज्यादा है। पैर में काला धागा पहनने की परम्परा आज की नहीं है, ये काफी प्राचीन है। कुछ घरों में बच्चों के जन्म होते ही या उसके कुछ समय बाद उसके पैर में या गले में काला धागा पहना देते हैं, जिससे बच्चे को नजर न लगे। आज के समय में ज्यादातर लोग शौकिया तौर पर पहन लेते हैं। इसे फैशन समझने लगे हैं और लोग देखा-देखी अलग-अलग तरह के धागे पहनने लगे हैं। धागा पहनने के पीछे क्या कारण है हम बताते हैं-

(1) काला धागा मंगलवार को पहनें – शास्त्रों के अनुसार यदि आप अपने दाएं पैर में मंगलवार के दिन काला धागा बाँधते हैं तो आपके घर में, जीवन में धन की समस्या बहुत जल्द दूर हो जायेगी।

(2) पेट दर्द की शिकायत दूर करता है काला धागा– आपने बहुत सारे लोगों को पेट दर्द की शिकायत के बारे में सुना होगा। पेट दर्द की समस्या कई बार नाभि हिल जाने के कारण भी होती है। ऐसे लोगों को दोनों पैरों के अंगूठे में काला धागा बांधना चाहिए। आपको पेट दर्द की समस्या से राहत मिलेगी।

(3) पैर में चोट लगने पर काला धागा पहनें – कई बार पैर में चोट लग जाती है और वो कई दिनों तक ठीक नहीं हो पाती। ऐसे में आप अपने पैरों को जल्दी ठीक करने के लिए अपने पैरों में काला धागा पहन लें। आपको राहत मिलेगी।

(4) पैरों में दर्द महसूस होने पर काला धागा पहनें– कई बार ज्यादा काम करने की वजह से हमें बहुत ज्यादा थकान महसूस होती है। पैरों में दर्द महसूस होता है तो आप अपने पैरों में काला धागा पहन लें। ऐसा करने से आपके पैरों का दर्द तुरंत चला जायेगा और आप अच्छा महसूस करेंगे।

(5) बुरी नजर से बचाए काला धागा – कई सालों से इसे हाथ, पैर, गले और बाजू में बांधा जाता रहा है। इसे नजर से बचने के लिए बांधा जाता है। हमारा शरीर पांच तत्वों से मिलकर बना है- आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी । इनसे मिलने

वाली ऊर्जा हमारे शरीर का संचालन करती है। जब किसी इंसान की बुरी नजर लगती है तब इन पंच तत्वों से मिलने वाली ऊर्जा (सकारात्मक ऊर्जा) हम तक नहीं पहुंच पाती इसलिए कुछ लोग पैर में या गले में धागा बांधते हैं ताकि नजर दोष से बचा जा सके।

(6) नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है काला धागा– तंत्र शास्त्र के अनुसार काला धागा नकारात्मक ऊर्जा को सोख कर अपने भीतर समा लेता है और पहनने वाले पर नकारात्मक ऊर्जा का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है। काला धागा शनि और राहु से संबंधित माना गया है।

(7) शनि दोष से बचने के लिए काला धागा पहनें – काला रंग उष्मा का अवशोषक होता है इसलिए काला धागा बुरी नजर व हवाओं को अवशोषित कर देता है। यह एक तरह से कवच का काम करता है। शनि दोष से बचने के लिए घर के मुख्य द्वार पर काला धागा बांधने से घर की बीमारी, शत्रुता, मुसीबतों और दरिद्रता का नाश होता है। काले धागे का महत्व बिना नवकार मंत्र के कुछ भी नहीं है, इसलिए काला धागा बांधने के बाद प्रतिदिन नवकार मंत्र का पाठ करना चाहिए। ◆◆◆

साहित्य समीक्षा

ध्यान विचार

विवेचक–आचार्य श्री विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी महाराज, भाषा– संस्कृत, प्रकाशक– मोतीलाल बनारसीदास, 41, यू.ए. बंगला रोड़, जवाहर नगर, कमला नगर, देहली– 110007, मूल संस्कृत रचना। मूल संस्कृत रचना परिकर्ता– आचार्यश्री विजय मुक्तिमुनिचन्द्रसूरिजी, मूल्य 415/ रु., पृष्ठ 362, कव्हर – बहुरंगी, पक्की बाइण्डिंग। मुद्रक– तेजस प्रिण्टर्स मो. 9825347620।

जैन संस्कृति तथा अनुष्ठान क्रियाओं में ध्यान को महत्वपूर्ण माना गया है। वर्तमान में आध्यात्मिक क्षेत्रों में ध्यान पर पूरा बल दिया जा रहा है। अज्ञात पूर्वाचार्य द्वारा ध्यान विचार पर एक लघुकृति उपलब्ध रही है, इसका विस्तृत विवेचन गुजराती में आचार्य श्री विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी म. ने किया था। इसका संस्कृत रूपांतर आचार्यश्री विजय मुक्ति– –मुनिचंद्रसूरीश्वरजी म. द्वारा प्रकाशित किया गया है। हालांकि यह कृति सर्वजन के लिये नहीं है लेकिन संस्कृत भाषा का अपना महत्व है तथा उसमें प्रकाशित साहित्य का विद्वद्जनों के मध्य एक महत्वपूर्ण स्थान बनता है। इस प्रकाशन से भारतीय वाङमय में जैन साहित्य का मस्तक ऊँचा होगा। यह कृति व्यापक अध्ययन तथा विचार विमर्श का माध्यम बनने में सफल होगी।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

सम्पादकीय

धर्म को जीवन में अंगीकार करें

(सुरेन्द्र लोढ़ा)

धर्म विश्व का सबसे प्रभावशाली चिन्तन तथा जीवन उद्धार का मार्ग है। दूसरी ओर विश्व में समय -समय पर राजनीति ने भी कई परिभाषाएँ दी हैं जिनमें प्रमुख लोकतंत्र, सामंतवाद, समाजवाद, साम्यवाद आदि हैं । लेकिन ये जीवन की गुत्थी को सुलझाने में सर्वसम्मत विधि प्रशस्त नहीं कर पाये। वर्तमान में एक पूरी शताब्दी तक साम्यवाद विश्व की अधिसंख्य जनसंख्या को प्रभावित करने के पश्चात् विफल रहा है, सामंतवाद अथवा राज-नवाब शाही केवल अवशेष के रूप में विश्व के कुछ कोनों में बच रही हैं, लोकतंत्र प्रभावशाली है लेकिन जहां भी है संकट की आंधी का सामना करता रहता है। सैनिक तानाशाही कई राष्ट्रों में है। राजनैतिक चिन्तन विश्व को विचारों के समुद्रों की ओर अग्रसर अवश्य करता है किन्तु कोई स्थाई समाधान नहीं दे पाया है। इससे विपरीत धर्म ने चाहे विभिन्न सैंकड़ों नामों से अपनी पहचान बनाई हो लेकिन वह उनकी अवधारणाओं के माध्यम से स्थायी अस्तित्व निर्मित करने में सफल रहा है। जैन धर्म एक उत्कृष्ट अवधारणा के रूप में आज प्रभावशील है।

जैन धर्म ने धर्म की परिभाषा स्थापित करते हुए अपना विवेचन इस उक्ति में समाहित किया है- 'वत्थु सहावो धम्मो'- अर्थात : वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। उसने धर्म को आत्मा आधारित माना है। आत्मा का मूल स्वभाव अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अलघुगुरुता, अरूपिता, अनन्त चारित्र आदि हैं। कुछ शास्त्रकारों ने जैनधर्म की आत्मा को अनन्त चतुष्टय रूपी वर्णित किया है। अनन्त चतुष्टय का तात्पर्य अनन्त दृष्टि, अनन्त ज्ञान, अनन्त शान्ति तथा अनन्त आनन्द प्रयुक्त किया गया है। अन्य शब्दों में आत्मा के वास्तविक स्वरूप को पहचानना ही धर्म है।

वैदिक दर्शन के अनुसार धर्म शब्द को धारण करना अर्थ से जोड़ा है। धारति इति धर्म : - जिसने समस्त धारण कर रखा है, वह धर्म। इसका विस्तार करते हुए एक लेखक ने अंकित किया है कि धर्म का अर्थ धारण करने के साथ संभाल करना अथवा अवलम्बन या सहारा देकर बचाना या रक्षा करना भी किया जा सकता है अर्थात्

जो आत्मा को उसके दोषों और विकारों से बचाकर पवित्र बनाये उसे उसके अनन्त चेतन और अनन्त आनन्दमय स्वरूप में धारण किये रहे। उसे उसके मूल गुण दया से सदा ओत-प्रोत रखे तथा उसे दुर्गति और दुख से बचाये उसे ही धर्म कहते हैं। दूसरे शब्दों में जो आत्मा को सदैव के लिये सुख-शान्ति प्रदान करे वही धर्म है।

जैन तत्वज्ञान ने धर्म को मोक्ष का साधन या कारण माना है। प्रवचनसार तात्पर्यवृष्टी में उल्लेख है कि- 'मिथ्यात्म तथा रागादि में नित्य संसरण करने रूप भवसंसार से प्राणी को उठाकर जो निर्विकार शुद्ध चेतन्य में धारण कर दे, वह धर्म। एक अन्य पंचाध्यायी में अवगत किया गया है कि- 'जो धर्मात्मा पुरुषों को नीच पद से उच्चपद में उन्नत करता है, वही धर्म है।'यहां नीचपद से मतलब संसार एवं उच्चपद से मोक्ष है। याने तीन शब्दों पर समग्र आधार है- संसार, आत्मा तथा मोक्ष ! संसार में हम भवभ्रमण कर रहे हैं, हम से अर्थ है आत्मा तथा इस आत्मा की सर्वोच्च स्थिति है मोक्ष। धर्म इन तीनों का पारदर्शन करवाकर मुक्ति की स्थिति की प्राप्ति करवाता है।

इतिहास में कई बार धर्म के लिये राजनीति हुई है, और जहाँ राजनीति का समावेश हो जाता है, वहाँ सत्ता की लालसा प्रवेश कर जाती है। भारत, चीन तथा यूनान विश्व में सबसे प्राचीन संस्कृतियों के लिये विख्यात हैं। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के युग में भारत में उनके समकालीन महात्मा बुद्ध का बौद्ध धर्म सभ्यता का सूत्रपात करने में जुटा हुआ था। उसी समय चीन में लाओत्से और कन्फ्यूशियस। यूनान में पाइथोगोरस, प्लेटो एवं सुकरात। ईरान में जरथुष्ट। फिलीपीन्स में जिरोमियां और आईजेक पूर्णतः सक्रिय थे। इन सभी ने जन मानस को प्रभावित कर रखा था। बाद के जो धर्म उदित हुए उनके अवतार पुरुष किसी न किसी रूप में प्राचीन संस्कृतियों के अध्ययन हेतु भ्रमण में रहे हालांकि वर्तमान में उनके द्वारा प्रदत्त धर्म ऐसा स्वीकार नहीं करते हैं। बाद में धर्म का विस्तार शस्त्रों के बल पर हुआ जिनने रक्तपात तथा खूनी युद्धों को जन्म दिया। इस कारण इनका प्रसार तो हुआ लेकिन दया, करुणा, अहिंसा आदि मूल तत्व हाशिये पर चले गये। यही आज धर्मों के सन्मुख चुनौती है। इस चुनौती ने राजनीति को भी दुष्प्रभावित कर रखा है जिसके परिणाम समय-समय पर उभरते रहते हैं।

धर्म प्रचार-प्रसार की विचारधारा नहीं है। यह जीवन में अंगीकार करने का मार्ग है। इसी रूप में विश्व स्वीकार करे तथा हम भी अपने जीवन में इसको स्थान दें।

◆◆◆

32 आगमसूत्रों में मूर्तिपूजा का उल्लेख

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

ऐसा कोई सूत्र नहीं, जिसमें मूर्ति याने जिनप्रतिमा और मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं है। 32 सूत्रों में सभी में है।

(1) श्री आचारांग सूत्र में शत्रुंजय और गिरनार तीर्थों की यात्रा कर लिखा है । (भद्रबाहु स्वामी कृत निर्युक्ति)।

(2) श्री सूत्रकृतांग सूत्र में आर्द्रककुमार को जिन प्रतिमा के दर्शन जातिस्मरण ज्ञान होने का उल्लेख है।

(3) श्री स्थानांगसूत्र में (चतुर्थ स्थान) नन्दीश्वर द्वीप में 52 मंदिरों का अधिकार है।

(4) श्री समवायांग सूत्र में सत्तरहवें समवाय में जंघाचारण, विद्याचारण मुनियों की यात्रा का वर्णन है।

(5) श्री भगवती सूत्र शतका 3 उ. 1 के चमरेन्द्र के अधिकार में मूर्ति का शरण कहा है।

(6) श्री ज्ञातासूत्र अध्याय 8 में अरिहन्तों की भक्ति करने से तीर्थंकर गौत्र बन्धता है तथा अध्याय 16 में द्रोपदी महासती ने 17 भेद से पूजा की।

(7) श्री उपादशांक सूत्र में आनन्दाधिकार में जैन मूर्ति का उल्लेख है।

(8) (9) श्री अन्तगढ़ और अनुत्तरोववाई सूत्र में द्वारिकादि नगरियों के अधिकार में उत्पातिक सूत्र के सदृश जैन मन्दिर उल्लेखित है।

(10) प्रश्नव्याकरण सूत्र में संवरद्वार में जिनप्रतिमा की वैयावच्च (रक्षण) कर्मनिर्जरा के हेतु का करना बतलाया है।

(11) विपाकसूत्र में सुबाहु आदि ने तुंगिया नगरी के श्रावकों को समान रखकर मूर्तियां पूजी हैं।

(12) उत्पातिक सूत्र में चम्पानगरी के मुहल्ले-मुहल्ले में जैन मंदिर तथा अंबड श्रावक ने प्रतिमा का वंदन करने की प्रतिज्ञा लेने का उल्लेख है।

(13) राजप्रश्री सूत्र में सूरियाभदेव ने सत्रह प्रकार से जिन प्रतिमा पूजा की।

(14) जीवाजिगम सूत्र में विजयदेव ने जिन प्रतिमा की पूजा की है।

(15) प्रज्ञापना सूत्र में ठवणा सच्च कहा है।

(16) जम्बुद्वीप प्रज्ञापति सूत्र में 269 शाश्वत पर्वतों पर 91 मन्दिर तथा जम्बुक देव ने प्रतिमा पूजन की।

(17) चन्द्रप्रज्ञापति सूत्र में चन्द्रविमान में जिन प्रतिमा है।

(18) सूर्य प्रज्ञापति सूत्र में सूर्य विमान में जिन प्रतिमा है।

(19–23) पाँच निरयावलिका सूत्र में नगरादिअधिकार में जिन प्रतिमा है।

(24) व्यवहार सूत्र उद्देशा पहला आलोचनाधिकारे जिन प्रतिमा।

(25) दशाश्रुत स्कन्ध सूत्र राजगृह नगराधिकारे जिन प्रतिमा।

(26) निशीथसूत्र जिन प्रतिमा के सामने प्रायश्चित लेना कहा।

(27) बृहत्कल्प सूत्र नगरियों के अधिकार में जिन चैत्य है।

(28) उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन 10 अष्टापद मंदिर, अध्याय 18 वाँ उदाइराजा की राणी प्रभावती के गृहमंदिर का अधिकार, अध्ययन 29 में चैत्यवन्दन का फल यावत् मोक्ष बतलाया।

(29) दशवैकालिक सूत्र जिन प्रतिमा के दर्शन से शय्यंभव भट्ट को प्रतिबोध हुआ।

(30) नंदीसूत्र में विशाला नगरी में जिनचैत्य को महाप्रभाविक कहा है।

(31) अनुयोगद्वार सूत्र में चार निक्षेप का अधिकार में स्थापना निक्षेप में अरिहंतों की मूर्ति की स्थापना कही है।

(32) आवश्यक सूत्र में 'अरिहन्त चेइआणिवा' तथा 'कित्तिय वंदिय महिमा' जिसमें 'कित्तिय वंदिय'तो भावपूजा और 'महिमा' द्रव्य पूजा कहा है।

इस तरह 32 सूत्रों का उल्लेखित जिन प्रतिमा का संक्षिप्त वर्णन वर्णित है। ◆◆◆

गुदगुदी

* एक टैक्सी ड्राइवर बड़ी तेजी से टैक्सी चला रहा था। तीव्र मोड़ पर वह गाड़ी की गति को कम नहीं करता था। आखिर सवारी से नहीं रहा गया। वह बोला ड्राइवर, गाड़ी आहिस्ता चलाओ मोड़ पर भी गाडी धीमी नहीं करते तो मुझे बहुत डर लगता है। ड्राइवर बोला– तो आप भी हर भीड़ पर मेरी तरह आँखें बंद कर लिया कीजिए।

* एक व्यक्ति अदालत से बरी हो गया तो वकील ने अपनी फीस मांगी। उस आदमी ने कहा, 'वकील साहब मुझ पर आरोप क्या था ?'

वकील– ' यही कि आपने दो सो रुपए के लिए एक व्यक्ति की हत्या कर दी।'

'सोचिए वकील साहब जब मैं दो सो रूपए के लिए हत्या कर सकता हूँ तो दो हजार के लिए क्या नहीं कर सकता हूँ।' आदमी का उत्तर था।

अध्यक्षीय पाती

पच्चक्खाण करें कम से कम नवकारसी का

श्री वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

पाश्चात्य विद्वान रस्किन ने कहा है- 'मन डूबा तो नाव डूबी।' यहाँ नाव से तात्पर्य जीवन से है। हमारे जीवन में मन नियंता है, वह प्रेरक है। मन कमजोर होकर हमें पतन के गर्त्त में ले जाता है, मन पर यदि हम अंकुश कर सकें तो वह हमें सृजन की दिशा में प्रवृत्त कर सकता है। एक विद्वान ने कहा भी है- 'वचन काया ने तो बांधिये, मन नवि बांध्यु जाय। मन बन्ध्या बिना प्रभु ना मिले, क्रिया निष्फल जाय।' मन को बांधें। उसे उच्छृंखल नहीं होने दें, उसे मनमाना नहीं होने दें तथा उसमें विकृति नहीं आने देवें तभी हम उसे डूबने से बचा पायेंगे। मन पर अंकुश रखने के लिये ही जैन पद्धति ने पच्चक्खाण का प्रावधान किया है।

व्यक्ति की इच्छा असीम है, वह कामना करता रहता है, अधिकांश उसकी कामनाएँ आत्मा के अनादि काल से अभ्यस्त भोग-उपभोग से रंजित होती है, वैसा करना उसे अच्छा भी लगता है, त्याग-तप का तथ्य उसके मन में बड़ी कठिनाई से समा पाता है लेकिन आत्म मार्ग यह नहीं है। शुभ का प्रवर्तन ही सही है। शुभ को मन-वचन-कर्म से करना, प्रेरित करना या करते हुए का अनुमोदन करना यही तीन योग-तीन करण से संप्रेरित होना शुभ की प्राप्ति है। भोग तथा उपभोग के लिये तो असंख्य वस्तुएँ हैं तथा असीम मन की तरंगे उन पर मंडराती रहती हैं जो अशुभ योग की ओर ले जाने का प्रयास करती हैं। इस प्रयास में मन सरलता से बावला हो जाता है। चिंतक ने प्रतिपादित किया है कि अशुभ योग से निवृत्ति एवं शुभ योग का प्रवर्तन पच्चक्खाण है जिसे शुद्ध भाषा में प्रत्याख्यान कहते हैं। हम प्रत्याख्यान लेकर व्रत में प्रवेश करते हैं, व्रत से उच्चतप है। हम अपने दोषों की आलोचना व्रत या तप से करते हैं, वे दोष पुनः जन्म नहीं लेलें इसके लिये ही पच्चक्खाण है। पच्चक्खाण याने मन रूपी हाथी पर अंकुश।

अतएव प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कोई न कोई व्रत या तप रखना चाहिये। उससे उपवास, आयंबिल, एकासणा, वियासणा, पोरसी जैसे व्रत, तप नहीं हो पायें तो कम से कम नवकारसी अवश्य करना चाहिए। नवकारसी याने सूर्योदय के बाद दो घड़ी या 48 मिनिट तक चारों आहारों का त्याग। नवकारसी से हमारे नारकी के बंधनों के टूटने की शुरूआत हो जाती है।

◆◆◆

अध्यक्षीय संदेश

युवा शक्ति इन पाँच सूत्रों पर भी कार्य करे

श्री रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
परिषद् परिवार

युवा समाज की धरोहर तथा भविष्य का आधार है। युवा आने वाला कल है। वह जितना योग्य तथा परिपक्व होगा समाज को उतना ही प्रकाश प्राप्त होगा। इसी युवा वर्ग को संगठित तथा अनुशासित करने के उद्देश्य से व्याख्यान वाचस्पति गुरुदेव जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना की थी। ईस्वी सन् 1959 की कार्तिक पूर्णिमा वह दिवस था जो पृष्ठभूमि में किये गये प्रबल प्रयासों के परिणाम के रूप में प्रकट हुआ।

इसके गठन के पश्चात् गुरुदेवश्री ने इस संगठन को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से इसका प्रभार तब युवा शक्ति के परिचायक युवा मुनिराज श्री जयंतविजयजी म. 'मधुकर' को सौंपा तथा स्पष्ट फरमाया कि जो परिषद् है वही समाज है, जो समाज है वही परिषद है। उस समय का एक लघु बीज मुनिराज श्री मधुकरजी के प्रयत्न, परिश्रम तथा पराक्रम के कारण आज इतने विशाल वटवृक्ष में अस्तित्वशील हो गया है।

आखिर बांसठ वर्षीय इस सामाजिक गाथा के उल्लेख की प्रासंगिकता इसलिये अर्थपूर्ण है कि वर्तमान में हजारों युवाओं की इस पंक्ति को निरंतर अग्रसर होते रहने के लिये आलोक की आवश्यकता है। परिषद के प्रेरणा पुरुष (पहिले मुनिराज) जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. ने परिषद् के सम्मेलनों तथा अधिवेशनों में परिषद के चतुः दिव्य उद्देश्यों का तो विस्तार से विवेचन किया ही है, उन्होंने अपने जीवनकाल में ही युवाओं को समाज की उन्नति के लिये पांच शब्द भी दिये- सेवा, श्रम, स्वाध्याय, वैयावच्च तथा स्वधर्मीवात्सल्य। ये शब्द नहीं सूत्र थे बार-बार वे युवकों के सम्मेलनों को सम्बोधित करते हुए इन सभी तथा इनमें से एक, दो, तीन, चार कितनी भी संख्या हो सूत्रों पर अपना मार्गदर्शन प्रदान करते थे।

आज पुनः आवश्यकता है कि परिषद तथा परिषद की शाखाएँ चार उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये तो सक्रिय रहे ही, साथ ही इन पाँच सूत्रों पर भी कार्य योजना बनाकर कार्यक्रम संचालित करें। वैसे समाज तो चलते ही हैं, सहस्त्रों वर्षों का उनका इतिहास हो गया है, वे रुकते नहीं हैं लेकिन जब उसी समाज की युवा शक्ति चेतनाशील हो जाती है तब उसकी महत्ता में विशिष्टता के सलमे सितारे लग जाते हैं। आखिर समाज की युवा शक्ति समाज की निरंतर प्राप्त होने वाली ओषजन जो है।

◆◆◆

चिन्तन का चित्रांकण

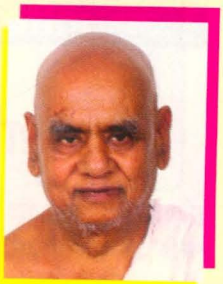

आत्मा का स्वयं के परिणामों में विचरण

गच्छाधिपति धर्म दिवाकर
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 29.01.2017

अनेक में न रहकर एक में रहे वो सब कुछ है, एक नहीं तो सर्व शून्य है। जन्म लिया तब एक सुख का, कर्मों का कर्जदार भोक्ता एक, मृत्यु शरण पद एक, कर्मों की सजा भी एक को ही पाता है। धर्म आराधना का फल एक से ही पाना है। एक ही अरिहंत वीतराग परमात्मा शरण, गुरुदेव का जीवन सर्वश्रेष्ठ माना है। अनेक में पड़ने वाला अनन्त की यात्रा का प्रवासी बनकर संसार की भ्रमणा में भटकता है, भ्रमणा का अन्त करना है तो एक में समा जाओ। गुजरात की कहावत है पकड़े एक, झगड़े बे!

एक है, एकत्व भाव है, एकत्व झरणा बह रहा है मानो एकत्व आत्म स्वरूप में आत्म तत्व को पाने का झरना बह रहा है वह आत्मा ऊर्ध्वगामी के पथ पर गति कर रहा है, और एक से छूटकर बे (दो) में गया कि फिर से बिगड़े ! फिर वह आत्म स्वरूप के तत्व से विमुख रह जाता है। दो होने से राग-द्वोष जुड़ जाता है। ममत्व माया बढ़ जाती है। इसीलिये जीव संसार के कादव में अधोगति का राही बनता है और वह आत्मनन्द के स्वरूप को नहीं पा सकता है।

युक्ति की पथगामी आत्मा संसार के भौतिक परिणामों की प्रवृत्ति से दूर रहकर स्वयं की आत्मा के परिणामों में विचरण करती है। वही आत्मा अनन्त संसार की भव भ्रमणा का अन्त करती है। वह जीवन के हर पल में हर श्वांस में आत्मश्रेय का पथ अपनाकर आत्मश्रेय का पथगामी बना रहता है।

दिनांक 01.02.2017

चाह किसी की पूर्ण हुई है ? आकाश की दूरी कितनी है नाप सकते हैं? पाताल की गहराई को नापा जा सकता है? इसी तरह इच्छा का कोई नाप नहीं होता। इच्छा जीव की कभी कम नहीं होती है और न ही होगी। इच्छा कम करने के लिये जिनमार्ग गुरुवर द्वारा बताये पथ पर चलकर आत्म चिंतन करते-करते अनेक प्रकार की इच्छाएँ समाप्त कर सकते हैं।

दिनांक 02.02.2017

तुलना कभी किसी की नहीं करना। स्वयं के आत्मबल से, आत्म विश्वास रखकर कार्य करना चाहिए। आत्म विश्वास से जो भी कार्य करते हैं वो अवश्य ही सफलता को पाता है। अज्ञानवश, ईर्ष्यावश, अहं पैदा होता है तब नाम की ललक जागृत होती है तब हौड़-दौड़ लगाने में लगते हैं। अन्त में जीरो ! यानी शून्य ! इससे अच्छा स्वयं की बुद्धि, स्वयं के आत्म विश्वास से काम करना चाहिए।

◆◆◆

शुद्ध आचार एवं पवित्र हृदय की शक्ति अचिन्त्य

(वर्धमान तपोनिधि आचार्य श्रीमद् विजय कल्याणबोधि सूरीश्वरजी म.सा.)

प्रश्न– आज अनेक पंथों में चित्त की पवित्रता पर ही जोर देकर आचार की उपेक्षा की जाती है, क्या वे पंथ भी अनुचित हैं ?

उत्तर– बेशक, प्रभु वीर ने निश्चय तथा व्यवहार, दोनों न्यायों पर जोर दिया था। दोनों को सम महत्व दिया था। व्यवहार का त्याग तीर्थ उच्छेद के समान है। यदि मानसिक पवित्रता ही सर्वस्व होती है, तो प्रभु वीर राजमहल का त्याग क्यों करते ? संयम का स्वीकार क्यों करते ? चरित्र के कष्टों को क्यों सहन करते ? एवं परिषहों और उपसर्गों के बीच अनुपम साधना, यज्ञ भी क्यों करते ? परमात्मा का यह ऐलान है – चरित्र बिन मुक्ति नहीं, बिन साधना सिद्धि नहीं, आचारपालन के बिना उद्धार नहीं।

प्रश्न– किन्तु ऐसे पंथों के प्रवक्ताओं की बातें प्रवचन आदि सुंदर होते हैं, जच जाते हैं तो उन पंथों में प्रवेश करने में क्या हर्ज है ?

उत्तर– अच्छे चिन्तक अपने विचारों की आकर्षक प्रस्तुति के बल से एवं सुन्दर शैली के प्रभाव से जगत में धर्मतत्व का प्रचार अवश्य कर पायेगा, किन्तु इस प्रचार से धर्म साम्राज्य की स्थिरता संभावित नहीं। दिमाग की बातें दिमाग को ही आकर्षित कर सकती है, हृदय को नहीं। हृदय परिवर्तन एवं पारमार्थिक फल प्राप्ति तो आचार सम्पन्न संतों के हृदयोद्गारों से ही हो सकते हैं।

प्रश्न– संतों का ऐसा प्रभाव कैसे ?

उत्तर– इसका उत्तर एक निदर्शन से देना चाहूँगा। दस हजार मानवों की एक सभा है, उसमें भारी कोलाहल हो रहा है। उसे एक वक्ता अत्यंत जोर-शोर से सूचनाएँ प्रदान करके शांत रख सकता है, एक साधक वक्ता केवल अपना हाथ ऊँचा करके शांत रख सकता है और एक संत केवल स्टेज पर आकर अपने दर्शन देने मात्र से शांत कर सकता है। रहस्य यही है कि शुद्ध आचार एवं पवित्र हृदय की शक्ति अचिन्त्य होती है, उसकी ऊर्जा विराट होती है तथा उसका फल अमोघ होता है।

◆◆◆

वे शाकाहार की ओर, हमारे स्वदेशी मांसाहार पर

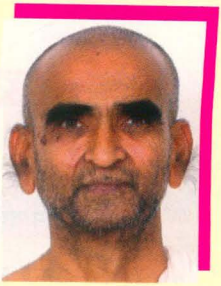

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि विदेशों में जहाँ मांसाहारियों की संख्या एक बड़े प्रतिशत में है सामान्य व्यक्ति शाकाहार की ओर आकर्षित हो रहा है, वहाँ इससे विपरीत हमारे धर्मप्राण देश में मांसाहारियों की संख्या बढ़ रही है तथा शाकाहारी घट रहे हैं। जो शाकाहारी हैं, वे मांसाहारी होते जा रहे हैं। भारत में जंनसख्या का सर्वे किया जाय तो साठ प्रतिशत से अधिक लोग मांसाहारी हैं। मुर्गा, मछली तथा सूअर के मांस को स्टेटस फूड कहा जाने लगा है। जिन के घरों पर अंडा खाना निषिद्ध है, उनके युवा महंगी होटलों में जाकर धर्मभ्रष्ट हो रहे हैं। जबकि प्रो. रामास्वामी आहार वैज्ञानिक के अनुसार मनुष्य की शारीरिक रचना मांसाहार के बिलकुल उपयुक्त नहीं है। मांसाहार का सेवन बिलकुल जरूरी नहीं है। पश्चिमी देशों में शुद्ध शाकाहारी को वीगन कहते हैं। संपादक स्लेक्स बुर्क ने लिखा है कि 'एक शाकाहारी न तो किसी जीव जन्तु के भीतरी भाग को खाता है, न उसके किसी बाहरी भाग को ओढ़ता है।

इजराइल में अमिरिय एक शुद्ध शाकाहारी ग्राम है। इसकी स्थापना शाकाहारी इजराइलियों ने सन् 1958 में की थी। यह मैलिली समुद्र की ढलान पर बसा हुआ सुन्दर ग्राम है। यहाँ वृक्षों का घेराव है तथा सेवफल, खूबानी, बादाम, अंजीर, आड़ू, नासपती तथा अनार की खेती होती है। अतिथियों को भी ये स्वादिष्ट शाकाहारी भोजन करवाते हैं इजराइली यह भी मानते हैं कि प्राचीन शास्त्रों में शाकाहार का स्पष्ट समर्थन है।

डॉ. ए. लीफ ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि कश्मीर की हुंजा जाति, रूस की अखासिया तथा इक्वेडोर की बिल्काबम्बस जाति के लोग पूर्णतः शाकाहारी हैं। इस कारण उन्हें सुदीर्घजीवी, मेहनतकश, दिलेर तथा बहादुर माना जाता है। मैंने देखा आलुओं से भरा थैला ढोते हुए 117 वर्षीय वृद्ध को, बर्फ जैसे ठण्डे जल की झील में तैरते हुए एक 104 वर्षीय बुजुर्ग को, लकड़ियाँ चीरते हुए 195 वर्षीय उम्र दराज को, ये सभी शाकाहारी थे। ◆◆◆

प्रवचनकार

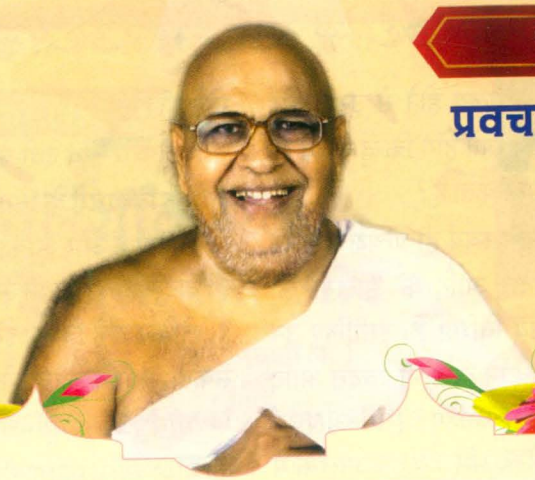

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

संशय का निवारण

मौर्यपुत्र – परन्तु यहाँ देखने के पूर्व मुझे जो संशय हुआ था, वह तो युक्तियुक्त ही था न ?

महावीर– नहीं ! क्योंकि यहाँ समवसरण में आने से पूर्व भी तुम्हें दूसरे देव चाहे न दिखते हों, किन्तु सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देवों को तो तुम प्रत्यक्ष देखते ही थे। इसलिए देव कभी दिखे नहीं, अतः देवों के बारे में मेरा संशय योग्य है, ऐसा मानना नहीं चाहिए। इससे भी पूर्व जब तुम्हें देवों के एक देश का ही प्रत्यक्ष था ही, तो यह मान लेना चाहिए कि देव विषयक शंका अयुक्त ही थी।

इसके सिवाय दूसरी बात यह है कि लोक में देवकृत अनुग्रह एवं उपघात दोनों हैं। उनसे भी देवों का अस्तित्व मानना चाहिए। क्योंकि जैसे लोगों का भला-बुरा करने वाले राजा का अस्तित्व माना जाता है, वैसे ही देव भी किसी को वैभव देते हैं और किसी के वैभव का नाश करते हैं। अतएव राजा की तरह देवों का भी अस्तित्व मानना चाहिए।

मौर्यपुत्र – शून्य नगर की तरह चन्द्रविमान आदि आलय-निवास स्थान दिखते हैं। उनमें निवास करने वाला कोई है ही नहीं। इसलिए चन्द्र-सूर्य आदि के प्रत्यक्ष होने से देव भी प्रत्यक्ष हो गये, ऐसा कैसे कहा जा सकता है ?

महावीर– यदि तुम चन्द्र और सूर्य के आलयों को मानते हो, तो उनमें वास करने वाला भी कोई होना चाहिए। अन्यथा उसे आलय कहा नहीं जा सकता। जैसे कि वसन्तपुर के आलयों (भवनों) में देवदत्त आदि रहते हैं। इसीलिए ही वे आलय कहलाते हैं। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र भी यदि आलय हो, तो उनमें भी कोई न कोई रहने वाला होना चाहिए। और उनमें जो रहते हैं वे ही देव कहलाते हैं।

मौर्यपुत्र – आलय होने से उनमें कोई देवदत्त जैसे मनुष्य रहते होंगे किन्तु वे देव हैं, ऐसा कैसे कहा जा सकता है?

महावीर– तुम स्वयं ही प्रत्यक्ष देख रहे हो कि इन देवदत्त आदि के आलयों की अपेक्षा वे आलय विशिष्ट हैं। इसीलिए उन आलयों में वास करने वाले भी देवदत्त आदि से विशिष्ट ही होने चाहिए। इसमें आश्चर्य जैसी बात क्या है ? और जब उन आलयों में वास करने वाले देवदत्तादि से विशिष्ट हैं, तो निःशंक होकर तुम्हें यह मान लेना चाहिए।

मौर्यपुत्र – आर्य ! आपने ऐसा नियम बनाया है कि वे आलय हैं, अतः उनमें रहने वाला कोई होना चाहिए, किन्तु यह नियम अयुक्त है। क्योंकि शून्य गृह आलय कहलाते हैं, किन्तु उनमें बसने वाला कोई नहीं होता।

महावीर– कहने का तात्पर्य यह है कि जो आलय होते हैं, वे सर्वदा शून्य नहीं हो सकते। उनमें कभी न कभी कोई रहता ही है। इसलिए चन्द्रादि में भी निवास करने वाले देव सिद्ध होते हैं।

मौर्यपुत्र – आप जिसको आलय कहते हैं, वे वस्तुतः आलय हैं या नहीं, जब इसका ही निर्णय नहीं हुआ, तब वे निवास स्थान हैं, अतः उनमें वास करने वाला कोई होना चाहिए, ऐसा कहना तो निर्मूल है। संभव है कि आप जिसे सूर्य कहते हैं, वह अग्नि का गोला ही हो और जिसे चन्द्र कहते हैं, वह स्वभावतः स्वच्छ जल ही हो। ऐसा भी हो सकता है कि वे ज्योतिष्क विमान प्रकाशमान रत्नों के गोले ही हों।'

महावीर– वे देवों के रहने के विमान हैं, क्योंकि विद्याधरों के विमानों की तरह वे रत्नों के बने हुए हैं और आकाश में गमन भी करते हैं। बादल और वायु भी आकाश में गमन करते हैं, लेकिन उन्हें विमान इसलिए नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वे रत्नों के बने हुए नहीं हैं।

मौर्यपुत्र – सूर्य-चन्द्र विमान मायावी की माया क्यों न माने जायें?

महावीर– पहली बात तो यह है कि वस्तुतः वे मायिक नहीं हैं। फिर भी मान लो कि वे मायिक हैं, तो भी इस माया को करने वाले देव तो मानने ही पड़ेंगे। क्योंकि मायावी के बिना माया किस तरह संभव है? मनुष्य तो ऐसी विक्रिया कर नहीं सकते। इसलिए अन्य कोई उपाय न देखकर देवों को मानना पड़ता है तथा सूर्य-चन्द्र विमानों को जो तुम मायिक कहते हो, वह अयुक्त है। क्योंकि माया तो क्षण में नष्ट हो जाती है, किन्तु उक्त विमान तो सदा सर्वदा सभी के द्वारा उपलब्ध होने से शाश्वत हैं। चंपा या पाटलीपुत्र जितने सत्य हैं, उतने और वैसे ही सत्य ये भी हैं।

दूसरी बात यह भी समझनी चाहिए कि इस लोक में जो प्रकृष्ट पाप करते हैं, उनके लिए उसका फल भोगने के लिए परलोक में नारकों का अस्तित्व माना गया है। इसी प्रकार इस लोक में जो प्रकृष्ट पुण्य करते हैं, उनके लिए उसका फल भोगने हेतु अन्यत्र देवों का अस्तित्व भी स्वीकार किया। (क्रमशः)

◆◆◆

कालसौकरिक कसाई नर्क की ओर

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.)

अभयकुमार ने सुलस का कथन सुनकर स्वयं विचार किया। कुछ देर मौन रहकर विचार करने के पश्चात् उसने सुलस से कहा- 'मित्र ! तुम्हारे पिता कालसौकरिक का अंतिम समय आ गया है। उसने जो अशुभ कार्य किये वे तुम्हारे पिता को नरक में ही ले जायेंगे। अभी जिस दशा में वे हैं यह नरकानुपूर्वी आने की स्थिति है। उन्हें इन्द्रियों के विपरीत पदार्थ खाने के लिये दो। उन्हें मीठा, ठंडा जल मत पिलाओ, नरम गद्दे पर मत सुलाओ। सुलस समझ गया कि हमारी इन्द्रियों को जो वस्तुएँ अच्छी लगती हैं, उनसे उल्टी वस्तुएँ पिता को दी जावें। वह घर आया, उसने अपने पिता को कड़वे, कसैले, बेस्वाद पदार्थ खाने को दिये। गर्म-गर्म उबलता पानी पिलाया, कांटों के गद्दों पर सुलाया तथा पिता के सारे शरीर पर विष्ठा का लेप करवाया। जहर के समान कटु स्वाद वाली वस्तुएँ लगातार खिलाईं।

कालसौकरिक इन सभी का उपयोग कर खुश हो गया। उसने कहा- 'शाबास ! शाबास ! मेरे बेटे, तू आज सच्चा बेटा निकला। मुझे लगा कि - 'आज कई महिनों बाद मुझे पकवान मिले हैं और पानी वाह ! कैसा सुगन्धित, ठंडा जैसे शरबत हो। बेटे तू ऐसी शरबत कहाँ से लाया ? मैंने तो ऐसी शरबत पहली बार ही पी है। वाह बेटे ! वाह ! आज तूने मुझे सही सुख दिया। यह गद्दा भी कैसे मखमल से मढ़कर मंगवाया तेने, कितना आनंद मिल रहा है मुझे ! बेटा सुलस ! तू इतने दिन क्यों नहीं ऐसी चीजें लाया ? आज तूने मुझे सही जीवन दिया।' सुलस दुःखी हो गया। उसने विचार किया अभयकुमार का कथन सत्य है और मेरे पिता यदि नर्क में जा रहे हैं तो वहाँ इनका क्या हाल होगा ? उसके आंसू आ गये। इधर कालसौकरिका ने आँखे घुमा दीं। उसके प्राण उसके शरीर का साथ छोड़ गये। वह मरकर सातवें अप्रतिष्ठान नामक नरक में गया।

उसने पिता का अंतिम संस्कार किया। समाज के ठेकेदारों ने एकत्र होकर सुलस से कहा - 'तुम अपने पिता के उत्तराधिकारी हो। उनकी पगड़ी पहिनों तथा धंधा संभालो।

(क्रमशः)

◆◆◆

श्री नवकार कल्पद्रुम

(मुनिराज श्री विद्वद्रत्नविजयजी म.सा.)

असुरोपासक

श्वान पान श्रोणित करे, तज कर अक्षत क्षीर ।
वैसे अर्हत् त्याग कर, भजता असुर अधीर ।।160।।

अशक्य

जिनशासन नवकार की, महिमा अमित अतोल ।
वह कैसे वर्णन करे, भजो भव्य हर बोल ।।161।।

विषय वृद्धि

देखवा इह संसार में, हा ! हा! विषय क्लेश ।
यही समझ त्वरित अभी, भज अरिहंत विशेष ।।162।।

महाप्रण

तृण का कभी न अशन कर, खाये अनल चकोर ।
वैसे साधक भज रहो, परमेष्ठी सरमोर ।। 163।।

अज्ञ

बहु कार्य में कुशल अधिक, आत्म कार्य अनभिज्ञ ।
जिनशासन नवकार का, जप ना करता अज्ञ ।।164।।

अनुरक्त

पद् पद् मंगल दश दिशा, अन्त मोक्ष अधिकार ।
पयजल सम अनुरक्त हो, जिनशासन नवकार ।।165।।

सहज-सफल

रे साधक ! तू प्रथम तज, मोह लोद मद मान ।
सहज तया हो सफल जप, जिनशासन भगवान ।।166।।

प्रवेश-पत्र

जिनशासन नवकार में, अहो ! साधक प्रवेश।
रहे न पाप क्लेश कुछ, अन्त जन्म विश्वेश ।।167।।

सम्यग्-समझ

जिनशासन नवकार का, अनुभव यह उपकार ।
समझ लिया मिथ्यात्व को, तज अब पापाचार ।।168।।

अविराम - गति

नानी का घर है नहीं, भुक्त पाप परिणाम ।
सर्व दुरित अब परि हरे, अर्हं भजे अविराम ।।169।।

किस प्रकार

चित्त में तव ध्यान है, केवल वित्त विशेष।
कैसे अर्हत् साधना, कैसे नाश क्लेश ।।170।।

हास्य पात्र

अय मानव अनुभव हुआ, सर्व कार्य उपहास ।
जिनशासन नवकार जप, करे सतत सौल्लास ।।171।।

अनुगमन

जैसे जग को प्रिय अधिक, वैसा रहा सुनाय ।
नहीं योग्य साधक कभी, कैसे जिनगुण गाय ।।172।।

समाहित

संयम जप तप साधना, नर जीवन का सार ।
समावेश नवकार में, कह रहे मुनि पुकार ।।173।।

जप-सिद्धान्त

जिनशासन नवकार हित, यह सिद्धान्त विचार ।
भजो भक्त समभाव से, तेरा हो उद्धार ।।174।।

अरसिक

रहे नियम नर विषय से, जैसे बालक क्षार ।
वही तिरे भव सिन्धु से, भजे भाव नवकार ।।175।।

शोकान्त

जिनशासन नवकार को, जब तक भजे न कोय ।
तब तक तेरे शोक का, अंत न होगा कोय ।।176।।

एक

जिनशासन नवकार से, होगा प्राप्त विवेक ।
समझ लिया अब हिताहित, अन्त आत्म ही एक ।।177।।

◆◆◆

गतांक से आगे

जैन धर्म को मालवा में मौके मिलते रहे (2)

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

मालवा में जैन समाज के लिये अच्छा समय दिलाबर खां के युग में माना जाता है क्योंकि दिलाबर खां गौरी को धन की आवश्यकता रहती थी तथा वह इस हेतु जैन परिवारों की ओर देखता था। उसके शासन काल में ही झांझण की महत्वपूर्ण राजनैतिक पद पर नियुक्ति हुई थी। जो पेथड़शाह का पुत्र था। पेथड़शाह सुप्रसिद्ध धनपति था जो गुजरात के पाटण का था। पेथड़शाह की उदारता की कहानियाँ आज भी जैनों में प्रचलित हैं। यह गुजरात के मुस्लिम शासकों के निकट माना जाता था। झांझण जालोर के श्रीमान आभू का वंशज था। झांझण के काल में कई जैन परिवार मालवा में आकर बसे थे। दिलावर खां गौरी ने उन्हें उनकी सुरक्षा की ग्यारंटी दी थी। दिलाबर खां का समय ईस्वी सन् 1390 से ईस्वी सन् 1401 माना जाता है। वह सन् 1405 तक मालवा का शासक रहा। उसने अपने आपको मालवा का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया था। दिलाबर खां के बाद हुशंगशाह गौरी का राज्य आया। यह तीस वर्षों तक मालवा पर काबिज रहा। इसने अपने शासन को मजबूत बनाने की पूरी कोशिश की। इस हेतु नये किलों का निर्माण भी किया। दशपुर (मंदसौर) का किला हुशंगशाह के समय का ही निर्माण है। इसका आगमन मालवा में दिलाबर खां के जाने के बाद हुआ। सन् 1406 से यह मालवा पर प्रभावशाली बना। इसी समय झांझण मालवा में पुनः आ गया। हुशंगशाह के मन में झांझण के पूरे परिवार के लिये स्थान था। संकट के समय वह इनसे सलाह मशविरा कर उनकी बात को तवज्जोह देता था।

झांझण के छह पुत्र थे। इन सभी के साथ झांझण मालवा आ गया। इन छह पुत्रों के नाम थे बाहड़, चाहड़, देहड़, पद्मसिंह, आल्हु एवं पाल्हु । चाहड़ के दो पुत्रों के नाम चन्द्र तथा खेमराज थे जबकि बाहड़ के दो पुत्र समन्धर तथा मण्डन थे। देहड़ के पुत्र को धनपाल कहा जाता था। बाहड के पुत्र मण्डन को हुशंगशाह गौरी ने महाप्रधान पद पर नियुक्त कर दिया था। इसे लोग सम्मान से मंत्रीश्वर भी कहते थे। यह काफी लोकप्रिय था एवं इसका बड़ा नाम था। इसका राजनीति तथा साहित्य दोनों में दखल था, इस कारण सुल्तान इसे मानता था। देहड़ के पुत्र धनपाल ने संघपति की उपाधि प्राप्त की थी। इसने संघ निकाल कर लोगों को धर्म तीर्थ यात्राएँ करवाई थी। हुशंगशाह ने इसे संघ निकालने की इजाजत भी दे दी थी। जैनों का ऐसा प्रभाव मुस्लिम युग में उल्लेखनीय था।

(क्रमशः)

◆◆◆

गुरुदेव श्रीमद् जयंतसेनसूरीश्वरजी म. द्वारा रचित

वैराग्य सज्झाय

(साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

वैराग्यशतक ग्रंथ में फरमाया है-

मा सुअह जग्गिअव्वे, पलाइ अव्वंमि कीस विसमेह ?

तिन्नि जणा अणुलग्गा, रोगों अ जरा अ मच्चुअ ।।

अर्थात- हे चेतन तुम जागने के स्थान पर सोओ मत, भागने के स्थान पर तुम विश्राम कैसे लेते हो ? क्योंकि रोग, जरा, मृत्यु ये तीन दुष्टजन तुम्हारे पीछे लगे हुए हैं इसलिए हे जीव तू ! अज्ञान दशा रूपी निद्रा का त्यागकर सावधान होकर धर्म के अन्दर प्रयत्न करो... क्योंकि पुत्र-पुत्रियों, स्वजनों, प्यारी प्रियाओं, धन सम्पत्ति आदि सबका वियोग होता है सिर्फ जिनेश्वर प्ररूपित धर्म का कभी भी वियोग नहीं होता है। अतः हे चेतन ! ऐसा अनमोल मनुष्य भव तू समझ और हृदय में धर्म को धारण कर....।

जाय जवानी, आवे घडपण, नयनो नीचा थाय...2

कर्णपुरी त्या उज्जड़ थाती, डगमग करता चलाय ...2

चैतन रे !!! श्वांसे-श्वांसे प्रभु ने समरी सफल करो अवतार... छोड़ी जवानु ।।3।।

अर्थात- खेलकूद में बचपन गँवाया । जवानी मौज, शोक, कामभोग, विषय-विकार अहंकार में व्यर्थ की। देव गुरु की बात नहीं मानी। जवानी में तो ऐसा सोच रहे थे कि इस भव में मजा कर लो, अगला भव किसने देखा है ? जवानी धर्म करने के लिए थोड़ी मिली है, धर्म तो बुढ़ापे में करेंगे। लेकिन यह यौवन तो संध्या रंग के समान क्षण मात्र ही सुन्दर है, बादलों के समूह के समान विविध रूप को वायु की एक झपाटे से नाश करने वाला है। जवानी के मद में उद्दण्ड जिन प्ररूपित धर्म को नहीं जानता हुआ जिंदगी भर आरंभ-समारंभ करके धन कमाता है और उस धन को माता-पिता-भाई-पुत्रादि स्वजन भोगते हैं किन्तु हे जीव ! तूने कभी ऐसा विचार किया है क्या ! कि उस धन से उपार्जन अशुभ कर्म बंधन, नरकादि दुखों को तो मुझे अकेले ही अनुभव करने पड़ेंगे ? स्वजन तो अपने-अपने कर्मानुसार अलग-अलग स्थान पर जाएंगे... किन्तु मोह में ग्रस्त व्यक्ति को कुछ भी भान नहीं रहता है? जवानी नष्ट हो जाती है, अब बुढ़ापा आता है।

गुरुदेव श्री फरमाते हैं –

बुढ़ापो आयो चिन्ता लायो, मन-मन्दिर दुख छायो रे...

बुढापो आयो रे...

काले बाल सफेद हो जाते हैं। शरीर थर-थर कांपने लगता है, आँखों से दिखता नहीं है। कानों से सुनाता नहीं, बत्तीसी उखड़ गयी , होंठ धुजते हैं, मुख पर झुर्रिया पड़ जाती हैं। शरीर हाड-पिंजर जैसा हो जाता है। अब बेटे-बहु के सहारे हो गये। कोई भी सेवा करने वाला नहीं है। आजकल तो वृद्धाश्रम भी खुल गए हैं। अज्ञानी लोग उपकारी ऐसे माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं। बेचारे वे लोग दुःखी-दुःखी हो जाते हैं अब मृत्यु का इंतजार करते हैं, गिन- गिनकर दिन निकालते हैं। उनको चिंता होती है अब यह दुःखमय जीवन कैसे कटेगा ?

वैराग्य शतक में बताया है –

जाव न इंदियहाणी, जाव न जरारक्खयी परिप्फुरइ ।

जाव न रोग वियारा, जाव न गच्चू समुल्लियइ ।।

अर्थात – ज्ञानी जन कहते हैं कि हे भव्य जीव !!! जब तक इन्द्रियाँ क्षीण न हुई हों, जब तक बुढ़ापा रूपी राक्षसी नहीं लगी हो, जब तक रोग विकार न प्रगटे हों, जब तक मृत्यु उदय में न आई हो तब तक धर्माराधना कर लेना चाहिए।

हे जीव !! तूने महामुश्किल से निगोद से निकलकर क्रमशः एकेन्द्रिय आदि भवों को प्राप्त करते हुए मनुष्य जन्म को पाया है। उस मनुष्यजन्म में भी चिंतामणि रत्न के तुल्य अमूल्य जिन प्रकाशित धर्म को प्राप्त किया है। इसलिए मोह निद्रा से जागो। 'जब जागो तब सवेरा।' अब बुढ़ापे में तो जाग जाओ... शरीर पुत्र आदि की चिंता छोड़...धन आदि पर मूच्छभिव मत रख... नहीं तो दुर्गति तेरा इन्तजार कर रही है। अब किसी का कोई सहारा नहीं है। इसलिए हे चेतन !!! हर एक क्षण प्रभु का ध्यान कर, प्रभु का रटन कर, प्रभु का सुमिरण कर, अपना जीवन प्रभुमय बना दो... हर एक श्वास में प्रभु का अवलंबन लेकर अपना जीवन सफल कर दो। अरिहंत, सिद्ध, साधु और केवली प्ररूपित धर्म इन चारों की शरण स्वीकार कर लो... यही हमारी सच्ची शरण है। बाकी सब तो अशरण रूप है।

(क्रमशः)

◆◆◆

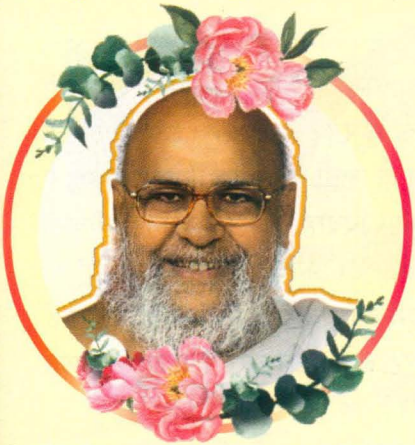

(लेखांक-13)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

उसने एक-दो बार राजा वीरधवल को इस विषय में संकेत भी किया, किन्तु राजा पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। महामात्य सुमतिचन्द्र को इस बात का संतोष था कि राजा, प्रजा के हित के लिए किए जा रहे कार्यों के प्रति सचेत है और उसे भी वह अपने कर्त्तव्य निर्वाह करने से नहीं रोक रहा है। नृत्य संगीत के कार्यक्रमों में राजा के सम्मिलित होने से राजकाज पर अभी तक कोई विपरीत प्रभाव भी नहीं पड़ा था। महामात्य इसी में संतोष का अनुभव कर रहा था।

महामात्य सुमतिचन्द्र का एक महत्वपूर्ण कार्य दोनों राजकुमारों को राजकाज में दक्ष करना भी था। इसके साथ ही साथ वह दोनों राजकुमारों में जैन धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न करने में भी सफल हो गया था। उसने दोनों राजकुमारों को जैन धर्म के सिद्धान्तों और क्रियाओं को भलीभांति समझा दिया था। इसका परिणाम यह था कि दोनों राजकुमार नियमित रूप से नवकार महामंत्र की माला का जाप करते। सामायिक-प्रतिक्रमण करते, जिनालय में जाकर देवदर्शन, वंदन और पूजन करते। राजा वीरधवल को इस बात की कोई जानकारी नहीं थी। जो अधिकारी राजा को पुनर्विवाह करने का परामर्श देते थे, वे समझ गए थे कि राजा का रुझान नारी की ओर बढ़ता जा रहा है। एक बार जब ये अधिकारी एक संगीत सभा में मिले तो इन्होंने सामूहिक रूप से राजा की सेवा में उपस्थित होकर पुनर्विवाह करने के लिए राजा से आग्रह करने की योजना बनाई। इन लोगों को अपनी बात कहने का अवसर भी शीघ्र ही मिल गया। हुआ यों कि राज्य के एक गाँव के कुछ निवासी अपने गाँव की पेयजल पूर्ति के कार्यक्रम का शुभारंभ राजा वीरधवल के करकमलों से करवाने के लिए कनकपुर आए और उन्होंने राजा के सम्मुख अपना आग्रह भरा निवेदन प्रस्तुत किया। राजा अभी कहीं भी जाना नहीं चाहता था। इस कारण उसने, विचार करेंगे। ऐसे

कह दिया। वहाँ उपस्थित अधिकारियों ने राजा को गाँव जाने की स्वीकृति देने के लिए आग्रह किया। राजा इन अधिकारियों के आग्रह को टाल नहीं सका और स्वीकृति प्रदान कर दी। गाँव वाले प्रसन्न होकर अपने गाँव वापस लौट गए। इन अधिकारियों ने गाँव में इस अवसर पर अपने राजा के स्वागत में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन करवा लिया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए अन्य ग्राम- नगरों से कलाकारों और नृत्यांगनाओं को आमंत्रित किया गया। इसमें इन अधिकारियों का भी पूरा-पूरा हाथ था। निश्चित समय पर राजा वीरधवल उस गाँव में अपने अधिकारियों के साथ पहुँचे और पेयजलपूर्ति योजना का शुभारंभ किया। रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम में राजा वीरधवल सम्मिलित हुआ।

अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में एक ऐसे नृत्य का समावेश करवा दिया था, जो अत्यधिक उत्तेजक था। राजा ने इस नृत्य को देखा और वह सुधबुध खो बैठा। राजा की इस स्थिति का लाभ उन अधिकारियों ने उठाया और नारी के प्रति राजा की आसक्ति को देखकर एक स्वर में उन्होंने निवेदन किया- 'अन्नदाता ! अब ऐसे कब तक काम चलेगा। रानीजी के बिना सब कुछ सूना-सूना लग रहा है।''तुम्हारा कथन सत्य तो है। किन्तु हम अपने वचन से बंधे हैं।' राजा ने उत्तर दिया।

'अन्नदाता ! सब व्यर्थ की बातें हैं। वचन का निर्वाह दोनों पक्षों की जीवितावस्था में होता है। दोनों में से किसी एक के न रहने पर वचनबद्धता स्वतः ही समाप्त हो जाती है। हमारा निवेदन तो यह है कि आप विवाह के लिये अपनी स्वीकृति प्रदान कर दें। अनेक सुंदर राजकुमारियाँ हैं। जहाँ भी आप चाहेंगे, सम्बन्ध हो जाएगा।' एक मुंह लगे अधिकारी ने राजा से आग्रह किया।

नारी की ओर राजा की आसक्ति बढ़ गई थी। इस समय वह औचित्य- अनौचित्य के मध्य कोई निर्णय नहीं कर पा रहा था। अपने अधिकारी की बात उसे सही प्रतीत हो रही थी। किन्तु हृदय के किसी कोने में यह आशंका उठ रही थी कि ऐसा करना उचित नहीं है, किन्तु वासना का भूत जब सवार हो जाता है तो व्यक्ति को उचित-अनुचित कुछ भी दिखाई नहीं देता है। राजा वीरधवल की भी लगभग यही स्थिति बन चुकी थी। विचारों की ऊहापोह में उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। विवाह के सम्बन्ध में उसने अंतिम निर्णय अपने इन्हीं अधिकारियों के विवेक पर छोड़ दिया। इसके साथ ही उसने इतना अवश्य कहा कि इस विवाह से उसके पुत्रों पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। अधिकारियों ने राजा को आश्वस्त कर दिया कि जैसी उनके मन में आशंका है, वैसा कुछ भी नहीं होगा।

(क्रमशः)

◆◆◆

(संयोजक)
शांतिलाल रामानी

मुनि श्री प्रशमसेनविजयजी
महाराज

(प्रस्तोता – मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.सा.)

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की स्थापना से सम्पन्न वर्तमान तक अधिवेशन तथा वार्षिक सम्मेलन

क्र.	वर्ष	स्थान	सान्निध्य	अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	महामंत्री
1.	1959	श्री मोहनखेड़ा तीर्थ	स्व. पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सौभाग्यमलजी सेठिया	श्री बालचंदजी जैन	
2.	1960	रतलाम (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री कल्याणविजयजी श्री सौभाग्यविजयजी म.सा.	श्री सौभाग्यमलजी सेठिया	श्री बालचंदजी जैन	
3.	1961	खाचरौद (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री सौभाग्यविजयजी म.सा.	श्री सौभाग्यमलजी सेठिया	श्री भंवरलालजी छाजेड़	
4.	1962	आकोली (जि.जालोर) (राज.)	संघ प्रमुख पू. मुनिराज श्री विद्याविजयजी म.सा.	श्री सौभाग्यमजी सेठिया	श्री भंवरलालजी छाजेड़	
5.	1964	श्री मोहनखेड़ा तीर्थ (म.प्र.)	पू. आचार्य श्रीमद् विजय विद्याचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.	श्री सौभाग्यमलजी सेठिया	श्री भंवरलालजी छाजेड़	
6.	1966	रानापुर, जि. झाबुआ (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री जयंत विजयजी म.सा.	श्री शांतिलालजी भण्डारी (संयोजक)	श्री भंवरलालजी छाजेड़	
7.	1970	श्री मोहनखेड़ा तीर्थ	पू. मुनिराज श्री जयन्तविजयजी म.सा.	श्री भंवरलालजी छाजेड़		
8.	1971	उज्जैन (म.प्र.)	पू. आचार्य श्रीमद् विजयविद्याचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.	श्री महेन्द्र कुमारजी भण्डारी (संयोजक)	श्री भंवरलालजी छाजेड़	
9.	1974	जावरा (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री जयन्त विजयजी म.सा.	डॉ. प्रेमसिंहजी राठौड़		
10.	1975	श्री लक्ष्मणी तीर्थ (म.प्र.)	पू. मुनिराज श्री जयन्त विजयजी म.	डॉ. प्रेमसिंहजी राठौड़		
11.	1977	निम्बाहेड़ा (राज.)	पू. मुनिराज श्री जयन्त विजयजी म.सा.	डॉ. प्रेमसिंहजी राठौड़		

12.	1980	भिवण्डी (महा.)	पू. मुनिराज श्री जयन्त विजयजी म.सा. 'मधुकर'	श्री भंवरलालजी छाजेड़	श्री सी.बी. भगत	
13.	1985	श्री भाण्डवपुर तीर्थ	पू. आचार्य श्रीमद विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.	श्री तगराजजी हिराणी	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री जे.के. संघवी
14.	1988	श्री भाण्डवपुर तीर्थ	पू. आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.	श्री जीतमलजी हिराणी	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री बाबूलालजी बोहरा
15.	1989	श्री भाण्डवपुर तीर्थ	पू. आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.	श्री जीतमलजी हिराणी	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री बाबूलालजी बोहरा
16.	1990	जावरा (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
17.	1991	सूरत (गुज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
18.	1992	बीजापुर (कर्ना.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
19.	1993	नैल्लोर (आंध्रप्रदेश)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
20.	1994	चैन्नई (मद्रास) (तमिलनाडु)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
21.	1995	मुंबई (महा.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
22.	1996	भीनमाल (राज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
23.	1997	थराद (गुज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
24.	1998	कुक्षी (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री सेवन्तीभाई मोरखिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
25.	2000	इंदौर (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री भंवरलालजी कटारिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
26.	2001	चौराऊ (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री भंवरलालजी कटारिया	श्री चेतन्यजी काश्यप	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
27.	2002	नैनावा (गुज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री भंवरलालजी कटारिया	श्री सोहनलालजी पारिख	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा

28.	2003	पालीताणा (गुज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री भंवरलालजी कटारिया	श्री सोहनलालजी पारिख	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
29.	2004	बाग (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री भंवरलालजी कटारिया	श्री सोहनलालजी पारिख	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
30.	2005	बैंगलोर (कर्नाटक)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री भंवरलालजी कटारिया	श्री सोहनलालजी पारिख	श्री सुरेन्द्र लोढ़ा
31.	2006	जावरा (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री शान्तिलालजी रामाणी	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा	श्री रमेशजी धाड़ीवाल
32.	2007	मुंबई (महा.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री शान्तिलालजी रामाणी	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा	श्री रमेशजी धाड़ीवाल
33.	2008	गुण्टूर (आंध्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री शान्तिलालजी रामाणी	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा	श्री रमेशजी धाड़ीवाल
34.	2009	नेल्लूर (आंध्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री शान्तिलालजी रामाणी	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा	श्री रमेशजी धाड़ीवाल
35.	2010	विजयवाड़ा (आंध्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री शान्तिलालजी रामाणी	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा	श्री रमेशजी धाड़ीवाल
36.	2011	थराद (गुज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री शान्तिलालजी रामाणी	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा	श्री रमेशजी धाड़ीवाल
37.	2012	सायला (राज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री शान्तिलालजी रामाणी	श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा	श्री रमेशजी धाड़ीवाल
38.	2013	बड़नगर (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री रमेशभाई धरू	श्री ओ.सी. जैन	श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल
39.	2014	बीजापुर (कर्नाटक)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री रमेशभाई धरू	श्री ओ.सी. जैन	श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल
40.	2015	पेपराल (गुज.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री रमेशभाई धरू	श्री ओ.सी. जैन	श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल
41.	2016	रतलाम (म.प्र.)	पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.	श्री रमेशभाई धरू	श्री ओ.सी. जैन	श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल

समकित मोती

(पुनीत संजय सकलेचा, झाबुआ)

अहो परम उपकारी !

अहो अवर्णनीय अमीदृष्टि !

अहो परम आनंददायक !

समूचे चौदह राजलोक में भटका पर सिद्धशिला से वंचित रहा !

84 लाख जीवयोनी में भटका पर शुद्ध समकित से वंचित रहा !!

कांच के ढेर पर कौस्तुभ की परख कराने वाले...

सहस्त्र तारों में दिवाकर का ज्ञान कराने वाले...

सुमन-उद्यान में पुंडरिक सौरभ का आभास दिलाने वाले...

अज्ञता, सुज्ञता से प्रज्ञता तक परिणाम बढ़ाने वाले...

हे भवोदधि तारक !

हे पतित उद्धारक !

है समकित दायक !

मुझ अल्पज्ञ को कहां ज्ञान था... कहाँ झुकना, किसे पूजना ? कौन वीतराग कौन सराग ?

दर-दर सर पटकना तो आदत थी... तंत्र-मंत्र में पड़ना चाहत थी...

क्योंकि विराट-विशाल, तारक-अष्टकर्म संहारक, अकल्पनीय-अलौकिक, जयवंत-जिनशासन के अचिन्त्य प्रभाव को तुच्छ नैत्रों ने अत्यल्प आँका था.. तभी तो मर्कट भांति इधर-उधर डोलता रहा...

पर,

हे गुरु भगवंत आप ही ने दृष्टि की सृष्टि को व्यापक बनाया... उन्मार्ग, मिथ्यावाद से सन्मार्ग समकित व वीतराग का स्पर्श करवाया...

पंक में डूबे पतित को स्नेह वात्सल्य से उबारा... घोर कालिमायुक्त मस्तिष्क में नवकार की उज्ज्वल किरणों से समकित का दीप प्रगटाया... अनंतोपकारी, त्रिस्तुतिक पुनर्संथापक दादागुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी के अजेय सिद्धांत को प्रबल-प्रखर प्रबुद्धि से जन-जन तक पहुंचाया!!

'अहो पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. !!

आप मेरे समकितदायक हो !! कहा है 'समकितदायक गुरु तणा, पच्चुवयार न थाय। भव क्रोड़ा-क्रोड़े करी,

करता सर्व उपाय ।।'

आपको मैंने नयनों से निहारा है,

पुस्तकों में पुकारा है,

आप के समर्पण , सम्यक्त्व व संस्तवनों को हृदय में सँवारा है ।।

जिनशासन पर अटूट श्रद्धा !

तीव्र वेदना में भी समभाव की अनुपम मुस्कान ! संकट घोर पर मेरे गुरु नवकार-उवसग्गहरं के जपन में सराबोर !

आपके लहू से प्रवाहित शासन भक्ति को हजारों स्तवनों में और शत-प्रतिष्ठाओं में झूमते देखा है !!

आप स्वयं गीतार्थ अजेय अचल महापुरुष थे !!

मेरे तम-तिमिर युक्त भवों को विराम देकर इस भव में आपके मिलन से निश्चित ही 'समकित मोती' का आलोक अनंत भवों को प्रदीप्त कर देगा !!

हे परम प्रभावक- सम्यग्दायक... तव चरणों मां वंदना... घणी-घणी वंदना !!

◆◆◆

सुख और शांति का एक मात्र साधन संयम

साधु किसे कहते हैं ? जो आत्म साधना में रत रहता है वह साधु होता है। साधु के लिए जीवन यापन एकमात्र साधन निर्दोष भिक्षावृत्ति है। ऐसी स्थिति में उसे व्यवसायी मनोवृत्ति से दूर रहना आवश्यक है। व्यवसाय, व्यापार, सौदे में खरीदना और बेचना अर्थात् क्रय और विक्रय संग्रह होता है। साधु न क्रेता (खरीददार) होता है न विक्रेता। जो साधु के वेश में ऐसा कार्य करता है वह जैन साधुओं की पूरी परम्परा को दूषित करता है। कुछ साधु तंत्र-मंत्र का सहारा लेकर स्वयं को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। वे लोकेषणा में फंस जाते हैं। वे किसी का हाथ देखते हैं, किसी की जन्म कुण्डली बनाते हैं, किसी को भौतिक अभिवृद्धि के लिए मंत्र बताते हैं। किसी को तांत्रिक प्रयोग सिखाते हैं। ऐसा क्यों करते हैं ? इसका एक उद्देश्य तो यह हो सकता है कि इस विद्या के सहारे भौतिक साधन जुटाए जाएं। दूसरा कारण नाम की भूख भी हो सकती है। कारण कुछ भी हो, व्यवसायी वृत्ति साधु के लिए शोभाजनक नहीं होती, साधुत्व को नष्ट करती है इससे शासन बदनाम होता है। यदि व्यवसाय से इतना ही लगाव हो तो घर छोड़कर साधु बने ही क्यों ? व्यवसायी वृत्ति का सीधा संबंध धन के साथ है। तीर्थंकर भगवान ने मुनि धर्म का प्रतिपादन किसी कल्पना के आधार पर नहीं किया बल्कि पहले उन्होंने वैसा जीवन जिया और दूसरों के लिये वैसा जीवन जी सकने की संभावना प्रकट की। कोई भी व्यक्ति संसार से विरक्त होकर उनके पास साधना करने आया तो उन्होंने उसे निराश कर लौटाया नहीं क्योंकि इस सत्य से परिचित थे कि संग्रह के बिना भी जीवन चल सकता है। सुख और शांति का एक मात्र साधन संयम है। पदार्थ के भोग, संग्रह के बिना भी जीवन चल सकता है। सुख और शांति का एक मात्र साधन संयम है। पदार्थ के भोग, संग्रह में सुख नहीं है। संयम भी थोपा हुआ नहीं बल्कि अपने भीतर से स्वीकृत होना चाहिए। जिसे अंतर से संयम की रुचि होती है वह जंत्र मंत्र तंत्र रूप व्यवसायी वृत्ति से दूर रहता है भिक्षा वृत्ति में संतुष्ट रहकर साधना का पथ प्रशस्त करता है।

– ऋषभ जैन, गुड़गांव

राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के हस्ताक्षर

।। विश्वपूज्य प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः।।

राष्ट्रसंत आचार्य विजय जयन्तसेन सूरि

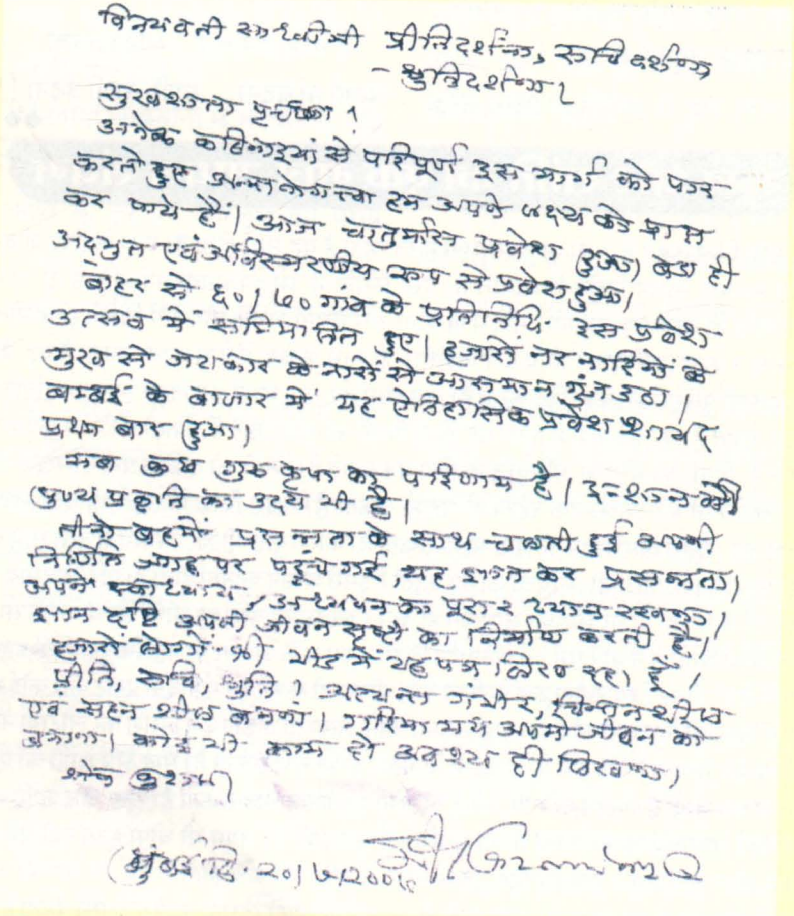

पूजा के दस त्रिक

(मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

षोडशक ग्रंथ में विद्वान रचियता ने पूजा के दस त्रिकों का वर्णन किया है। देव भक्त मंदिर में पूजन के लिये इनका उपयोग कर अपनी क्रिया करता है।

1. निसीहि त्रिक
2. प्रदक्षिणा त्रिक
3. प्रणाम त्रिक
4. पूजा त्रिक
5. अवस्था त्रिक
6. त्रिदिशिवर्जन त्रिक
7. भूमिप्रमार्जन त्रिक
8. आलंबन त्रिक
9. मुद्रा त्रिक
10. प्रणिधानत्रिक

उपरोक्त दस त्रिक के हरेक के तीन-तीन भेद होकर कुल 30 भेद होते हैं।

निसीहित्रिक के तीन प्रकार – प्रथम (1) श्री जिन मंदिर के मुख्य दरवाजे में प्रवेश करते ही घर, व्यापार, वगैरह सांसारिक कार्य मन, वचन, काया से त्याग करने को निसीहि कही जाती है और मंदिर संवंधि कार्य करने की छूट रहती है।

दूसरी निसीहि :- तीन प्रदक्षिणा देने के बाद में द्रव्यपूजा, प्रक्षाल, चंदन, केसर आदि-आदि के लिये गर्भद्वार (गंभारे) में प्रवेश करते समय आधा शरीर नमा करके दूसरी निसीहि कहनी चाहिए। इस निसीहि को कहने का हेतु यह है कि मन्दिर संबंधी कार्य का भी त्याग करके मन, वचन, काया की प्रवृत्ति द्रव्यपूजा में एकाग्र हो जाये जिससे विधिवत शुद्ध द्रव्य से अष्टप्रकारी पूजा की जाय।

3. तीसरी निसीहि :– द्रव्य पूजा संबंधी विकल्पों को त्यागने रूप और जिनेश्वर प्रभु की भाव पूजा करने में मन, वचन और काया को प्रवृत्त करने रूप यह तीसरी निसीहि है। तीसरी निसीहि कह करके मन, वचन, काया को स्थिर करके विधिपूर्वक इरियावही करके चैत्यवंदन करना चाहिए।

4. प्रदक्षिणात्रिक के तीन प्रकार:– प्रतिमाजी भगवान की जिमनी – दक्षिण बाजू से तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए और तीन प्रदक्षिणा देने का हेतु 1. ज्ञान, 2. दर्शन, 3. चारित्र इन रत्नत्रय को प्राप्त करने के आशय से जयणा पूर्वक भमती में किसी भी प्रकार की कुछ भी आशातना जैसा जानने में आवे तो स्वयं खुद या अन्य किसी के पास वह दूर कराई जावे।

प्रदक्षिणा के दोहे–

काल अनादि अनंत थी भव भ्रमणों नहि पार।
ते भ्रमणा निवारका, प्रदक्षिणा देउ त्रणवार।।
भमतीमा भमतांथका, भव भावट दूरे पलाय।
दर्शन ज्ञान चारित्र रूप, प्रदक्षिणात्रण देवाय।।
जन्म मरणादि भय टले, सीजे जो दर्शनकाज।
रत्नत्रय प्राप्ति भणी। दर्शन करो जिन राज।
ज्ञान बहुं संसारमं, ज्ञान परम सुरव हेतु।
ज्ञान बिना जग जीवड़ा, न लहे तत्व सकेतु।
चयते संचय कर्मनो, रिक्त करे वली जेह।
चारित्र निर्युक्ति ये कहुं, बन्दो ते गुण गेह।।
दर्शन ज्ञान चारित्रए रत्नत्रयी निरधार।
त्रण प्रदक्षिणां ते कारणे भव दुरव भंजन हार।

(क्रमशः)

◆◆◆

दादा गुरुदेव : शांति व क्रांति के अग्रदूत

दिये देदीप्यमान रत्न

(धीमीगतिवाला)

क्रांति के माध्यम से शांति लाने वाले, शुद्ध धर्म सिद्धान्तों का प्रकाश फैलाने वाले दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी ने आगम सागर का गहन मंथन करके नौ देदीप्यमान रत्न संघ समाज के समक्ष प्रस्तुत किये थे। चार रत्नों का दिव्य प्रकाश हम निरख चुके हैं।

पांचवां रत्न, पांचवां सिद्धान्त दादा गुरुदेव ने शास्त्रों में खोजबीन करके यह बताया कि प्रथम और चरम तीर्थंकर के शासन काल में रहे हुए साधु-साध्वी भगवंतों को नियमानुकुल प्राप्त सफेद जीर्ण प्रायः और कम मूल्य वाले वस्त्र पहनना चाहिए। राजा आदि के विद्रोह से उत्पन्न या अन्य कोई आपवादिक परिस्थिति में रंगीन वस्त्र पहन लेने की आज्ञा है लेकिन वर्तमान में ऐसा कोई कारण उपस्थित नहीं है इसलिए साधु-साध्वी को रंगीन वस्त्र पहनना शास्त्र मर्यादा से विपरीत है। श्री तेजराजजी द्वारा रचयित गुरु महाराज की लावणी में आता है 'दूजो तो उपदेश गुरु रो मालव देशे छाजे हो, गच्छपति तुम देख ने पीताम्बर लाजे हो।' आज पीताम्बर यानी पीले वस्त्र धारण करने वाले साधु भगवंत हमें दिखाई नहीं देते इसके पीछे दादा गुरुदेव की ज्ञान साधना है। उन्होंने शास्त्रों में से इतनी बातें प्रस्तुत की कि अंत में पीताम्बर धारियों को अपनी जिद छोड़नी पड़ी। यदि किन्हीं को इन बातों का, इनसे संबंधित विचारों का अध्ययन करने की भावना हो तो उन्हें श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरिजी द्वारा लिखित 'पीत पटाग्रह मीमांसा' ग्रंथ का अवलोकन करना चाहिए। दादा गुरुदेव ने अपने समय में फैली हुई भ्रांतियों को दूर करने के लिए कितना अपूर्व प्रयास किया होगा ? आश्चर्य होता है।

छठा सिद्धान्त गुरुदेव ने प्रस्तुत किया कि श्रुत देवता, क्षेत्र देवता, भुवनदेवता का कायोत्सर्ग और स्तुति प्रतिक्रमण में करने का विधान जिनागमपंचांगी में और प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रणित प्रामाणिक ग्रंथों में नहीं है। किन्तु साधु-साध्वी के लिए पाक्षिक, चातुर्मासिक तथा सांवत्सरिक प्रतिक्रमण के अंत में दुःखक्षय कर्मक्षय के कायोत्सर्ग के बाद भुवनदेवता व क्षेत्र देवता का कायोत्सर्ग करने की आज्ञा सूत्रकारों ने दी है क्योंकि विहारकाल में विश्राम करने या लघुनीति, बड़ीनीति त्याग के समय इनकी आज्ञा लेना होती है, उसमें प्रायश्चित निमित्त यह कायोत्सर्ग करना होता है। प्रतिक्रमण के अंतर्गत इन देवताओं की जो कायोत्सर्ग और स्तुति होती है, उसका प्रतिक्रमण के संबंध में कुछ लेना देना नहीं है। छः आवश्यकों का उद्देश्य पापों की आलोचना, निंदा और आत्मोत्थान का है, इन आवश्यकों की सीमा में ये कायोत्सर्ग सामायिक की भावना से मेल नहीं खाते। इस छठे सिद्धान्त में गुरुदेव ने यह भी बतलाया कि प्रतिक्रमण में लघु

शान्ति, बड़ी शान्ति बोलना भी जिनागम पंचांगी के अनुसार उचित नहीं है। लघु शान्ति स्तोत्र रचना का उद्देश्य महामारी का निवारण था लेकिन सामायिक प्रतिक्रमण की भावना के साथ दुष्ट ग्रह भूत पिशाच शाकिनी आदि का दलन करने की चाहना मेल नहीं खाती है। बड़ी शान्ति भी शान्ति स्नात्र, प्रतिष्ठा, यात्रा आदि के अंत में बोलने की है। सामायिक में रहकर प्रतिक्रमण करते हुए कुंकुम, चंदन, कपूर, अगर, धूप, वास और पुष्पांजलि की बात कैसे संभव है? संतिकर स्तोत्र भी पाक्षिक आदि प्रतिक्रमण में गतानुगति से और कुछेक वर्षों से चली हुई प्रथा है जो प्रतिक्रमण में बोलना प्रमाणभूत नहीं है।

सातवां सिद्धान्त गुरुदेव ने यह बतलाया कि श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक लेते समय सामायिक दण्डकोच्चार यानी कि करेमिभंते लेने के बाद इरियावही करना चाहिए। इसके लिए आगम व आगम टीका ग्रंथों में आये हुए वचन प्रमाण हैं। एक वाक्य इस तरह है- **'तिविहेण साहुणो नमिउण सामाइयं करेई करेमिभंते ? एवमाइ उच्चरिऊण इरियावहियाए पडिक्कमडू।'** इसलिए गुरुवंदन करने के बाद सामायिक उच्चरना और उसके बाद इरियावही करना चाहिए। इरियावहिय सूत्र तो अमृत सूत्र है, अतिमुक्त मुनि इसी सूत्र से अमृतत्व को प्राप्त हुए थे। इस सूत्र के माध्यम से एकेन्द्रिय जीवों से लेकर पंचेद्रिय जीवों तक के सभी प्राणीजगत को जो भी दुःख दिया हो, उनकी विराधना की हो उसकी क्षमायाचना होती है, उसका प्रतिक्रमण होता है और इस तरह सभी जीवों से मैत्रीभाव को पुष्ट किया जाता है। यह करने से ही हमारी धर्म साधनाएँ फलीभूत होती हैं। इरियावही कहीं धार्मिक क्रियाओं के प्रारंभ में करना होती है तो कहीं अंत में भी करना होती है और कभी मध्य में भी करना होती है। यह बात सप्रमाण नहीं है कि हरेक क्रिया करने के पहले ही इरियावही करना पड़ती है। कुछ संशयात्मक स्थिति होने के कारण ही ऐसा लगता है कि सामायिक विधि में करेमिभंते के बाद जो इरियावही करना होती है, वह पहले की जाने लगी होगी। सामान्य उदाहरण से भी इरियावही बाद में करना ही उचित लगता है। आंधी चल रही है, कचरा तेजी से घर में आ रहा है, उस समय यदि हम सफाई करेंगे तो जितना कचरा हम बाहर निकालेंगे, उससे ज्यादा कचरा वापस अंदर आ जाएगा। इसलिए जरूरी है कि पहले घर के दरवाजे बंद करें, बाहर का कचरा आना बंद हो तब अंदर का कचरा निकालें तो घर की शुद्धि होगी। अपने आत्मघर में आश्रवों का, पापों का, संसार का कचरा आंधी की तरह भीतर आ रहा है इसलिए पहले करेमिभंते को उच्चरके संवर का, संयम का दरवाजा लगाना होता है। उसके बाद इरियावही करके आत्मा में पहले के पापों का रहा हुआ कचरा प्रतिक्रमित करना होता है, बाहर निकालना होता है और तब हमारी आत्मा सही अर्थों में सामायिक में आ सकती है और परम आत्मिक आनंद का रसास्वादन कर सकती है।

सात सिद्धान्तों के बाद अब दो सिद्धान्त और शेष रहे हैं, उन दो सिद्धान्तों ने भी कैसा परिवर्तन किया, वह यथा अवसर।

◆◆◆

आहार वहोराने की विधि

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी महाराज)

चार प्रकार के धर्म में दान धर्म का प्रथम स्थान है तथा दानधर्म में भी सुपात्रदान सर्वश्रेष्ठ है। सात क्षेत्र में दान बताया उसमें देव रत्नपात्र है। गणधर सुवर्णपात्र गुरु (साधु-साध्वी) रजतपात्र हैं एवं साधर्मिक को कांस्यपात्र बताया है।

दान -देने वाले व्यक्ति का पापों से रक्षण करे वह सुपात्र कहलाता है। ऐसे सुपात्र रूप पंचमहाव्रतधारी साधु-साध्वी भगवन्तों को उनकी संयमरक्षा के लिए निर्दोष आहार-पानी-दवाई इत्यादि उपयोगी वस्तुएँ शुभभाव से अर्पण करना सुपात्रदान कहलाता है।

जैन बालक-बालिकाओं को तथा श्रावक-श्राविकाओं को प्रतिदिन सुपात्रदान का लाभ लेना चाहिए। जिस दिन लाभ न मिले उस दिन को निष्फल समझें। सुपात्रदान से बहुत पुण्य मिलता है और कठिन पापों का नाश होता है। ये नश्वर वस्तुएँ देने से शाश्वत वस्तु (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

संगम ने सुपात्र दान देकर बहुत पुण्य उपार्जन किया क्योंकि ब्याज से धन दुगुना होता है। व्यापार से चौगुना होता है। खेत में सौगुना होता है तथा सुपात्र में देने से तो अनन्तगुणा हो जाता है। संगम भी सुपात्रदान देने से शालिभद्र बना। संगम ने जो दान दिया वह अत्यन्त दुष्कर है, क्योंकि दरिद्र होने पर भी दान देना, सामर्थ्य होने पर भी क्षमा रखना, सुख का उदय होने पर भी इच्छाओं को काबू में रखना तथा तरुणावस्था में इन्द्रियों का निग्रह करना ये चार अत्यन्त कठिन हैं।

नयसार, धन्ना सार्थवाह सुपात्रदान से ही सम्यक्त्व पाए एवं तीर्थंकर बने। भावपूर्वक गोचरी वहोराने से उनकी आराधना के छठे भाग का लाभ मिलता है। किन्तु आहार वहोराने की विधि का ज्ञान होना चाहिए जो इस प्रकार है-

(1) प्रत्येक जैन को अपने फ्लेट के बाहरी दरवाजे पर जैनियों के प्रतीक रूप में जय जिनेन्द्र या भगवान, अष्टमंगल, नवकार मंत्र आदि का फोटो अवश्य लगाना चाहिए। ताकि म.सा. को मालूम पड़े कि यह जैन का घर है।

(2) जीरण सेठ की तरह उपाश्रय में जाकर वंदनादि करके गोचरी की विनंती करनी चाहिए।

(3) दान श्रद्धापूर्वक, भक्तिपूर्वक की महत्ता समझकर देना चाहिए। स्वार्थ की लालसा नहीं होनी चाहिए। ऐसे दान से प्रकृष्ट पुण्य बंधता है एवं उत्कृष्ट कार्य निर्जरा होती है।

(4) गोचरी के समय श्रावकों के घर के द्वार खुले हों, श्रावक इंतजार न करे कारण कि साधु भग. के निमित्त से उनके साथ आए हुए भी दरवाजे की बेल नहीं बजा सकते।

(5) गोचरी के समय सीढ़ियाँ एवं गृहआंगन कच्चे पानी से गीला न हो इस बात का उपयोग रखें।

(6) धर्मलाभ ! के शब्द सुनते ही खड़े होकर विनयपूर्वक 'पधारो-पधारो' कहना। बच्चे, पुरुषवर्ग बैठे-बैठे टी.वी. देखते रहते हैं, खड़े भी नहीं होते। यह अविनय कहलाता है।

(6) गुरु महाराज को आए हुए देखकर लाईट, पंखा, टी.वी., गैस वगैरह बंद हो तो चालु और चालु हो तो बंद नहीं करना चाहिए।

(7) घर में जो भोजन तैयार हो, वह पहिले से ही इस प्रकार रखा हुआ होना चाहिए कि उसे कच्चापानी, हरी वनस्पति, अग्नि इत्यादि कुछ भी स्पर्श करता हुआ न हो अन्यथा सचित्त के संघट्टेवाला म.सा. नहीं लेंगे।

(8) फ्रिज खोलकर या फ्रिज के ऊपर से लेकर कुछ वहोराना नहीं।

(9) पाटे पर थाली रखकर उसमें म.सा. पात्रा रखे उसके भी हाथ जोड़कर फिर वहोराना चाहिए। घर के सभी सदस्यों को वहोराने का लाभ लेना चाहिए। बालक को भी बुलाना चाहिए उसमें भी सुपात्रदान के संस्कार पड़ें।

(10) म.सा. को वहोराने का आग्रह रखना उचित है किन्तु इतना आग्रह भी नहीं होना चाहिए कि म.सा. को तकलीफ उठानी पड़े। अतः विवेक रखें।

(11) अधकच्ची पकी हुई काकड़ी आदि म.सा. के लिए अकल्प्य है।

(12) फ्रूट वगैरह सचित्त वस्तु 48 मिनट हुए या नहीं उसका उपयोग रखकर वहोराएँ।

(13) वहोराते समय दूध, घी आदि के छींटे नीचे नहीं गिरने चाहिए। छींटे गिरने पर दोष लगता है। अतः पहले ठोस वस्तु वहोराने के बाद तरल वस्तु वहोरानी चाहिए। नये बर्तन, चमचे न बिगाड़ें।

(14) चप्पल पहनकर वहोराना अविधि है।

(15) गरम दूध वगैरह में फूंक नहीं लगाना चाहिए। चूंकि फूंक के साथ थूक जाता है।

(16) एक-एक वस्तुओं की

विनंती कर, म.सा. कहे वह वस्तु वहोरावें।

(17) कभी म.सा. पधारे हों और आपके घर रसोई नहीं बनी हो , तो दरवाजे से म.सा. को रसोई नहीं बनी, इस प्रकार कहकर लौटाना नहीं चाहिए। अपितु उन्हें बहुमानपूर्वक आमंत्रण देकर घी, गुड़, दूध, शक्कर, खाखरा, सूंठ, पीपरामूल आदि जो भी वस्तु घर में हो उसका लाभ देने की विनंती करना चाहिए।

(18) साधु भगवंतों को शुद्ध एवं निर्दोष आहार पानी वहोरने का लाभ मिले इस हेतु से श्रावक-श्राविका को जब साधु-संत गाँव में हो तब तक कच्चापानी, सचित्त एवं रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए। गोचरी के समय को ध्यान में रखते हुए उस अनुसार अपना भी आहार, पानी का समय बना लेना चाहिए। लेकिन उन सब में गुरुभगवंत का उद्देश्य नहीं आना चाहिए। ऐसा करने पर साधु, संत पधारे तो उन्हें निर्दोष आहार-पानी वहोराने का उत्तम लाभ मिलता है एवं न भी पधारें तो श्रावक को प्रासुक अन्न, जल वापरने से लाभ ही है।

(19) वहोराने के बाद समयानुसार पुनः लौटाने जाना चाहिए कम से कम अपने घर के बाहर तक पहुंचाने तो जाना ही चाहिए। म.सा. गाँव से अनजान हों तो उन्हें आसपास के सभी घर दिखाने चाहिए।

उपरोक्त रीति से आहार देने से उनके संयम जीवन में सहायक बना जा सकता है।

बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी साधु हो अथवा विहार में अव्यवस्था आदि विशिष्ट कारण आ जाने पर उपयोगवंत श्रावक को उस समय साधु भगवंत को जिस वस्तु की आवश्यकता है अथवा महात्मा कुछ उपयोग करने को (बनाने को) कहे तो बड़े उत्कृष्ट भाव से उन्हें उस वस्तु को वहोरानी चाहिए। इसमें भी भारी लाभ ही है।

श्रावक को साधु-साध्वी के माता-पिता कहे गये हैं उनकी संयम आराधना का ध्यान रखना श्रावक का फर्ज है। न तो उनके संयम को शिथिल बनने दें, नहीं संयम को मुरझाने दें। लेकिन जिस प्रकार से साधु ज्यादा संयमी बने रहे, उस प्रकार से उन्हें संयम के उपकरणादि की अनुकूलता कर देने का विधान है।

कहीं घर कम हों या उपाश्रय के पास घर हो एवं साधु भगवंतों का विशेष आने का बनता हो तो श्रावक को उत्कृष्ट भाव से ही लाभ लेना चाहिए, लेकिन मन में दुर्भावना नहीं होनी चाहिए। इससे साधु-संतों को शाता मिलने से उनके अंतर के आशीष प्राप्त हो जाने की संभावना रहती है।

◆◆◆

कालचक्र परिचय

(श्री सुरेन्द्र गंग, रतलाम)

जैन धर्म के अनुसार 2 कालचक्र बताए गये हैं –

पहला – उत्सर्पिणीकाल – 6 आरे होते है (आरे याने भाग)।

दूसरा – अवसर्पिणीकाल – 6 आरे होते हैं।

पहला – उत्सर्पिणी काल – वह काल जिसमें शरीर–आयुष्य–बल–बुद्धि आदि की वृद्धि होती है।

(1) दुषम–दुषम काल – 21 हजार वर्ष का होता है – इस काल में धर्म का अभाव होता है।

(2) दुषम काल – 21 हजार वर्ष का होता है इसमें असी–मसी कृषि के कार्य की शुरूआत होती है।

(3) दुषम–सुषम काल – 42 हजार वर्ष न्यून एक कोटा–कोटी सागरोपम का होता है इस काल में ही 23 तीर्थंकर भगवान होते हैं।

(4) सुषम–दुषम काल – 2 कोटा–कोटी सागरोपम का होता है। इस काल में अंतिम तीर्थंकर भगवान होते हैं।

(5) सुषम काल – 3 कोटा–कोटी सागरोपम का होता है। यह काल युगलिक काल कहलाता हैं।

(6) सुषम–सुषम काल– 4 कोटा–कोटी सागरोपम का होता है। यह भी युगलिक काल कहलाता है।

इस समय चलने वाला अवसर्पिणी काल का विवरण – इस काल में शरीर, आयुष्य, बल, बुद्धि आदि की हानि होती है, वह काल उत्सर्पिणी काल का उलट होता है।

(1) सुषम–सुषम–काल – 4 कोटा कोटी सागरोपम का होता है यह युगलिक काल कहलाता है।

(2) दूसरा–सुषम काल – यह तीन कोटा–कोटी सागरोपम का होता है। यह भी युगलिक काल कहलाता है।

(3) सुषम–दुषम काल – यह काल 2 कोटा–कोटी सागरोपम का होता है यह काल भी युगलिक काल होता है परन्तु इस काल में प्रथम तीर्थंकर भगवान होते हैं।

(4) दुषम–सुषम काल – 42 हजार वर्ष न्यून एक कोटा – कोटी सागरोपम का होता है इस काल में 2 से 23 तीर्थंकर भगवान होते हैं। श्री भगवान महावीर स्वामी भी इस काल के अंतिम समय में हुए हैं।

(5) दुषम काल – यह 21 हजार वर्ष का होता है, यह मनुष्य काल कहलाता है। वर्तमान में यही काल चल रहा है जिसमें अंतिम तीर्थं भगवान महावीर स्वामी का शासन है।

(6) दुषम–दुषम काल – 21 हजार वर्ष का होता है इस काल में धर्म का अभाव होता है।

इस प्रकार जैन धर्म में दोनों काल चक्र का विस्तृत वर्णन किया गया है।

(साभार मधुकर संस्कार ज्ञानायतन से)

◆◆◆

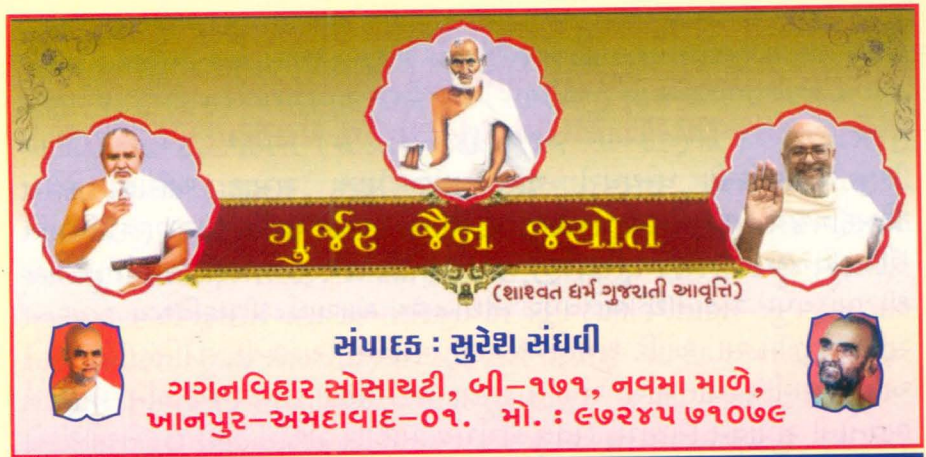

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અસલી અને નકલી

"राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु"

(વૈડૂર્યરત્ન જેવા ચમકતા કાચના ટુકડાનું જાણકારો પાસે કશું મૂલ્ય નથી.)

નકલી મોતી અસલી મોતીથી વધારે ચમકદાર હોય છે. પરંતુ કિંમતમાં તે અસલી મોતીની બરાબરી કરી શકતું નથી. જાણકારો બંને વચ્ચેનો તફાવત સમજી જ લે છે. એ જ પ્રમાણે વિષયભોગથી પણ સુખ મળે છે અને આત્મરમણથી પણ સુખ મળે છે. પરંતુ બંનેમાં કેટલો ફરક છે ? એક ક્ષણિક સુખ છે અને બીજું કાયમી. અધ્યાત્મ વિદ્યાના જાણકાર બંને સુખો વચ્ચેનું અંતર સમજી લે છે અને ફક્ત કાયમી (શાશ્વત) સુખ મેળવવાનો જ પ્રયત્ન કરે છે.

ક્ષણિક સુખ ઘણું આકર્ષક હોય છે. તે તરત જ અને પ્રત્યક્ષ મળી શકે છે, એટલે સાધારણ માણસો તેને જ વાસ્તવિક સુખ માનીને તેને માટે સાધનો ભેગાં કરવામાં જીવનપર્યંત લાગ્યા રહે છે અને આ રીતે પોતાનું જીવન નકામું વેડફી નાંખે છે. જ્ઞાની આવું નથી કરતાં. વિષયસુખ પણ આધ્યાત્મિક સુખ જેવું સુંદર લાગે છે, પણ સમ્યક જ્ઞાનીઓ પાસે તેનું કાંઈપણ મૂલ્ય નથી. કાચનો ટુકડો પણ વૈડૂર્ય રત્નની જેમ ચમકે છે, પણ ઝવેરીઓ પાસે તેની કાંઈપણ કિંમત નથી.

–ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, ૨૦/૪૨

ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.- ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શાસન સામ્રાજ્યમાં ધર્મ-આરાધનાનું 'એન્જિન' ધસમસતું દોડી રહ્યું છે !!

મરૂધરની ધન્યધરા જાલોરનગરે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો તેમજ શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો, યશસ્વી, ઐતિહાસિક અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યા છે. પૂજ્ય બંને આચાર્ય ભવંતોની સુપાવન નિશ્રામાં સર્વત્ર ધર્મમય માહોલ સર્જાઈ ગયો છે. તેઓશ્રીએ પ્રભાવક વાણીની ધારા વહાવી અનેકાનેક ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો તથા તપ-આરાધનાઓ દ્વારા મરૂધર મારવાડમાં જિન શાનનો જયજયકાર ગુંજવી દીધો છે.

તપ પ્રવાહને ઐતિહાસિક બનાવવામાં બને આચાર્ય ભગવંતોની કૃપાનું દાન મેળવી જીવનને ધર્મમય અને તપોમય બનાવવા ભાવુકો સ્પર્ધામાં ઉતર્યા હોય તેમ ૩૦, ૨૧, ૧૬, ૧૦, ૯ અને ૮ જેવી મહાન તપસ્યાઓ સાથે અન્ય તપ-આરાધનાની હેલી વરસાવી દીધી હતી. બંને આચાર્ય ભગવંતોની નિશ્રામાં પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વની ભવ્યાતિભવ્ય આધ્યાત્મિક ઉજવણી કરાઈ હતી. પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિશ્રીની નિશ્રામાં જાલોર નગરે પ્રભુ મહાવીર જન્મવાંચન દિવસે પારણાનો ચઢાવો પાંચ લાખ એક હજાર મણ ઘીનો બોલાયો હતો. જે વિક્રમ સર્જક હતો. પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના અને બંને આચાર્ય ભગવંતોના આજ્ઞાનુવર્તી શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો વિવિધ સ્થળ ક્ષેત્રોમાં બંને આચાર્ય ભગવંતોના શાસન સામ્રાજ્યને દીપાવી રહ્યા છે અને ધર્મ-આરાધનાના 'એન્જિન'ને ધસમસતું દોડાવી રહ્યા છે. પાલિતાણા નગરે પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી અપૂર્વરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૩, પાટણનગરે પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા-૮, સુરત નગરે પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૪, (મીઠાખળી) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિઠાણા - ૧૨, (મીઠાખળી) અમદાવાદ નગરે માલવમણી વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૪, પૂજ્યસાધ્વીજીશ્રી રંજનમાલાશ્રીજી

મ.સા., મહુઆનગરે (રાજ) પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી પ્રિયદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૨, (મોટેરા) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય સાધવીજી શ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૮, જાવરા (મ.પ્ર.) નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૪, (તામિલનાડુ) ચેન્નઈ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કૈલાસશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૨, (આં.પ્ર.) તેનાલીનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી આત્મદર્શનાશ્રીજી મ.સા., આદિ ઠાણા-૩, (રાજ.) શ્રી ભાંડવપુર મહાતીર્થે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અરૂણપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૫, (મ.પ્ર.) રતલામનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી પુણ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૩, થરાદનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૨, લવાણાનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી દિવ્યદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૩, (મ.પ્ર.) બાગનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અવિચલદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૪, પાલિતાણાનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અનુપમદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૧૧, મુંબઈ (ભાયંદર) નગરે પૂજ્ય વિનયીરત્ના સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા., સરસ્વતીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૧૩, (મ.પ્ર.) બડનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અમિતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૫, (મ.પ્ર.) નયાપુરા ઉજ્જૈનનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી વિદ્વદ્ગુણાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૨, (મ.પ્ર.) ઈન્દોર નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી દર્શિતકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૨, પાલિતાણાનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૮, પાટણનગરે પૂજ્ય સાધ્વજીશ્રીજી શાસનલતાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૭, (રાજ.) જાલોરનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અનેકાન્તલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૮, પાલતાણાનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી વિજ્ઞાનલત્તાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૨, પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૩, (પાલડી) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૭, પાટણનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૭, (વાડજ) અમદાવાદ નગરે અધ્યાત્મકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૪, (રાજ.) ભીનમાલ (કાયમી સ્થિરતા) પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી નયનપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૧ (ખાનપુર) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૩, (નવરંગપુરા) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ચિરાગકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૨, સુરત નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અતિશયલતાશ્રીજી મ.સા.

આદિ ઠાણા -૨, (રાજ.) નાકોડાતીર્થે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૩, પાટણનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી પ્રિતીદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૩, પાટણનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી પ્રિતીદર્શનાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૬, પાલિતાણા નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૧૦, પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અરિહંતનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૧, (રાજ.) કુશલગઢ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અર્હતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૩, (મ.પ્ર.) મંદસૌર નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૩, (ઉમરા) સુરતનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી વિરાગનિધિશ્રીજી મ.સા., આદિ ઠાણા - ૫, પાટણનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા-૪, (મીઠાખળી) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી આજ્ઞાનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૩, (પાલ)સુરતનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી મુક્તિનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૨, ખેતવાડી મુંબઈ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી રિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૫, (સાબરમતી) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી સિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૧૪, (બોરીવલી) મુંબઈ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી શ્રદ્ધાનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૫, (પાર્લા) મુંબઈનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ગોયમનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૩, આણંદનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ઋજુપ્રિયાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા - ૩, (કમાઠીપુરા) મુંબઈ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી દેવનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૩, (પાલડી) અમદાવાદ નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી મૌલીનિધિશ્રીજી મ.સા., આદિ ઠાણા -૪, ડીસાનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સુપાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૬, પાલિતાણા નગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી જીતયશાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા -૨, (ગોપીપુરા) સુરતનગરે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ઋદ્ધિધરત્નાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા વિગેરે ઉક્ત શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો સ્વયંના આત્મકલ્યાણ સાથે સાથે તેઓની પ્રેરણાથી સાંકળી આયંબિલ, સાંકળી અઠ્ઠમ, સિદ્ધિ તપ, માસક્ષમણ, અઠ્ઠમ-અઠાઈ અને તેનાથી ઉપરના ઉપવાસ, દીપક એકાસણા, નવકાર મહામંત્રના જાપ, ખીર એકાસણા, ધાર્મિક બાળકો અને મહિલાઓની શિબિર, ચૈત્ય પરિપાટી, ભાવયાત્રા, માતૃપિતૃવંદના જેવા અનેક કાર્યક્રમોના આયોજન દ્વારા પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતોના શાસન સામ્રાજ્યને બુલંદ બનાવી ધર્મની યશકલગીમાં રંગબેરંગી પીછાં ઉમેરી ગચ્છનું નામ રોશન કરી રહ્યા છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતો ઉત્સાહ : પર્યુષણ પર્વની ધર્મમય ઉજવણી

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તી પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ ભગવંત તથા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી શાસનલત્તાશ્રીજી મ.સા., આદિ ૩૪ શ્રમણ શ્રમણી ભગવંતો સ્વાધ્યાય સાથે ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યા છે. પાટણનગરમાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના માત્ર પાંચ-સાત પરિવારો જ સ્થાયી હોવા છતાં અત્યંત શ્રેષ્ઠ શાસન ભક્તિની સુવાસથી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો છે. ચાતુર્માસની શરુઆતથી જ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને તપ - આરાધના વિવિધ દશ્યો સર્જાઇ રહ્યા છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા આયોજિત પર્યુષણ પર્વની ઉજવણી અનેક ધાર્મિક સામાજિક અને જીવદયાના કાર્યક્રમોથી સંપન્ન થઇ હતી. તપ-આરાધનામાં સાત શ્રમણી ભગવંત તથા નગરપાલિકા મુખ્ય અધિકારી પાંચાભાઇ માળી સહિત દસથી અધિક શ્રાવક-શ્રાવિકાઓએ આઠ ઉપવાસની અને અનેક શ્રાવક-શ્રાવિકાઓએ અઠ્ઠમ ચોસઠ પ્રહરી પોષધ સહિત વિવિધ તપ-આરાધના કરી હતી.

આ પર્વ દરમ્યાન આઠે દિવસ વિભિન્ન સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતો તથા સ્થાનિય જૈન સંઘના અનેક શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ તેમજ ખાસ પ્રસંગ પર જૈનેતર સમાજના ૫૩૦૦થી અધિક સભ્યો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ આયોજનમાં ભવ્ય મંડપની રચના, ઉપાશ્રયમાં સજાવટ, પ્રતિ દિવસ પ્રવચનમાં રોકડ રકમ સહિત ઉત્તમ દ્રવ્યોથી પ્રભાવના કરાઇ હતી. આઠે દિવસ પાટણ સહિત જિલ્લાના અન્ક ગામોમાં માતબર રકમનો ઉપયોગ કરી જીવદયા વિગેરે કાર્યક્રમોનો લાભ પુણ્ય સમ્રાટ ગુરુદેવશ્રીના પરમ ભક્ત રેવતડા નિવાસી શ્રી રમેશકુમાર ઉકચંદજી હીરાણી પરિવારે લીધો હતો. (હીરાણી ફાઉન્ડેશન) પ્રતિદિવસ વિભિન્ન જિનાલયોમાં પરમાત્માની અંગરચના અને સાધર્મિક ભક્તિ સહિત અનેક ધાર્મિક - સામાજિક કાર્યક્રમો અને સાત ક્ષેત્ર - ચૈત્ય પરિપાટી સહિત પ્રભુ મહાવીર જન્મ વાંચનમાં ચૌદ સ્વપ્ન વિગેરેમાં મોટા ચઢાવા લઇ શ્રી

ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણના સભ્યોએ અનુમોદનીય ભક્તિ કરી હતી.

પર્યુષણ મહા પર્વના પાંચમા દિવસે પ્રભુ મહાવીર સ્વામી જન્મ વાંચન અને સ્વપ્ન દર્શનનો કાર્યક્રમ પ્રભુજીના જન્મ દિવસ ચૈત્ર સુદ - ૧૩ની જેમ અત્યંત ઉલ્લાસપૂર્વક ઉજવાયો હતો. પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. એ કલ્પસૂત્રનું ધર્મ સભાને શ્રવણ કરાવ્યું હતું. તેમજ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા. ના મુખકમળ દ્વારા પ્રભુ મહાવીર સ્વામીનું જન્મવાંચન તથા માતા ત્રિશલાને આવેલા ૧૪ સ્વપ્નનું વર્ણન કરાયું હતું.

ખાસ વિશેષતા તો એ હતી કે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના ઉપદેશથી ભારતીય સંસ્કૃતિ અને જૈન ધર્મના સિદ્ધાંતને પામેલા જાપાનના નાગરિકોએ ત્યાંથી જ ઓનલાઈનથી જોડાઈ પ્રભુજીના જન્મ વાંચનનું શ્રવણ કર્યું હતું. વાંચન પ્રસંગે બોલાતા ચઢાવાના આદેશ માટે પોતાની લક્ષ્મીનો ધાર્મિક કાર્યમાં ઉપયોગ કરી લાભ પ્રાપ્ત કર્યો હતો.

પાટણ નગરે પૂજ્યશ્રીઓના દર્શન-વંદનાર્થે પ્રતિ રોજ ભક્ત સમુદાયનું આવાગમન થઈ રહ્યું છે. તાજેતરમાં શ્રી ભરતપુર તીર્થના અધ્યક્ષ તથા ટ્રસ્ટીશ્રીઓ, શ્રી જયંતસેન મ્યુઝીયમ મોહનખેડા અધ્યક્ષ તથા ટ્રસ્ટીશ્રીઓ તેમજ પ્રતિરોજ રાજકીય નેતાઓ દર્શન-વંદનાર્થે આવી રહ્યા છે. જ્યારે જાબુઆથી ૧૧૫ સભ્યો પાટણના મુખ્ય માર્ગથી શોભાયાત્રા કાઢી નગર પ્રવેશ કર્યો હતો. અને મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા. દ્વારા અપાયેલ પ્રવચનનું શ્રવણ કરી ધન્યતા અનુભવી શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના આશીર્વાદ મેળવી આગામી ચાતુર્માસ માટે પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીઓને વિનંતી કરી હતી.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત (થરાદવાળા)ના આંગણે તપ-આરાધનાની વહેતી ગંગા

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત (થરાદવાળા) તથા અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ સુરતના તત્વાધાનમાં ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.- ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સાના આજ્ઞાનુવર્તી અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરત્ન શ્રુત પ્રભાવક શાસનના ઉદયમાન સિતારા

પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા., આદિ ઠાણાની સુપાવન નિશ્રામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત (થરાદવાળા)ના આંગણે તપ-આરાધનાની ગંગા વહી રહી છે અને ઘોડાપુર રેલાઈ રહ્યા છે. પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીના ઐતિહાસિક સર્વમંગલ વર્ષાવાસ દરમ્યાન યોજાયેલ કાર્યક્રમોની ઝાંખી સપ્ટેમ્બર માસના અંકમાં કરાઈ હતી. ત્યારબાદ પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહા પર્વની ઉજવણીમાં શ્રી પ્રભુ મહાવીર જન્મવાંચન, શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્ર કોષ અનુવાદન, તપસ્વીઓનું બહુમાન વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. ૪ વર્ષથી ૧૦ વર્ષની વયના અનેક બાળ તપસ્વીઓએ ૩૦ ઉપવાસ, ૨૧ ઉપવાસ, ૧૬ ઉપવાસ, ૧૦ ઉપવાસ, અઠ્ઠાઈ અને ચોસઠ પ્રહરી પૌષધ કરી આરાધના કરી હતી.

તા. ૧૮-૯-૨૦૨૧ના રોજ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રીની નિશ્રામાં નિશીલ પ્રકાશભાઈ માજની, ખુશી નિશીલ માજની, વૈશાલી અર્ચિત માજની, જૈનમ પિયુષ માજની, જાનવી વોરાની તપશ્ચર્યાની અનુમોદનાર્થે હાર્દિક શાહ તથા સૌમિલ શાહના સંગીતના સથવારે તેરાપંથ ભવન, સીટી લાઈટ રોડ સુરત ખાતે માજની તારાબેન ભોગીલાલ સરૂપચંદ પરિવાર દ્વારા ''તપ વંદનાવલી'નો ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. જ્યારે તા. ૧૯-૯-૨૦૨૧ના રોજ બલ્લુ જાસુદબેન નરપતલાલ પરિવારના લાભાર્થે ભવ્ય ચૈત્યપરિપાટીનું આયોજન કરાયું હતું.

સમાજજનોની વિશાળ સંખ્યામાં હોંશિલી હાજરીમાં શ્રી મહાવીર સ્વામી જિનાલય ગુરૂમંદિર અઠવાગેટ, શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ જિનાલય ગઉજરવાડી અઠવાગેટ, શ્રી વાસુપૂજ્ય સ્વામી જિનાલય અમીઝરા એપાર્ટમેન્ટ અઠવાગેટ, શ્રી આદિનાથ જિનાલય લાલ બંગલા, શ્રી દિવ્ય મુનિસુવ્રતસ્વામી જિનાલય પાર્લે પોઈન્ટ સર્કલ વિગેરે વિસ્તારોમાં ચૈત્ય પરીપાટીએ માનવમંદિર એપાર્ટમેન્ટ પાર્લે પોઈન્ટ સર્કલ ખાતે સ્થિરતા કરી હતી.

ઉક્ત બંને પ્રસંગોમાં લાભાર્થી પરિવારો દ્વારા નવકારશીની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઈ હતી. તા. ૨૩-૯-૨૦૨૧ના રોજ વાસુદર્શન રેસિડેન્સી પરિવાર પાલ દ્વારા ચૈત્ય પરીપાટીનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

અમદાવાદ રાજનગરે પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્નએ ધર્મ વૈભવનો ખજાનો ખુલ્લો મૂકતાં ધર્મની લૂંટાલૂંટ

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના આંગણે ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તી અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના અંતેવાસી પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણા તેમજ માલવમણી વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાના ચાતુર્માસનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું.

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)માં આનંદની અમી વર્ષા થઈ રહી છે અને હરખની હેલી વરસી રહી છે. ચોથો આરો વર્તાતો હોય તેવું ઉમંગી ધર્મમય વાતાવરણ છવાઈ ગયું છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)માં અભૂતપૂર્વ તપમય માહોલ સર્જાઈ ગયો છે. પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા.એ ધર્મ વૈભવનો ખજાનો ખુલ્લો મુકતાં અમદાવાદમાં વસતા થરાદ પંથકવાસીઓ ધર્મ વૈભવની લૂંટાલૂંટ કરી માલામાલ બની ગયા છે.

પૂજ્યશ્રીના ધારદાર પ્રવચનોથી પ્રેરાઈ ૫ વર્ષથી ૧૨ વર્ષના ૨૫૦થી અધિક બાળકો સહિત સિદ્ધિતપના ૭૦૮ તપસ્વીઓએ અને અઠ્ઠાઈ અને અઠ્ઠાઈથી ઉપરના તપસ્વીઓએ શ્રી કૃનાલભાઈ ડી. સુરાણીના સંગીતના સથવારે સામુહિક પચ્ચખાણ લીધા હતા. ત્યારે ઉપસ્થિત હજારો આંખો અશ્રુભીની બની ગઈ હતી અને તપશ્ચર્યા બાદ જીવનમાં અપનાવવા જેવા યોગ્ય નિયમો લીધા હતા. આ પળે શ્રોતાજનોમાં ઉત્સાહી માહોલ સાથેનો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો.

વોહેરા રાયચંદ જીતમલભાઈ પરિવારના લાભાર્થે અને પ્રતિકભાઈ શાહ તથા હાર્દિકભાઈ શાહના સંચાલન હેઠળ ૭૦૮ સિદ્ધિતપના તપસ્વીઓના સામુહિક પચ્ચખાણ ઉચ્ચરાવવાના પ્રસંગે છ હજારથી વધુ સમાજજનોની હોંશિલી હાજરી રહી હતી. જે સરદાર પટેલ સેવા સમાજના વિશાળ મેદાનમાં રચાયેલ ડોમ પણ નાનો પડ્યો હતો. જ્યારે શ્રી આગમ ગ્રંથ તામ્રપત્ર લેખન અભિયાને તો એક નવો ઈતિહાસ સર્જી દીધો હતો. જે પત્રોનો લાભ લેવા મુંબઈ- થરાદ-ડીસા, સુરત વિગેરે સ્થળોએથી સમાજજનોએ ઉછળતા ભાવો સાથે ઉમળકાભેર લાભો પ્રાપ્ત કર્યા હતા. પ્રભુ મહાવીર જન્મવાંચન દિવસે વિશાળ સંખ્યામાં ઉમટેલ જનમેદની અને નરેન્દ્રભાઈ વાણીગોતાના સંગીતના સથવારે ચૌદ સ્વપ્નના અકલ્પનીય ચડાવા બોલી હરખઘેલી ધન્યતા અનુભવી હતી. પ્રભુ મહાવીરના પારણાને ઘરે લઈ જઈ ઝુલાવાનો અને દર્શનાર્થે રાખવાનો સંઘ અધ્યક્ષ

શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા સહિત દરેક વિસ્તારના ૨૦ થી વધુ પરિવારોએ લાભ લીધો હતો. પારણાને ઝુલાવવા અને દર્શન કરવા રીતસર લાઈનો લાગી હતી. કલ્પસૂત્રને વહોરાવી પોતાના નિવાસસ્થાને લઈ જવાનો લાભ અને તપસ્વીઓના બહુમાનનો લાભ મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવારે લીધો હતો. તેવી જ રીતે બારસા સૂત્રનો લાભ વીરવાડીયા શાંતાબેન બાબુલાલ વીરચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો. ખાનપુર ખાતે બારસા સૂત્રનો લાભ વોહેરા ચંદુલાલ અમુલખભાઈ પરિવારે લીધો હતો. મોટેરા ખાતે બારસા સૂત્રનો લાભ ઢેસાઈ પિયુષકુમાર જયંતિલાલ ડાહ્યાલાલ પરિવારે લીધો (તદ્દુઉપરાંત ઘણા ભાગ્યશાળી પરિવારોએ બારસા સૂત્રનો લાભ લીધો હતો. માહિતી પ્રાપ્ત થવા મુજબ લાભાર્થી પરિવારોના નામ પ્રસિદ્ધ કરાયેલ છે. જે પરિવારોએ ઉક્ત લાભો લીધા હોય તો ગુર્જર જૈન જ્યોત શાશ્વત ધર્મ સુરેશ સંઘવીને જાણ કરશો. તો આગામી અંકમાં અચૂક સ્થાન આપીશું.) પર્યુષણ પર્વ દરમ્યાન ચોસઠ પ્રહરી પૌષધનું આયોજન કરાયું હતું. જેના અતરવાયણાનો લાભ વીરવાડીયા શાંતાબેન બાબુલાલ વીરચંદ પરિવારે લીધો હતો. સિદ્ધિતપના તપસ્વીઓનું શ્રી સંઘ તરફથી રૂા. ૧૨૫૦૦ના કવર દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું. જ્યારે સંઘવી વાઘજીભાઈ શીવલાલ પરિવાર દ્વારા ચાંદીનો સિક્કો તથા વોરા વાઘજીભાઈ ગગલદાસ રીખવચંદ વિશ્વાસ પરિવાર દ્વારા કાંસાનું ભાણું આપી બહુમાન કરાયું હતું. શ્રી સંઘ દ્વારા ઋજુવાલિકા ફ્લેટ પાલડી મધ્યે પારણાનું આયોજન કરાયું હતું.

જ્યારે બે ટાઈમની નવકારશી તથા ત્રણ ટાઈમના સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યનું સરદાર સેવા સમાજ હોલ મીઠાખળી ખાતે આયોજન કરાયું હતું.

ભાદરવા સુદ ૫ ને શનિવાર તા. ૧૧-૯-૨૦૨૧ના રોજ પારણાનો લાભ સંઘવી વાઘજીભાઈ કાનજીભાઈ પરિવારે લીધો હતો. નવકારશીનો લાભ દોશી બબુબેન છોટાલાલ હઠીસીંગભાઈ પરિવારે લીધો હતો. સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યનો લાભ વેદલીયા બાબુલાલ વાઘજીભાઈ (ભોરડુ - ડીસા) પરિવારે લીધો હતો.

ભાદરવા સુદ ૬ ને રવિવાર તા. ૧૨-૯-૨૦૨૧ના રોજ સિદ્ધિતપના તપસ્વીઓના પારણા અને નવકારશીનો લાભ સંઘવી નાનુભાઈ રમણીકલાલ હઠીચંદભાઈ પરિવારે લીધો હતો. સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યનો લાભ અદ્દાણી તારાબેન કીર્તિલાલ ભુદરમલભાઈ પરિવારે લીધો હતો. તા. ૧૩-૯-૨૦૨૧ના રોજ સ્વામી વાત્સલ્યનો લાભ વોરા ચંપાબેન કીર્તિલાલ રાયચંદભાઈ (મંગલમ) પરિવારે લીધો હતો. અઠ્ઠાઈથી સિદ્ધિતપ સુધીના ૧૨ વર્ષથી નાના બાળ તપસ્વીઓનું તા. ૨૧-૯-૨૦૨૧ના રોજ દોશી બબુબેન છોટાલાલ હઠીસીંગભાઈ પરિવાર દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું.

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના આ ચાતુર્માસ આયોજનને ચાર ચાંદ લગાવનાર સંઘ અધ્યક્ષ શ્રી વાઘજીભાઈ વોરા તેમજ ટ્રસ્ટી મંડળ સહિત સમાજના કર્તવ્યનિષ્ઠ કાર્યકરોની જેટલી અનુમોદના કરીએ તેટલી ઓછી છે.

જેમ સંસારની લીલા અનેરી છે તેમ પરમાત્માના શાસનનો પ્રભાવ અનેરો છે. વિશ્વમાં આશ્ચર્ય અનેક કહેવાય છે. પણ આ વિષમકાળમાં પરમાત્માના શાસનમાં પૂજ્ય ગુરૂદેવોના આશિર્વાદ અને પ્રેરણાથી બનતા અનેક પ્રસંગો ભૌતિકવાદમાં જીવતા જીવો માટે અજબનું પ્રેરણાત્મક આશ્ચર્ય બની જાય છે. ભારતીય સંસ્કૃતિમાં ભોગવિલાસ સાથે જીવાતા જીવનની પ્રધાનતા કે પ્રતિષ્ઠા નથી પણ સમજણપૂર્વક આત્માના કલ્યાણ અર્થે એકાંતે ભાવપૂર્વક જન્મ મરણની પરંપરા તોડવા માટે આરાધેલા તપમાર્ગની જ પ્રતિષ્ઠા છે. ભોગ પાછળ રમનારા કે રોનારાની જૈન શાસન જ નહીં, પરંતુ કોઈપણ ધર્મ સમુદાયમાં કુટી કોડીનીય કિંમત નથી. સાચી મહત્તા, મહાનતા, શાણપણ કે બહાદુરી તો મળેલા ભૌતિક સુખ–સાધનો વચ્ચે પણ તપોબળ સાથે મનોબળનું સ્વરૂપ દાખવતા મહાપુણ્યશાળી આત્માઓ માટે છે. સુખ સમૃદ્ધિ અને ભૌતિક સાધન સંપન્ન પરિવારના બાળકોથી માંડી યુવાનોએ અમદાવાદ, મુંબઈ, ભાયંદર, મીરા રોડ, બોરીવલી, કાંદીવલી વિગેરે સ્થળોએ ૧૨૦૦ જેટલા તપસ્વીઓએ સિદ્ધિતપની ઉગ્ર તપશ્ચર્યા કરી બતાવી આપ્યું છે કે, થરાદવાસીઓ ભોગ વિલાસથી પર છે અને પ્રભુ મહાવીરના સિદ્ધાંતોને સમર્પિત છે.

અમદાવાદ રાજનગરે.... ઉછરંગભરી ઉછામણી

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક શ્રી જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના આંગણે ચાતુર્માસ સ્થિત મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા.ના મુખકમળ દ્વારા પ્રભુ મહાવીર જન્મ વાંચન કરાયું હતું. તે દરમ્યાન ઉછરંગભરી ઉછામણીના વિવિધ આયોજન ક્ષેત્રે થરાદ પંથક જૈન સમાજના ઉદાર દિલ ભાગ્યશાળી પરિવારોએ વિક્રમ સર્જક વિવિધ ચઢાવાઓનો લાભ લઈ છુટા હાથે તેમની લક્ષ્મીનો સદ્‌વ્યય કર્યો હતો. ત્યારે પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી અંગેના બધા જ અંદાજ અને ગણતરીઓ સમગ્ર થરાદ પંથકવાસીઓની કલ્પનાને આંબી ગઈ હતી. સમગ્ર ત્રિસ્તુતિક સંઘોમાં અઢળક ઉપજ સહિત ધર્મચર્ચાનું કેન્દ્ર બનેલ શ્રી અમદાવાદમાં જિનશાસન અને શ્રી ત્રિસ્તુતિક સંઘનો જય.. જયકારી ગુંજી ઉઠ્યો છે. શાસન પ્રભાવનામાં અતિ અભિવૃદ્ધિ કરે તેવા ઘેર–ઘેર તપના તોરણો બંધાયા હતા અને પાંચ વર્ષથી ૬૦ વર્ષ ઉપરના સિદ્ધિતપ સહિત ૧૮૦૫થી વધુ તપસ્વીઓએ નિર્વિઘ્ને તપ પરિપૂર્ણ કરી પારણા કર્યા છે. જય મહાવીર, જય રાજેન્દ્ર, જય જયંત આવી અમીદૃષ્ટિ શ્રી સકળ સંઘ પર સદાય વરસાવતા રહો તેવી અંતઃકરણપૂર્વક પ્રાર્થના.

અમદાવાદ રાજનગરે કુલ તપશ્ચર્યા ૭૦૮ સિદ્ધિ તપ,
માસક્ષમણ ૧૮, અઠ્ઠમ ૩૧૫, ૮ થી ૨૯ ઉપવાસ સુધીના ૫૬૦,
ચૌસઠ પ્રહરી પૌષધ ૧૪૪, ૮૬ ભાઈઓ ૫૮ બહેનો.

શ્રી જિનેશ્વર ભગવંત કથિત જિનાગમ હજારો વર્ષો સુધીની સુરક્ષિત રહે તે માટે...

શ્રી જિનાગમ તામ્રપત્ર લેખન અભિયાન

તપોનિષ્ઠ યોગિન્દ્રાચાર્ય પ્રાતઃસ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ અને ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્‌ઘાટક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશિર્વાદથી શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ (થરાદ)ના તત્વાધાનમાં પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી જિનાગમરત્નવિજયજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી સામુહિક તપસ્યાની અનુમોદનાર્થે શ્રી જિનાગમ તામ્રપત્ર લેખન અભિયાનનો પ્રારંભ કરાયો હતો. સંઘના પરિવારોમાં થયેલ તપસ્યા નિમિત્તે ઉમળકાભેર ભાગ્યશાળી પરિવારોએ લાભ લીધો હતો, જે માહિતી પ્રાપ્ત થયેલ તે મુજબ લાભાર્થી પરિવારોની યાદી અત્રે પ્રસ્તુત છે.

(૧) આચારાંગ સૂત્ર (૩૮ પત્ર) સંઘવી નરપતલાલ વીરચંદભાઈ પરિવાર - અમદાવાદ (૨) આગમ ગ્રંથ (૩ પત્ર) વોહેરા કોકીલાબેન રોહિતભાઈ પરિવાર - અમદાવાદ, (૩) આગમ ગ્રંથ (૩ પત્ર) વોહેરા કાળીદાસ દીપચંદભાઈ પરિવાર - અમદાવાદ (૪) શ્રી ઓઘ નિર્યુક્તિ (૨૩ પત્ર) વોહેરા જીવીબેન મફતલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવાર - અમદાવાદ (૫) શ્રી પિંડ નિર્યુક્તિ (૧૪ પત્ર) વોહેરા રૂપમબેન શાંતિલાલ દીપચંદભાઈ પરિવાર - અમદાવાદ (૬) શ્રી સ્થાનાંગ સૂત્ર (૬૬ પત્ર), વીરવાડીયા શાંતાબેન બાબુલાલ વીરચંદભાઈ પરિવાર - અમદાવાદ (૭) શ્રી દશાશ્રુત સ્કન્ધમ (૧૨ પત્ર) વોરા શાંતાબેન હીરાલાલ શામજીભાઈ પરિવાર - અમદાવાદ (૮) શ્રી નંદીસૂત્ર (૧૧ પત્ર) સ્વ. અલકાબેન ભરતભાઈ વાઘજીભાઈ પરિવાર - ભાયંદર, મુંબઈ (૯) શ્રી મરણ સમાધિ પ્રકીર્ણમ સૂત્ર (૧૩ પત્ર) શેઠ કેસરબેન મફતલાલ મોહનલાલ પરિવાર - પિલુડા - ઉંઝા (૧૦) શ્રી સૂર્ય પ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર (૩૩ પત્ર) સંઘવી ચંપાબેન નરપતલાલ વીરચંદ પરિવાર - અમદાવાદ. (૧૧) શ્રી આચારાંગ નિર્યુક્તિ (૩૭ પત્ર) દેસાઈ પ્રવિણચંદ્ર ડાહ્યાલાલ પરિવાર - મુંબઈ (૧૨) શ્રી આવશ્યક સૂત્રમ - નિર્યુક્તિ સહિત (૪૪ પત્ર) મોદી રીખવચંદ ભાઈચંદ પરિવાર - મુંબઈ (૧૩) શ્રી અંતકૃત દશાંગ સૂત્ર તામ્રપત્રનો લાભ, પરીખ વસંતકુમાર શાંતિલાલ પરિવાર - અમદાવાદ (૧૪) શ્રી પંચકલ્પભાષ્ય સૂત્રમ્ (૫૪ પત્ર) માતુશ્રી જેઠીબેન

ચીમનલાલ મુળચંદભાઈ શેઠ પરિવાર દૈયપ - મુંબઈ (૧૫) શ્રી અનુયોગદ્વાર સૂત્રમ્ (૩૨ પત્ર) સંઘવી ખેમચંદ લલ્લુભાઈ પરિવાર - થરાદ (રાજકોટ) (૧૬) શ્રી આગમગ્રંથ (૧૧ પત્ર) વોહેરા હિંમતલાલ અમૃતલાલ પરિવાર - અમદાવાદ (૧૭) શ્રી જિતકલ્પ સૂત્રમ્ (૫૧ પત્ર) ભદોરીયા પુષ્પાબેન હિંમતલાલ પરિવાર - જુના ઘાટિલા - મુંબઈ (૧૮) શ્રી ઉત્તરાધ્યન સૂત્ર (૩૧ પત્ર) અદાણી કાંતાબેન મહેન્દ્રભાઈ નાગરદાસ પરિવાર - અમદાવાદ (૧૯) શ્રી રાજપ્રશ્ન ઉપાંગ સૂત્ર (૩૨ પત્ર) સવાણી શાંતાબેન ભૂપેન્દ્રભાઈ પરિવાર - ઘાનેરા - મુંબઈ, (૨૦) શ્રી આગમગ્રંથ (૧૧ પત્ર) મોદી બબીબેન ચંદુલાલ હીરાલાલ પરિવાર - મુંબઈ (૨૧) શ્રી આગમગ્રંથ (૧૧ પત્ર) ભણસાળી તારાબેન શાંતિલાલ મણીલાલ પરિવાર - અમદાવાદ (૨૨) વર્તમાન વિદ્યમાન સૌથી મોટું શ્રી પ્રજ્ઞાપના ઉપાંગસૂત્ર (૧૦૫ પત્ર) મોદી પ્રભાબેન મફતલાલ પરિવાર - મુંબઈ (૨૩) શ્રી આગમગ્રંથ (૫ પત્ર) ધરૂ મથુબેન પુનમચંદ હાલચંદભાઈ પરિવાર - થરાદ (૨૪) શ્રી આગમગ્રંથ (૧ પત્ર) વોહેરા વાઘજીભાઈ કાળીદાસ પરિવાર - અમદાવાદ (૨૫) શ્રી આગમગ્રંથ (૫ પત્ર) દેસાઈ વાઘજીભાઈ ડાહ્યાભાઈ પરિવાર - અમદાવાદ (૨૬) શ્રી આગમગ્રંથ (૧ પત્ર) સંઘવી જિનલ અરવિંદકુમાર પરિવાર - જાણદી - અમદાવાદ (૨૭) શ્રી જંબુદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર (૬૨ પત્ર) દેસાઈ નવીનચંદ્ર હાલચંદભાઈ ઉજમચંદ પરિવાર (થરાદ) (૨૮) શ્રી અનુતરોવવાઈ દશાંગ સૂત્ર, દોશી ચંપાબેન મફતલાલ મોહનલાલ પરિવાર (ઉંદરાણ) (૨૯) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) દેસાઈ કીર્તિલાલ મોહનલાલ ભુદરમલ પરિવાર - અમદાવાદ (૩૦) શ્રી આગમગ્રંથ (૨ પત્ર) દોશી રૂક્ષ્મણીબેન જયંતિલાલ લલુભાઈ પરિવાર - મુંબઈ (૩૧) શ્રી આગમગ્રંથ (૫ પત્ર) સવિતાબેન રમણિકલાલ ચુનીલાલ પરિવાર - મુંબઈ (૩૨) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) બલ્લુ ચંપકલાલ બબલદાસ પરિવાર - મુંબઈ (૩૩) શ્રી પર્વાધિરાજ પર્યુષણના મૂળ સ્વરૂપ વર્તમાન વિદ્યમાન સૌથી મહત્વ ધરાવતા શ્રી આગમિક બારસાસૂત્ર : કોતરેલ ચિત્રને ચડાવેલ સુવર્ણ સહિત ૧૨૦૦ શ્લોક પ્રમાણ (૮૨ પત્ર) અદાણી બબીબેન ચીમનલાલ કકલચંદ પરિવાર - અમદાવાદ - મુંબઈ. (૩૪) શ્રી આવશ્યક સૂત્રમ નિર્યુક્તિ સહિત (૪૪ પત્ર) વોરા મથુરીબેન ચીમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવાર - અમદાવાદ (૩૫) મહાનિશીથ સૂત્ર (૬૭ પત્ર) પરીખ ધુડીબેન ટીલચંદ ડાહ્યાલાલ પરિવાર - મુંબઈ (૩૬) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) વારીયા શિલ્પાબેન પ્રવિણચંદ્ર પરિવાર - અમદાવાદ (૩૭) શ્રી આગમગ્રંથ

(૨ પત્ર) શેઠ શારદાબેન રસિકલાલ પરસોત્તમદાસ પરિવાર - કરબુણ (૩૮) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) ચંપાબેન મફતલાલ વારીયા પરિવાર - અમદાવાદ (૩૯) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) આશીની પાર્થકુમાર સંઘવી (૪૦) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) પુર્વીલ પ્રવિણચંદ્ર વારીયા (૪૧) શ્રી આગમગ્રંથ (૩૬ પત્ર) વોહેરા મંજુલાબેન રસિકલાલ નાગરદાસ પરિવાર - અમદાવાદ (૪૨) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) શેઠ વાડીલાલ બબલદાસ પરિવાર - અમદાવાદ (૪૩) શ્રી આગમગ્રંથ (૨ પત્ર) વોહેરા રમણલાલ ચુનીલાલ હ. શિલ્પાબેન (૪૪) શ્રી ચંદ્રપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર (૨૭ પત્ર) સંઘવી ચંપાબેન નરપતલાલ વીરચંદ પરિવાર - અમદાવાદ (૪૫) શ્રી ભગવતીસૂત્ર (૨૪૫ પત્ર) મોદી રીખવચંદ ભાઈચંદભાઈ પરિવાર - મુંબઈ (૪૬) શ્રી વિપાક દશાંગસૂત્ર (૨૧ પત્ર) શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ - ડીસા (૪૭) શ્રી આગમગ્રંથ (૪ પત્ર) વોહેરા નરપતલાલ નાગરદાસ પરિવાર - અમદાવાદ (૪૮) શ્રી આગમગ્રંથ (૩ પત્ર) વોહેરા દેવશીભાઈ શાંતિલાલ પરિવાર - દુધવા (૪૯) શ્રી ઔપપાતિક ઉપાંગ સૂત્ર (૨૧ પત્ર) વોહેરા રૂપમબેન બબલદાસ પોપટલાલ પરિવાર - અમદાવાદ (૫૦) શ્રી સૂત્રકૃતાંગ સૂત્ર (૩૫ પત્ર) સંઘવી શાંતાબે કેશવલાલ વીરચંદ પરિવાર - અમદાવાદ (૫૧) શ્રી સમવાયાંગ સૂત્ર (૩૨ પત્ર) ચૌહાણ લીલાબાઈ વિમલચંદજી છોગમલજી પરિવાર - રાણી સ્ટેશન (૫૨) શ્રી દસવૈકાલિક સૂત્ર (૧૨ પત્ર) શેઠ વાઘજીભાઈ બાદરમલભાઈ પરિવાર, પિલુડા (૫૩) શ્રી જીવાભિગમ સૂત્ર (૭૬ પત્ર) શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ મુંબઈ.

... વધુ આવતા અંકે...

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ પાલડી મધ્યે ચૈત્ય પરીપાટી તથા મહાપૂજનના ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમો સંપન્ન

ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી શશીકલાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રશિષ્યા અને વિનયીરત્નાપૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અનંતદષ્ટાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા પૂજ્ય વિદુષી સાધ્વીજીશ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ - પાલડી ધર્મ આરાધનામાં પ્રવૃત્ત બનેલ છે.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ અને વિવિધ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોથી અમદાવાદના પાલડી વિસ્તારની પુણ્યવંતી ધરા ગાજી રહી છે. પૂજ્ય

સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ પાલડી વિસ્તારમાં ચોથો આરો વર્તાતો હોય તેવું ધર્મમય વાતાવરણ છવાઇ ગયું છે. ચાતુર્માસની શરુઆતથી જ એક પછી એક ઐતિહાસિક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને તપ-આરાધનાના વિવિધ દશ્યો સર્જાયા હતા અને સર્જાઇ રહ્યા છે. ગત તા. ૧૮-૯-૨૦૨૧ના રોજ શાંતિલાલ ઓખાલાલ ભણસાળી પરિવાર દ્વારા પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વના પાંચમા કર્તવ્ય સ્વરૂપ ભવ્યાતિભવ્ય ચૈત્ય પરિપાટીનું આયોજન કરાયું હતું. ૯૦૦ થી ૧૦૦૦ સમાજજનોની હોંશિલી હાજરીમાં પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની પાવનકારી નિશ્રામાં સવારે ૬ કલાકે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન પાલડીથી ચૈત્ય પરિપાટીએ વાજતે-ગાજતે પ્રસ્થાન કર્યું હતું. શ્રી કુંજુનાથ જિનાલય, શ્રી ચિંતામણી પાર્શ્વનાથ જૈન દેરાસર, દશા પોરવાડ, ચંદનબાળા ફ્લેટ, અરુણ સોસાયટી દેરાસર વિગેરે સ્થળોએ ફરી શ્રી આદિત્ય બ્રાહ્મણ મિત્ર મંડળ હોલ, મહાલક્ષ્મી ચાર રસ્તા પાલડી મુકામે સ્થિરતા કરી હતી. ત્યાં લાભાર્થી પરિવાર દ્વારા નવકારશીની સુંદર વ્યવસ્થા કરાઇ હતી. જ્યારે તા. ૧૯-૯-૨૦૨૧ના રોજ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા.ની વર્ધમાન તપની ૮૨મી ઓળીના પારણા તેમજ ૧૧ સિદ્ધિતપની અનુમોદનાર્થે પૂજ્ય સાધ્વી ભગવંતના સંસારી પરિવાર વોહેરા ચંપાબેન કીર્તિલાલ રાયચંદભાઇ (દુધવાવાળા) પરિવાર દ્વારા શ્રી અવંતી પાર્શ્વનાથ શ્રી ગુરૂ ગૌતમસ્વામી ગુરૂદેવ રાજેન્દ્રસૂરિ ચૈત્ય પ્રાસાદ જિનાલયના પ્રાંગણામાં મહાપૂજાનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. સાંજે ૫-૩૦ કલાકે પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં લાભાર્થી પરિવારના નિવાસસ્થાન લક્ષ્મીવિલા પાલડીથી સકળ સંઘ વાજતે-ગાજતે શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ આરાધના ભવન મહાપૂજા સ્થળે પહોંચ્યો હતો. મહાપૂજા સ્થળની સુંદર સજાવટ કરાઇ હતી. ફૂલોની સજાવટ અને રોશની સહુના આકર્ષણનું કેન્દ્ર બની હતી. સહુએ દર્શન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. આ બંને કાર્યક્રમને અત્યંત સફળતા અપાવવા સંઘના દરેક સભ્યોએ ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી.

થરાદ જૈન સમાજનું ગૌરવ

ધાર્મિક ક્ષેત્રે ભવ્ય સફળતા મેળવતા સંઘવી ઝ્રપલબેન

થરાદ નિવાસી અમદાવાદ સ્થિત સંઘવી ઝ્રપલબેન શૈલેષભાઇ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા લેવાયેલ પાંચ એકમની ધાર્મિક પરીક્ષામાં ૯૮ ગુણ મેળવી પ્રથમ ક્રમે ઉત્તિર્ણ થયેલ છે. રાજનગર દ્વારા લેખિત ધોરણ ૮ની પરીક્ષામાં ૮૫ ગુણ મેળવી પ્રથમ નંબરે ઉત્તિર્ણ થયેલ છે. ધાર્મિક શિક્ષણમાં ઉંડો રસ ધરાવતા સંઘવી

રૂપલબેને મોટી સિદ્ધિ હાંસલ કરી ધાર્મિક ક્ષેત્રે સફળતા મેળવી છે જે થરાદ જૈન સમાજ માટે ગૌરવની વાત છે. રાજેન્દ્ર જયંતસેનસૂરિ જૈન પાઠશાળામાં (પાલડી) સંઘવી રૂપલબેન માનદ્‌સેવા આપી રહ્યા છે. તેમનું બહુમાન શ્રી પાઠશાળાએ તથા શ્રી વાઘજીભાઈ ગગલદાસ વોરા (વિશ્વાસ)એ કર્યું હતું. તેમજ શ્રી રાજનગરની સંસ્થાએ પણ રૂપલબેનનું બહુમાન કર્યું હતું.

વિશ્વાસનો ટૂંકો પરિચય : શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાને (વિશ્વાસ) સેવાના ભેખધારી કહીએ તો અતિશયોક્તિ નહી ગણાય. વયાવચ્ચ ભક્તિ, શ્રી નવીનભાઈ મફતલાલ સંઘવી સાથે રાજ રાજેન્દ્ર પ્રકાશન ટ્રસ્ટનું સુચારૂ સંચાલન, શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ દ્વારા સંચાલિત ૧૨ પાઠશાળાની અવાર નવાર મુલાકાત લઈ જરૂરી માનદ્‌સેવા આપવી એવા ઘણા ગુણોથી અલંકૃત કોમળ હૃદય ધરાવતા, મૃદુભાષી, સરળ સ્વભાવી શ્રી વાઘજીભાઈ ગગલદાસ વોરા (વિશ્વાસ) દ્વારા થઈ રહેલા સત્કાર્યોની જેટલી અનુમોદના કરીએ તેટલી ઓછી છે.

પૂજ્ય વિદુષી સાધ્વીજી શ્રી ડૉ. અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણાના સંગે ધર્મભક્તિના રંગે રંગાયો શ્રી મંદસૌર સંઘ

સાત માસક્ષમણ અને ૧૪૧ અઠ્ઠાઈ પ્રથમવાર

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ મંદસૌર દ્વારા ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. - આચાર્યશ્રી જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભુવનપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા પૂજ્ય વિદુષીસાધ્વીજી શ્રી ડો. અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા. આદિ ઠાણા મધ્યપ્રદેશના મંદસૌર ખાતે ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યા છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ મંદસૌરમાં અત્યંત ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો છે અને પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના સંગે મંદસૌર સંઘ ધર્મભક્તિના રંગેરંગાઈ ગયો છે. ચાતુર્માસની શરૂઆતથી જ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને તપ-આરાધના વિવિધ દશ્યો સર્જાઈ રહ્યા છે. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘમાં અ.ભા. શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી શ્રી સુરેન્દ્રજી લોઢાના શ્રાવિકા સહિત કુલ સાત તપસ્વીરત્નોએ માસક્ષમણ તપની કઠીન આરાધના સુખશાતાપૂર્વક સંપન્ન કરેલ છે. જ્યારે અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય મહામંત્રીશ્રી સુધિરજી લોઢા સહિત ૧૪૧ તપસ્વીરત્નોએ અઠ્ઠાઈ તપની આરાધના સુખ શાતાપૂર્વક સંપન્ન કરેલ છે. મંદસૌર સંઘની પ્રથમ ઘટના છે. અઠ્ઠાઈ તપસ્યા અનુમોદનાર્થે એક દિવસીય ચૈત્ય પરીપાટી અને તપ અનુમોદન મહોત્સવ કાર્યક્રમ તા. ૧૮-૯-૨૦૨૧ના રોજ ભવ્યાતિભવ્ય રીતે સંપન્ન થયો હતો.

પરિષદ સંદેશ : સંયમ વંદન યાત્રા

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા પાટ પરંપરાના શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોની સુખશાતા પુછવા અને દર્શન-વંદનાર્થે સંયમવંદન યાત્રાનું આયોજન પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઈ ધરૂના નેતૃત્વ હેઠળ કરાયું હતું. ૧ ઓક્ટોબર - જાલોર સાંજે શ્રી નાકોડાતીર્થ રાત્રિ વિશ્રામ, ૨ ઓક્ટોબર શ્રી ભાંડવપુર તીર્થ, ડીસા લવાણા, રાત્રિ વિશ્રામ થરાદ, ૩ ઓક્ટોબર પાટણ, રાત્રિ વિશ્રામ છત્રાલ, ૪ ઓક્ટોભર અમદાવાદ ચાર દિવસની સંયમ વંદન યાત્રામાં દરેક સ્થળે બિરાજમાન આચાર્ય ભગવંતો સહિત શ્રમણ-શ્રમણી ભગવંતોના દર્શન વંદન કરી સુખશાતા પુછી હતી.

સમગ્ર તપસ્વી રત્નોની તપસ્યાની અનુમોદનાર્થે ફુલ નહીં તો ફૂલની પાંખડી રૂપે નાનો ત્યાગ

જૈનોના ચારેય ફીરકાઓમાં પ્રભુ મહાવીરના જયંવતા શાસનની ભીસ્મ તપારાધનાની ધર્મ ધજા વિશ્વમાં લહેરાઈ રહી છે. જેમાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં અને પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી પ્રેરણા અને નિશ્રામાં અમદાવાદ (રાજનગરે) ૭૦૦થી અધિક તેમજ મુંબઈ ભાયંદર, મીરા રોડ, બોરીવલી, કાંદીવલી વિગેરે સ્થળોએ ૪૦૦થી અધિક તપસ્વીરત્નોએ અને પંદર વર્ષથી નીચેના બાળતપસ્વીઓએ ભીસ્મ સિદ્ધિતપની આરાધના કરી અમારા જેવા રોજ ત્રણ ટાઈમ જમવાવાળાને શરમીંદા કરી દીધા છે.

હજુ થરાદવાસી પરિવારોમાં પશ્ચિમી વાયરાએ પગપેસારો નથી કર્યો તે સિદ્ધિતપના ભુલકાઓ સહિત તપસ્વીરત્નોએ પુરવાર કરી દીધું છે. ૧૯૬ ઉપવાસ, ૪૯ બિયાસણ કુલ ૨૪૫ દિવસના શ્રી મહાભદ્ર તપની આરાધના કરી થરાદ નિવાસી મુંબઈ સ્થિથ તપસ્વીરત્ના શ્રીમતી શિલ્પાબેન નવીનકુમાર અદાણીએ થરાદનગરને અદકેરૂં ગૌરવ બક્ષવા સાથે સાથે અનુમોદનીય આશ્ચર્ય જન્માવ્યું છે. ઉક્ત સમસ્ત તપસ્વીરત્નોની અનુમોદનાર્થે ફુલ નહીં તો ફૂલની પાંખડી સ્વરૂપ નાનો નિયમ ગ્રહણ કરૂં છું. નિયમમાં ગુજરાતી ભોજન સિવાય આજીવન હોટલનું જમણ લેવાનો **ત્યાગ**.... આજીવન આઈસ્ક્રીમ-કુલ્ફીનો **ત્યાગ**...

મારા પ્રાણથી પ્યારા સાધર્મિક બંધુ પરિવારો કે જૈન ધર્મ તથા અન્ય ધર્મોમાં પણ બ્રહ્મચર્ય પાલનનું મહત્વ બતાવાયું છે. વર્તમાન સમયમાં ૫૦ વર્ષની

આવરદા વટાવી ચૂકેલા યુગલો પૂર્ણપણે બ્રહ્મચર્યનું પાલન ચોક્કસપણે કરતા હશે, પરંતુ શરમ-સંકોચના કારણે જાહેરમાં વિધિપૂર્વક ચોથાવ્રતની બાધા લઈ શકતા નથી. સ્વયં હું આ અનુભવ કરી ચૂક્યો હતો. મારા સંસારી (ભાણી) પૂ. સાધ્વીજીશ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા., પૂ. સાધ્વીજીશ્રી પદ્મરેખાશ્રીજી મ.સા.એ સન-૨૦૧૫માં દીક્ષા અંગિકાર કરી ત્યારે મારી ધર્મપત્નિ સાથે વિચારણા કરી મનોમન આજીવન બ્રહ્મચર્ય (ચોથાવ્રત) પાળવાનો નિર્ધાર કર્યો હતો અને આ અંગે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યશ્રી પાસે પચ્ચખાણ લઈ પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી શરમ સંકોચને છોડી ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની નિશ્રામાં નડિયાદ સંકળ સંઘની ઉપસ્થિતિમાં ચોથા વ્રતનો નિયમ ગ્રહણ કર્યો હતો. તપોનિષ્ઠ યોગીન્દ્રાચાર્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. સમાજને એટલું પુણ્ય અર્પિત કરી ગયા છે કે, તેમના પુણ્યબળે પાંચ-સાત-દશ-પંદર વર્ષના ભૂલકાઓ પણ સિદ્ધિતપની ભીષ્મ તપારાધના સુખ-શાતાપૂર્વક કરવામાં અત્યંત સફળ રહ્યા છે. આ તપોબળમાં બ્રહ્મચર્યનું તેજ ભળે તો દરેક સંઘોની પુણ્યાઈ છે તેના કરતાં અધિક તેજસ્વી બની જાય તે માટે પૂજ્ય શ્રમણ-શ્રમણીની પ્રેરણાથી ચોથાવ્રતની બાધાનું સામુહિકપણે આયોજન કરાય તો ઉક્ત નિયમોના ઇચ્છુકો શરમ-સંકોચ છોડી ચોક્કસપણે નિયમ ગ્રહણ કરી સફળતા અપાવશે. **શાશ્વત ધર્મ – ગુર્જર જૈન જ્યોત, સુરેશ સંઘવી પરિવાર, બી-૧૭૧, ગગનવિહાર સોસાયટી, ખાનપુર, અમદાવાદ. મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯**

સ્વર્ગારોહણ શતાબ્દી વર્ષ

દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના
પ્રથમ શિષ્યરત્ન અને પ્રથમ પટ્ટધર
સરળ સ્વભાવી ગુરૂ સમર્પિત
શાસન પ્રભાવક હાજર જવાબી ચર્ચા ચક્રવર્તી

આચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય ધનચંદ સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના
ચરણોમાં વંદન.

ગુરૂ જન્મભૂમિ અમારી તીર્થભૂમિ

શ્રીપેપરાલ તીર્થે શ્રી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ ઉપધાન

શ્રમણ જીવનનો ટેસ્ટ એટલે ઉપધાન

શ્રી પેપરાલ તીર્થે ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્ વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ વિશાળ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી નિશ્રામાં શ્રી જયંતસેન પ્રભાવક ટ્રસ્ટ પેપરાલના તત્વાધાનમાં વોહેરા બબીબેન રાજમલભાઇ બાદરમલભાઇ પરિવાર દ્વારા સંવત ૨૦૭૮ના માગશર સુદ ૩ સોમવાર તા. ૬-૧૨-૨૦૨૧ના રોજથી શ્રી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ ઉપધાન શરુ થઇ રહ્યા છે.

શ્રી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ ઉપધાન તપનો પ્રવેશ

પ્રથમ પ્રવેશ :
સંવત ૨૦૭૮ના માગશર સુદ ૩ ને સોમવાર તા. ૬-૧૨-૨૦૨૧

દ્વિતીય પ્રવેશ :
સંવત ૨૦૭૮ના માગશર સુદ ૫ ને બુધવાર તા. ૮-૧૨-૨૦૨૧

મોક્ષ માળા રોપણ :
સંવત ૨૦૭૮ના પોષ વદ - ૪ ને શનિવાર તા. ૨૨-૧-૨૦૨૨

સ્થળ : ગુરૂજન્મભૂમિ અમારી તીર્થભૂમિ શ્રી પેપરાલતીર્થ.

આવતા અંકે...

* જાવરાનગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન માલવમણી વયોવૃદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સરલ સ્વભાવી વચનસિદ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા.ની નિશ્રામાં યોજાયેલા ચાતુર્માસ આરાધનાનો વિસ્તૃત અહેવાલ.
* ખાનપુર અમદાવાદ નગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા.ની નિશ્રામાં યોજાયેલ "માતૃપિતૃ વંદના" કાર્યક્રમ અને ચૈત્ય પરીપાટીનો વિસ્તૃત અહેવાલ
* નયાપુરા ઉજ્જૈનનગરે બિરાજમાન પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી વિધ્વદગુણાશ્રીજી મ.સા.ની નિશ્રામાં યોજાયેલ અષ્ટાન્હિકા મહોત્સવનો અહેવાલ

(ભાયંદર) મુંબઈ નગરે વિનયીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અનંતદૃષ્ટાશ્રીજી મ.સા., સરસ્વતીરત્ના પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની સુપાવન નિશ્રામાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતા ઉત્સાહની એક ઝલક...

શ્રી સિદ્ધિતપ તપસ્વી : ભાયંદર-મીરા રોડ

૧. મેઘાબેન રસિકભાઈ વોરા
૨. હેત રસિકભાઈ વોરા
૩. ધન્ય રસિકભાઈ વોરા
૪. રૂચિ જેનીસભાઈ વોરા
૫. વિહાન જેનીસભાઈ વોરા
૬. ધ્યાના જેનીસભાઈ વોરા
૭. નિરાલી સમીરભાઈ સંઘવી
૮. ચૈત્ય સમીરભાઈ સંઘવી
૯. તેજ સમીરભાઈ સંઘવી
૧૦. જય રજનીભાઈ સંઘવી
૧૧. રીયા જયભાઈ સંઘવી
૧૨. પ્રિંસી વિરાજભાઈ વોરા
૧૩. સમીરભાઈ જયંતિલાલ બલુ
૧૪. હિરલબેન સમીરભાઈ બલુ
૧૫. ક્રિશી સમીરભાઈ બલુ
૧૬. ધ્રુવ સમીરભાઈ બલુ
૧૭. મુકેશભાઈ નાનાલાલ ભણસાલી
૧૮. કામીની મુકેશભાઈ ભણસાલી
૧૯. યાશી મુકેશભાઈ ભણસાલી
૨૦. સૃષ્ટિ ભરતભાઈ દોશી
૨૧. સ્વીટી મેહુલભાઈ અદાણી
૨૨. મોંઘીબેન મહાસુખલાલ અદાણી
૨૩. પ્રકાશભાઈ અમુલખભાઈ બલુ
૨૪. અલકાબેન પ્રકાશભાઈ બલુ
૨૫. રિમ્પલબેન રાકેશભાઈ સવાણી
૨૬. કીર્તિલાલ બાબુલાલ વોરા
૨૭. સોનલબેન અંકુરભાઈ વોહેરા
૨૮. સિદ્ધિ વિશાલભાઈ દોશી
૨૯. ચૈત્ય વિશાલભાઈ દોશી
૩૦. વૃષા રોહિતભાઈ મોરખીયા
૩૧. સોનલ જગદીશભાઈ દેસાઈ
૩૨. વિધિ જગદીશભાઈ દેસાઈ
૩૩. રીશી જગદીશભાઈ દેસાઈ
૩૪. રૂચિ જગદીશભાઈ દેસાઈ
૩૫. વીરાંશી મિતેષભાઈ વોરા
૩૬. કેયુર મિતેષભાઈ વોરા
૩૭. પ્રિતીબેન રોહિતભાઈ પરીખ
૩૮. બીનાબેન નિતેશભાઈ પરીખ
૩૯. વિહાન અંકિતભાઈ દોશી
૪૦. ટ્વિંકલ અંકિતભાઈ દોશી
૪૧. દ્રિશ્વી વિશાલભાઈ દેસાઈ
૪૨. ઝીઆના વિશાલભાઈ દેસાઈ
૪૩. તેજ મહેશભાઈ વોરા
૪૪. ખુશી મહેશભાઈ વોરા
૪૫. સોનમ વિશાલભાઈ દેસાઈ
૪૬. સુપન વિનીતભાઈ બલુ
૪૭. ખુશી વિજયભાઈ સંઘવી
૪૮. મોક્ષી વિજયભાઈ સંઘવી
૪૯. અંકિતાબેન પી. દેસાઈ
૫૦. પ્રવિણાબેન વી. સંઘવી
૫૧. સોનલબેન એસ. દોશી
૫૨. માનવી એસ. દોશી
૫૩. પલ એમ. દોશી
૫૪. ભાવનાબેન એમ. દોશી
૫૫. યશ્વી વી. દેસાઈ
૫૬. વર્ષાબેન ચંપકલાલ સવાણી
૫૭. ધવલ ચિરાગભાઈ વોરા
૫૮. બેલાબેન ભણસાલી

૫૯. જેનીશ ભણસાલી
૬૦. પીનાબેન ભણસાલી
૬૧. શ્રેયા ભણસાલી
૬૨. પાયલ પરેશભાઈ દેસાઈ
૬૩. ચાર્મી પરેશભાઈ દેસાઈ
૬૪. જીયા હિતેશભાઈ દેસાઈ
૬૫. ખુશી ભરતભાઈ શેઠ
૬૬. પંક્તિ રાજેન્દ્રભાઈ શેઠ
૬૭. સાન્વી બિરેન અદાણી
૬૮. ધ્વનિ મહેન્દ્રભાઈ શાહ
૬૯. ક્રિશ્વી નિતેશભાઈ પરીખ
૭૦. મિત્તલ તુષાર પારેખ
૭૧. મનીષા એ. સુખડીયા
૭૨. પ્રાચી એ. સુખડીયા
૭૩. વિશ્વા મુકેશભાઈ મોરખીયા
૭૪. શિલ્પા મુકેશભાઈ મોરખીયા
૭૫. પ્રાચી અલ્પેશભાઈ વોરા
૭૬. પ્રેક્ષા અલ્પેશભાઈ વોરા
૭૭. લબ્ધી વિજય વેદલીયા
૭૮. હર્ષવી રાજુભાઈ વોહેરા
૭૯. વૃષ્ટિ દિનેશભાઈ દોશી
૮૦. સોહિલ ભરતભાઈ વોહેરા
૮૧. વિરતી સોહિલ વોહેરા
૮૨. નેમિ સુધીરભાઈ માજની
૮૩. દેવક મૌલિક દેસાઈ
૮૪. આગમ ચંપકલાલ સવાણી
૮૫. વિરાજ પરેશભાઈ વોહેરા
૮૬. શિલ્પાબેન દિલીપભાઈ વોરા
૮૭. આર્ચી દિલીપભાઈ વોરા
૮૮. હેત્વી નરેન્દ્રભાઈ સંઘવી
૮૯. કેરવી નરેન્દ્રભાઈ સંઘવી
૯૦. વિરતી ભાગ્યવાનભાઈ સંઘવી
૯૧. અલકાબેન નરેશભાઈ સંઘવી
૯૨. સરજુ આતિષભાઈ વોરા
૯૩. બિજલ સચીનભાઈ વોરા
૯૪. ક્રિનાલી સુકેનભાઈ વોરા
૯૫. સિલ્કી જિગ્નેશભાઈ વોરા
૯૬. કમલેશભાઈ જયંતિલાલ વોરા
૯૭. લબ્ધિ કમલેશભાઈ વોરા
૯૮. પર્વ વિજયભાઈ વેદલીયા
૯૯. આંગી પિનલભાઈ દેસાઈ
૧૦૦. કામીની શ્રેણિકભાઈ દોશી
૧૦૧. નમ્યા શ્રેણિકભાઈ દોશી
૧૦૨. પૂર્વી પ્રિતેશભાઈ મોરખીયા
૧૦૩. હેમ પ્રિતેશભાઈ મોરખીયા
૧૦૪. દેવ દિવ્યાંગભાઈ અદાણી
૧૦૫. ધ્રુવી કિશોરભાઈ દેસાઈ
૧૦૬. સાક્ષી સુજલ મોરખીયા
૧૦૭. રાજવી મોનિલ દેસાઈ
૧૦૮. ક્રિયા ભૂપેન્દ્રભઈ દેસાઈ
૧૦૯. ધ્રુવી ધ્રુમલભાઈ અદાણી
૧૧૦. યશ્વી ધ્રુમલભાઈ અદાણી
૧૧૧. જિનશી યશ વિરવાડીયા
૧૧૨. પ્રકાશભાઈ શાંતિલાલ દોશી
૧૧૩. કાજલ જયેશભાઈ દોશી
૧૧૪. પાયલ વિજય સંઘવી
૧૧૫. હાવી રીધમ ભણસાલી
૧૧૬. ચેતનાબેન સુરેશભાઈ દોશી
૧૧૭. મુલ્યા વિપુલભાઈ વોરા
૧૧૮. સોનલબેન મેહુલભાઈ વોહેરા
૧૧૯. મેહુલ પ્રવિણભાઈ વોહેરા
૧૨૦. ભવ્ય ધવલભાઈ વોરા
૧૨૧. જશ ધર્મેશભાઈ સંઘવી
૧૨૨. નિવા માનવભાઈ સંઘવી
૧૨૩. માનવ વિનોદભાઈ સંઘવી
૧૨૪. યશ્વી અમિતભાઈ દોશી
૧૨૫. બિનાબેન પંકજભાઈ સંઘવી
૧૨૬. મિત પંકજભાઈ સંઘવી
૧૨૭. પ્રિયંકા જિનપાલ દેસાઈ
૧૨૮. નેહી જિનપાલ દેસાઈ
૧૨૯. આંશી સ્વીટિશ દોશી
૧૩૦. સ્વયં સ્વીટિશ દોશી
૧૩૧. શિતલબેન વિપુલભાઈ દોશી
૧૩૨. પાશ્વી વિપુલભાઈ દોશી

૧૩૩. હીયા પીન્ટેશભાઈ પરીખ
૧૩૪. ભારતીબેન અશોકભાઈ દોશી
૧૩૫. ક્રિશી ભાવિનભાઈ વોરા
૧૩૬. રાજ ભાવિનભાઈ વોરા
૧૩૭. શ્રીની હાર્દિકભાઈ મોરખીયા
૧૩૮. શિલ્પાબેન અમિતભાઈ સંઘવી
૧૩૯. કાવ્યા કુલદીપભાઈ બલુ
૧૪૦. ઋષભ કુલદીપભાઈ બલુ
૧૪૧. દિવીજા દોશી
૧૪૨. જીયા પ્રિયાંક મોરખીયા
૧૪૩. સીમોની પ્રતિકભાઈ વોરા
૧૪૪. કલશ રિપલભાઈ અદાણી
૧૪૫. વર્ષાબેન પ્રકાશભાઈ અદાણી
૧૪૬. હિલ સતીષભાઈ સંઘવી
૧૪૭. માહી નિલેશકુમાર દોશી
૧૪૮. આરતીબેન મહેશભાઈ વોરા
૧૪૯. મિતિ અમિતભાઈ દોશી
૧૫૦. હંસાબેન નટુભાઈ વોહેરા
૧૫૧. નીર કૌશિકભાઈ દોશી
૧૫૨. પાયલ ભરતભાઈ મહેતા
૧૫૩. હસુબેન રમેશભાઈ જૈન
૧૫૪. આશા સુરેશભાઈ પરીખ
૧૫૫. પિન્કી પ્રિયાંકભાઈ શેઠ
૧૫૬. સોનાલી સંજયભાઈ વોહેરા
૧૫૭. વિશ્વા કૃણાલભાઈ બલુ
૧૫૮. આશ્વી નિલેશભાઈ મોરખીયા
૧૫૯. જયશ્રીબેન શ્રીપાલભાઈ દોશી
૧૬૦. પાર્થ પ્રવિણભાઈ દેસાઈ
૧૬૧. હેત્વી ચેતનભાઈ વોરા
૧૬૨. યશ્વી ધર્મેશભાઈ વોરા
૧૬૩. મનીષ પુનમચંદ્રભાઈ મોદી
૧૬૪. કાજલ નિલેશભાઈ દોશી
૧૬૫. આર્યા નિલેશભાઈ દોશી
૧૬૬. ધન્ય નિલેશભાઈ દોશી
૧૬૭. ચંદ્રીકાબેન ધીરજભાઈ દેસાઈ
૧૬૮. દિયા રોહિતભાઈ પરીખ
૧૬૯. જિગ્નેશ ચંદુલાલ વોહેરા
૧૭૦. સુરેખાબેન ભરતભાઈ વોરા
૧૭૧. સોનલ બિપીનભાઈ મોદી
૧૭૨. જીયા બિપીનભાઈ મોદી
૧૭૩. વર્ષાબેન બિપીનભાઈ સંઘવી
૧૭૪. સ્વીટી મૌલિકભાઈ દેસાઈ
૧૭૫. કેવીન ભરતભાઈ સંઘવી
૧૭૬. કિરણભાઈ સેવંતીલાલ પારેખ
૧૭૭. સ્વીટિશ સેવંતીલાલ દોશી
૧૭૮. પિન્ટેશ એસ. પરીખ
૧૭૯. મિલાપ એમ. દોશી
૧૮૦. રિદ્ધિ એ. દોશી
૧૮૧. પીના એમ. દોશી
૧૮૨. ભાવિન વોરા
૧૮૩. નિકુંજ સંઘવી
૧૮૪. બ્રિજેશ સી. વોરા
૧૮૫. ધ્રુવી દિલીપભાઈ મોરખીયા
૧૮૬. શ્રેયા દિલીપભાઈ મોરખીયા
૧૮૭. ખુશ દિલીપભાઈ મોરખીયા
૧૮૮. ભવ્ય સી. વોહેરા
૧૮૯. સ્તુતિ ભૂપેન્દ્રભાઈ વોહેરા
૧૯૦. દિપીકાબેન ચંદ્રકાન્તભાઈ વોહેરા
૧૯૧. મૈત્રી ભૂપેન્દ્રભાઈ વોહેરા
૧૯૨. દેવ ભૂપેન્દ્રભાઈ વોહેરા
૧૯૩. વિહાન પ્રશાંતભાઈ મોરખીયા
૧૯૪. દ્વિપ અમિતભાઈ વોરા
૧૯૫. આંગી નિલેશભાઈ મહેતા
૧૯૬. યશ્વી અમિતભાઈ મોદી
૧૯૭. ક્રિશા અમિતભાઈ મોદી
૧૯૮. ધ્યાનિબેન તેજસભાઈ વોરા
૧૯૯. અલકાબેન દિપકભાઈ ભણસાલી
૨૦૦. આરૂષ કૃણાલભાઈ વોરા
૨૦૧. કૃપાલી કૃણાલભાઈ વોરા
૨૦૨. પ્રેમિલાબેન ગૌતમભાઈ મહેતા
૨૦૩. દર્શના ઉત્કર્ષભાઈ શાહ
૨૦૪. સાર્થક રીધમભાઈ ભણસાલી
૨૦૫. જીયા ચંદ્રેશભાઈ શેઠ
૨૦૬. ભાવિક અશોકભાઈ વોરા

૨૦૭. વૈભવી જીનલભાઈ સંઘવી
૨૦૮. જીયા મૌલિકભાઈ દેસાઈ
૨૦૯. નરેન્દ્રભાઈ પૂનમચંદ અદાણી
૨૧૦. ડિમ્પલ વિરલભાઈ અદાણી
૨૧૧. પ્રવિણભાઈ રમણલાલ દેસાઈ
૨૧૨. અંશુ કૌશિકભાઈ દોશી
૨૧૩. ધર્મેશ વિનોદભાઈ સંઘવી
૨૧૪. સાનવી માનવભાઈ સંઘવી
૨૧૫. નટુભાઈ ગગલદાસ વોહેરા
૨૧૬. યોગેશ વાડીલાલ વોહેરા
૨૧૭. ઉજાલી યોગેશભાઈ વોહેરા
૨૧૮. સુનિલભાઈ ચમનલાલ સંઘવી
૨૧૯. સેજલબેન સુનિલભાઈ સંઘવી
૨૨૦. મોક્ષી પિનલભાઈ દેસાઈ
૨૨૧. અર્પિત ગિરીશભાઈ શેઠ
૨૨૨. શિતલ હર્ષિતભાઈ શેઠ
૨૨૩. હાર્દિક ભરતભાઈ અદાણી
૨૨૪. આતિશ પ્રકાશભાઈ વોરા
૨૨૫. અર્પિત શૈલેષભાઈ અદાણી
૨૨૬. ગીતાબેન બિપીનભાઈ બલુ
૨૨૭. વર્ષાબેન પરેશભાઈ વોહેરા
૨૨૮. કામિનીબેન ભાવિનભાઈ વોરા
૨૨૯. ખુશી પ્રકાશભાઈ અદાણી
૨૩૦. હાર્દિક બી. ભણસાળી
૨૩૧. સોનુ સંજયભાઈ વોરા
૨૩૨. મનય હિતેશભાઈ દોશી
૨૩૩. ધ્રુમિલ વિજયભાઈ વોરા
૨૩૪. પાયલ અંકુરભાઈ દેસાઈ
૨૩૫. જૈના વિક્રમભાઈ વોરા
૨૩૬. પિનલ દિપકભાઈ મોદી
૨૩૭. પિન્કી મનીષભાઈ મોદી
૨૩૮. ક્રિમી હાર્દિકભાઈ મોરખીયા
૨૩૯. વીણાબેન નરેન્દ્રભાઈ સંઘવી
૨૪૦. ખુશી તૃષારભાઈ પારેખ
૨૪૧. પાયલબેન વિજયભાઈ મોરખીયા
૨૪૨. દિયા વિજયભાઈ મોરખીયા
૨૪૩. આંશી વિજયભાઈ મોરખીયા
૨૪૪. હેની વિજયભાઈ અદાણી
૨૪૫. દર્શી વિપુલભાઈ દોશી
૨૪૬. સંકેત વિક્રમભાઈ દોશી
૨૪૭. દક્ષા અજયભાઈ દોશી
૨૪૮. પારુલબેન બિપીનભાઈ અદાણી
૨૪૯. મન નિમેષભાઈ અદાણી
૨૫૦. મોક્ષ મિતુલભાઈ બલ્લુ
૨૫૧. વૃશી આતિસ વોરા
૨૫૨. સિદ્ધ ભરતભાઈ દોશી
૨૫૩. હિત જિગ્નેશ દોશી
૨૫૪. ધ્યાનિ દિલીપ દોશી
૨૫૫. વંશીકા સમીરભાઈ શેઠ
૨૫૬. આરવ સમીરભાઈ શેઠ
૨૫૭. રિશ્વી નિલેશભાઈ સંઘવી
૨૫૮. રીયા ભૂપેન્દ્રભાઈ દોશી
૨૫૯. પરેશ ભીખાલાલ વેદલીયા
૨૬૦. વંશ અંકિતભાઈ સંઘવી
૨૬૧. જાનવીબેન તેજસભાઈ વોરા
૨૬૨. જીયાન પારસભાઈ વોરા
૨૬૩. શકુંતલાબેન એ. ગાંધી
૨૬૪. ડિમ્પલબેન અભિષેકભાઈ ગાંધી
૨૬૫. નિવી અભિષેકભાઈ ગાંધી
૨૬૬. વિહા અભિષેકભાઈ ગાંધી
૨૬૭. કિંજલ ડિકેન વોહેરા
૨૬૮. ત્યાગી વિક્રમભાઈ અદાણી
૨૬૯. રંજનબેન વિનોદભાઈ મહેતા
૨૭૦. હિર દિલીપભાઈ બલ્લુ
૨૭૧. જયેશભાઈ મફતલાલ દેસાઈ
૨૭૨. લતાબેન વિનોદભાઈ પરીખ
૨૭૩. પરી રંકિન પરીખ
૨૭૪. દિપિકા વિપુલ વોરા
૨૭૫. વિરાજ જયેશ દેસાઈ
૨૭૬. કરણ વિપુલ વોરા
૨૭૭. પ્રતિક રમેશ વોરા
૨૭૮. જૈનમ વિજય દોશી
૨૭૯. આર્ય ધવલ વોરા

कुमकुम सने पगलिये

कुसंग जहर है, इससे कोसों दूर रहें

जालोर चातुर्मास में गच्छाधिपतिजी का प्रभावशाली प्रवचन

जालोर (राज.) के बड़ा न्याती नोहरा में त्रिस्तुतिक श्री जैन संघ के तत्वावधान में गच्छाधिपति आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का चातुर्मास चल रहा है। आचार्यश्री ने कहा कि कुसंग एक जहर है, कुसंग से हमें कोसों दूर रहना चाहिए। संपूर्ण बेहोशी अर्थात् मोह और मोह अर्थात् जहर। कुसंग का प्रभाव मन पर होता है, बुद्धि, चित्त, अहंकार पर होता है और इस प्रकार पूरे शरीर पर होता है। मुनिश्री डॉ. संयमरत्न विजयजी ने कहा कि फुटबाल में जब तक हवा भरी रहती है, तब तक ठोकरें खाती है।

हवा निकल जाये तो फिर उसे कोई नहीं छेड़ता, कोई नहीं ठोंकता। आदमी में से भी यदि अहंकार की हवा निकल जाए तो जिंदगी के सारे दुःख-दर्द, पीड़ाएं और संघर्ष आज अभी और इसी वक्त खत्म हो जाएं। जीवन और जगत में व्याप्त तमाम संघर्षों और तनावों की वजह आदमी का अहम और वहम है। इस अहम और वहम ने स्वर्ग जैसे जीवन में कई जख्म पैदा कर दिये हैं। मुनिश्री डॉ. संयमरत्न विजयजी की

42 वीं वर्धमान तप ओली के पारणा का लाभ भावेश कुमार शांतिलालजी, अशोकजी सोलंकी परिवार ने प्राप्त किया। सोलंकी परिवार ने गच्छाधिपति आचार्यश्री का स्वागत गहुंली सजाकर किया। मुनिश्री डॉ. संयमरत्न विजयजी ने चातुर्मास में पर्व पर्युषण के दौरान सामूहिक 108 अट्ठाई करने की प्रेरणा श्रद्धालुओं को दी। पर्युषण पर्व आराधना प्रारंभ होने से पूर्व आध्यात्मिक तैयारी हेतु चातुर्मास में विराजित सभी मुनिवृंदों ने केशलोच किया। जिस प्रक्रिया में जैन मुनि छः महीने में एक बार स्वयं अपने हाथों से बालों को उखाड़ कर फेंक देते हैं। केशलोचन के साथ ही क्लेश लोचन भी होता है और सहनशीलता में अभिवृद्धि होती है। एक बार

केशलोच कराने से छः मासक्षमण का लाभ प्राप्त होता है। स्वामी भक्ति के लाभार्थी मीडिया प्रभारी नेमिचंद पारख ने यह जानकारी दी।

पूर्ण प्रेमभाव प्रकट होने पर अन्य की गलतियाँ दिखाई नहीं देतीं

जालोर (राज.) के बड़ा न्याती नोहरा में त्रिस्तुतिक श्री जैन संघ के तत्वावधान में आयोजित धर्मसभा में आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी म. ने कहा कि जैसे मीठा ही मीठा खाएं, तो खाते-खाते इंसान ऊब जाता है, इसलिए मीठे के साथ थोड़ा नमकीन भी जरूरी है। वैसे ही सुख के बीच में थोड़ा दुःख भी जरूरी है। दुःख मनुष्य के ही कृत-कर्मों का फल है। मुनि श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी ने कहा कि वात्सल्य भाव आने पर अपराधी को क्षमा-प्रदान करने का मन होता है, मैत्री भाव आने पर दूसरों की भूल को सहन करना सहज बन जाता है। लेकिन पूर्ण प्रेमभाव प्रकट होने पर तो अन्य की गलतियाँ ही दिखाई नहीं देतीं। अपने जीवनसाथी की भूलों को देखना यही सबसे बड़ी खामी है। काँटे देखने वालों को जिस तरह गुलाब की सुवास नहीं मिलती, ठीक उसी तरह अन्य की भूल देखने वाला कभी भी अन्य के प्रेम को प्राप्त नहीं कर सकता। जो रोकर भोगता है, वह अज्ञानी है और जो हँसकर भोगता है, वह ज्ञानी है। इस

मौके पर रविवार को आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी की शुभाज्ञा से जालोर में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद का गठन प्रांतीय पदाधिकारीगण अध्यक्ष-निशा वनवट, महामंत्री-पुष्पा कोचर, कोषाध्यक्ष-अनीता सर्राफ, सहमंत्री जूली गोलेचा एवं प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य कुसुमजी भाबरा, नीलु जैन आदि के सहयोग से किया गया। गुरुदेवश्री ने वासक्षेप करके आशीर्वाद प्रदान किया एवं महिला परिषद् द्वारा अंजूजी वेदमुथा को अध्यक्ष घोषित कर उनका बहुमान, स्वागत अभिनंदन किया। इस मौके पर आणंद, भाभरा आदि श्रीसंघों का आगमन हुआ।

डॉ. संयमरत्नविजयजी म. लिखित शोधग्रंथ का विमोचन

जालोर (राज.) के बड़ा न्याती नोहरा में त्रिस्तुतिक श्री जैन संघ के तत्वावधान में आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी के पट्टधर गच्छाधिपति आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी आदि विशाल श्रमण - श्रमणीवृंद के चातुर्मास के अंतर्गत 5 सितम्बर

शिक्षक दिवस के शुभ दिन मुनि श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी द्वारा 'जैन दर्शन में पूजा का स्वरूप एवं आध्यात्मिक महत्व ' नामक पी.एच.डी. शोध ग्रंथ का विमोचन सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री ने कहा कि परमात्मा के दर्शन करते समय स्वयं के जीवन का दर्शन होना चाहिए। परमात्मा की प्रतिमा को यदि आध्यात्मिक भावों से देखा जाये तो वह प्रतिमा नहीं, बल्कि साक्षात परमात्मा के रूप में दिखायी देगी। मुनिश्री संयमरत्न विजयजी ने पी.एच.डी. करके मेरे और युग प्रभावक गुरुदेव श्री के स्वप्न को साकार किया है, जो साधुवाद के पात्र हैं। मुनिश्री डॉ. संयमरत्नविजयजी ने अपने अध्ययनकाल के क्रम का वर्णन करते हुए कहा कि यह सब देव-गुरु की कृपा के बिना संभव नहीं। दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी, युगप्रभावकाचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी व वर्तमान गच्छाधिपति आचार्यश्री की असीम कृपा से यह शोधकार्य निर्विघ्न सम्पन्न हुआ है। मुनिश्री ने कहा कि पूजा का उद्देश्य आत्मा के शुद्ध स्वरूप का बोध करना है। पूजनीय के गुणों को आत्मसात् करते हुए उनके प्रति समर्पित होकर जीवन जीना ही पूजा का मुख्य उद्देश्य है। पूजा में पू हमें 'पूर्ण' एवं 'जा' हमें 'जागृत' रहने की प्रेरणा देता है।

पूर्ण जागृत अवस्था को प्राप्त करना ही वास्तविक पूजा है। पाली के पूर्व सांसद

पुष्पजी जैन ने गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरिजी के स्नेह को याद करते हुए मुनिश्री डॉ. संयमरत्न विजयजी के पीएच.डी. शोध ग्रंथ के विषय में ओजस्वी उद्बोधन देते हुए कहा कि मूर्ति को हमने प्रतीकात्मक रूप से स्वीकार किया है। हम महावीर को मानते हैं, पर महावीर की नहीं मानते। प्रतिमा में ऊर्जा होती है। जिसे हम दर्शन-पूजन के माध्यम से स्वीकार करते हैं। जब हम परमात्मा के दर्शन करने जाएं तो आँखें खुली रखना चाहिए। पूजा संबंधी अद्भुत 500 पृष्ठीय ग्रंथ का लेखन करके मुनिश्री ने जगत जीवों के लिए बड़ा ही उपकार किया है। पुष्पजी जैन ने 'जैन दर्शन में पूजा का स्वरूप एवं आध्यात्मिक महत्व' नामक पी.एच.डी. शोध ग्रंथ को संसद भवन के ग्रंथालय एवं राष्ट्रपति भवन में स्थापित करने की बात कही। पुरुषोत्तमजी भंडारी ने मुनिश्री के शोधग्रंथ के विषय का परिचय देते हुए कहा कि इस कृति को जो भी पढ़ेगा उसे परमात्मा की निकटता का अनुभव होगा। पूजा संबंधी सभी

समस्याओं का निराकरण व जिज्ञासाओं का समाधान इस शोध ग्रंथ में हमें प्राप्त होगा। त्रिस्तुतिक समुदाय में ये प्रथम मुनि हैं जिन्होंने पी.एच.डी. का अध्ययन किया है, जो समस्त श्री संघ के लिए बड़े ही गौरव की बात है। मुनिश्री विद्वद्रत्नविजयजी ने कहा कि षड्दर्शन में जैन दर्शन आत्म उद्धारक दर्शन है। 14 वर्ष के वनवास की साधना के पश्चात् श्री राम को राज्य सिंहासन मिला। 14 वर्ष के अथक प्रयास से दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी ने अभिधान राजेन्द्रकोष की रचना की, उसी कड़ी में मुनि श्री डॉ. संयमरत्न विजयजी ने 14 वर्षों की मेहनत में पूजा के ऊपर शोध ग्रंथ निर्मित किया, जो अनुमोदनीय है। श्रीसंघ के मीडिया प्रभारी नेमिचंद पारख ने बताया कि मुनिश्री डॉ. संयमरत्न विजय द्वारा आलेखित 'जैन दर्शन में पूजा का स्वरूप एवं आध्यात्मिक महत्व' नामक ग्रंथ का विमोचन पूर्व लोकसभा सांसद श्री पुष्पजी जैन व श्री संघ के अध्यक्ष रमेशचन्द भंडारी व ट्रस्टीगण, भेरूलाल सेठ, पुरुषोत्तम भंडारी, अशोक गणपतचन्द सोलंकी, ओटमल कामदार द्वारा किया गया।

पाटण में पुण्य सम्राट की पुण्य तिथि मनाई गईं

पाटण। गुरु तत्व प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में व्याप्त होता है। लौकिक ज्ञान से लेकर आध्यात्मिकता ज्ञान तक, जन्म से लेकर मृत्यु तक गुरु तत्व की उपस्थिति बनी रहती है। गुरु के आगमन से शिष्य के जीवन में वैचारिक परिवर्तन होता है। शिष्य की मनोदशा बदलती है। यह सब गुरु के अनुग्रह से संभव हो पाता है। स्वयं तप चुके गुरु ही, शिष्य को तपा सकता है यानी उसमें जाग्रति ला सकता है। सद्गुरु ही अपने शिष्य को परमात्मा की अनुभूति करा सकता है। तभी तो भारतीय धर्म-दर्शन में सद्गुरु की महिमा का उल्लेख किया गया है। उक्त बात मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज ने गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा की 52 वीं पुण्यतिथि प्रसंगे उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कही।

पुण्यतिथि को लेकर जैनाचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्य मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज, मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी महाराज आदि ठाणा 34 की पावन निश्रा में श्री त्रिस्तुतिक श्रीसंघ पाटण की ओर से अनेक धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें नगर के प्रमुख पंचासरा जिनालय सहित अनेक जिनालयों में परमात्मा की भव्य अंगरचना और जीवदया के कार्यक्रम में पाटण सहित जिले के विभिन्न गांवों में अबोल जानवरों के लिए हरा घास, चारा वितरित किया गया। आयंबिल भवन में आयंबिल तप की तपस्या करवाई गई जिसमें तपस्वियों

का और आयंबिल भवन के सेवार्थी भाई-बहनों का संघपूजन किया गया। त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में पुण्य सम्राट गुरुदेव की आरती की गई। इस प्रसंग पर सीयाणा, चैन्नई, बैंगलोर, गुंटुर विजयवाड़ा एवं सूरत स्थित नवयुवक पधारे। पुण्यसम्राट गुरुदेव की 52 वीं मासिक पुण्य सप्तमी का लाभ राजस्थान जालोर जिले के रेवतड़ा निवासी भेरूलाल हस्तिमलजी हीराणी चैन्नई की स्मृति में सुपुत्र आशीष कुमार हीराणा (ट्रस्ट मेटल, चैन्नई) की ओर से लिया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण के सदस्यों एवं सेवक शुभम राजपूत, संजय भाई मोदी, विनुभाई प्रजापति, विक्रमसिंह चौहान, दिनेश ठाकोर, परेश पटेल का योगदान रहा।

पाटण। नगर में त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में विराजमान मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म. एवं मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी आदि ठाणा 34 की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना उत्साह और उमंग के साथ हुई।

उपाश्रय की सजावट की गई, प्रतिदिन जीवदया सहित अनेक धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए गये। पर्व के प्रारंभ के तीन दिन में मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी महाराज के मुखारविंद से पर्युषण पर्व की महिमा और वार्षिक एवं पर्युषण पर्व पर करने के कर्त्तव्य के बारे में समझाया गया जिसमें प्रत्येक कर्त्तव्य के शास्त्र के पाठ और कर्त्तव्य संबंधित प्राचीन एवं वर्तमान घटनाओं का वर्णन किया गया।

पर्व को लेकर संघ में विभिन्न प्रकार से तप त्याग की आराधना चली।

चातुर्मास हेतु श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी, श्री हर्षदर्शनाश्रीजी श्री विरतिदर्शनाश्रीजी का मंगल प्रवेश

रतलाम । पुण्य सम्राट जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की शिष्या पूज्य श्री महाप्रभाश्रीजी की शिष्या श्री पुण्यदर्शनाश्रीजी, श्री हर्षदर्शनाश्रीजी, श्री विरतिदर्शनाश्रीजी चातुर्मास हेतु रतलाम श्री नीमवाला उपाश्रय में विराजित हैं। चातुर्मास काल के दौरान उपदेश माला ग्रंथ एवं भीमसेन हरिसेन चरित्र का वाचन कर रहे हैं। प्रवचन के दौरान आपने तपस्याओं के लिए प्रेरित किया जिसमें आयम्बिल की लड़ी एवं पौषध भी हो रहे हैं। साथ ही सन्तिकर तप, दस विध यति धर्म तप, अष्ट महासिद्धि तप की शुरुआत के साथ, श्रावकों ने उत्साह पूर्वक अपनी भागीदारी की।

तप के दौरान बियासने की

व्यवस्था चातुर्मास कमेटी द्वारा की जा रही है। इन्हीं तपस्याओं के मध्य पुण्य सम्राट द्वारा प्रेरित नवकार आराधना का आयोजन भी समिति द्वारा किया गया।

नवदिवसीय आराधना काल के मध्य 68 तीर्थ की भावयात्रा, नवकार महामंत्र के नाट्य की सुन्दर प्रस्तुति भी पाठशाला के बच्चों द्वारा की गई। प्रस्तुति के माध्यम से पाठशाला के लिए बच्चों को प्रेरित किया गया। पर्युषण के दौरान पालना सजाओ प्रतियोगिता का आयोजन भी महिला परिषद द्वारा किया गया। तरुण परिषद द्वारा धार्मिक तम्बोला का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। संवत्सरी के अगले दिन श्रीसंघ की ओर से सामूहिक क्षमा याचना का कार्यक्रम आयोजित किया गया साथ ही तीन एवं तीन से अधिक उपवास के तपस्वियों का सामूहिक पारणा का आयोजन किया गया। चातुर्मास ? डॉ. ओ.सी. जैन, प्रभारी सतीश खेड़ावाला, ट्रस्ट मण्डल अध्यक्ष राजेन्द्र लुणावत, सचिव श्री निर्मल कटारिया, पाठशाला संचालक सुरेन्द्र गंग । इत्यादि ने सभी से खमत खामना व्यक्त किया।

मंदसौर तपोभूमि बना, घर-घर तपस्या

मंदसौर । इस वर्ष यहाँ उत्साह तथा उमंग से चल रहे साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी म. ठाणा -3 के चातुर्मास के अंतर्गत प्राचीन नगर मंदसौर (दशपुर) तपोनगर बन गया। चातुर्मास के प्रारंभ दिवस से मासक्षमण की तपश्चर्या प्रारंभ हो गई। एक साथ एक दो दिन के अंतर से तीन श्राविकाओं के मासक्षमण तप प्रारंभ हो गये जो देव-गुरु की कृपा से निर्विघ्न पूर्णता तक पहुंचे। चातुर्मास में प्रतिदिन आयंबिल तथा सांकली तेले की तपश्चर्या बराबर चलती रही। मासक्षमण की तपश्चर्याएं समारोह पूर्वक पूर्ण होने पर अट्ठाई का दौर प्रारंभ किये जाने में साध्वीजी ठाणा 3 जुट गये। एक सौ आठ अट्ठाई के तपस्वी तैयार करने के लिए आपने घर-घर जाकर गुरुभक्तों को अट्ठाई के लिये प्रेरित किया। श्रीसंघ व तरुण परिषद के पदाधिकारी तथा सदस्य भी इस अभियान में सक्रिय हो गये। पर्युषण के प्रथम दिवस कोई दो सौ गुरुभक्त स्त्री-पुरुषों ने उपवास रखा। प्रातः पर्युषण के व्याख्यान, दिन में पूजा, रात्रि में भक्ति हुई। साध्वी श्री डॉ.अमृतरसाश्रीजी म. के प्रभावशाली प्रवचनों का प्रभाव बड़ता गया। अट्ठाई के तपस्वी आगे बढ़ते गये। प्रतिदिन उनके आध्यात्मिक कार्यक्रम हुए जैसे तपस्वियों को बधाना, गुलाबजल प्रक्षेपण, चंदन विलेपन के अतिरिक्त मेहन्दी तथा दूध से पांव प्रक्षालन (तपस्वियों के) आदि। मंदसौर नगर तपोभूमि दिखाई देने

लगा। पूरे नगर में घर- घर इस तपश्चर्या अभियान की चर्चा रही।

प्रथम दिवस अट्ठाइयों के लिये संकल्प सिद्धि कलश अनुष्ठान का आयोजन हुआ। चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री सुधीर लोढ़ा ने गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म. के संदेश का वाचन किया। साध्वीजी श्री निरागरसाश्रीजी म. द्वारा गीत की रचना की गई। पांचवें दिन वीर जन्म वाचन समारोहपूर्वक हुआ। सपनों व पालनाजी का चढ़ावा उत्साहपूर्वक बोले गये। इससे पूर्व विधिवत जाजम मंत्रोच्चार के मध्य बिछाई गई। जन्म वाचन पश्चात् पालनाजी का जुलूस निकाला गया। रात्रि में भक्ति हुई। वाचन के समय छापे लगाये गये। प्रतिदिन श्री अजितनाथजी के जैन मंदिर में आकर्षक अंगरचना की गई। दिनांक 8 सितम्बर को लगभग 141 अट्ठाई तपस्वियों की ओर से साध्वीजी के सान्निध्य में संयुक्त चौवीसी का आयोजन श्री राजेन्द्र विलास में किया गया जिसमें बड़े सभागृह में 141 तपस्वी दो कतारें लगा कर बैठे। तपस्वियों के दर्शन के लिये भारी भीड़ उमड़ पड़ी। नगर के कोई 3 हजार नर-नारी राजेन्द्र विलास की ओर आये। नगर के वृद्धजनों का कथन था कि पिछले सौ वर्षों में भी ऐसी तपस्याओं का उदाहरण नहीं मिलता है। तपस्वियों की खूब-खूब अनुमोदना की गई। संवत्सरी के दिन साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी तथा साध्वी श्री निरागरसाश्रीजी ने बारसा सूत्र का वाचन किया। संवत्सरी प्रतिक्रमण सामूहिक रूप से हुआ। क्षमापना तथा समस्त तपस्वियों के पारणे का संयुक्त आयोजन श्री राजेन्द्र परिणय रिसोर्ट पर मदनलालजी चपरोत परिवार के श्री पारसमल, हरीशकुमार तथा राजेन्द्र चपरोत द्वारा किया गया। कार्यक्रम में म.प्र. के वित्तमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, सांसद श्री सुधीर गुप्ता, विधायक श्री यशपालसिंह सिसौदिया आदि ने भाग लिया। श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, स्थानीय अध्यक्ष श्री गजेन्द्रकुमार हींगड़, परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री राजेन्द्र सुराणा आदि ने बहुमान किया। सभा संचालन श्री धर्मेन्द्र कर्नावट ने किया।

इससे पूर्व भगवान श्री नेमीनाथजी के जन्म कल्याणक उत्सव पर विशाल कार्यक्रम श्री राजेन्द्र परिणय रिसोर्ट पर आयोजित किया गया। साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी ने प्रवचन में नेमीनाथजी के जीवन पर प्रकाश डाला। तरुण परिषद के कार्यकर्ताओं ने गिरनार पर्वत की प्रतिकृति का भी निर्माण किया। इस पर प्रभु नेमीनाथजी की प्रतिमा का पक्षाल श्री नानालालजी सुराणा (विजयजी सुराणा) ने किया। लाभार्थी श्री मदनलालजी चपरोत परिवार की ओर से स्वधर्मीवात्सल्य आयोजित हुआ।

क्षमापना दिवस आयोजन के पश्चात् रविवार को श्री पद्मावती पार्श्वनाथ मंदिर से साध्वी डॉ. अमृतरसाश्रीजी आदि के सान्निध्य में चैत्यप्रवाड़ी निकाली गई। जो श्री अजितनाथ मंदिर व श्री आदिनाथ मंदिर नयापुरा होते हुए श्री नवलखा पार्श्वनाथ पहुंची। यहाँ लाभार्थी श्री मिश्रीलालजी गजेन्द्रकुमार, श्रेयांस कुमार हींगड़ परिवार द्वारा तीन मासखमण, 141 अट्ठाई के तपस्वियों, चार चालू और मासखमण के तथा 11 व 16 उपवास की तपस्वियों का बहुमान किया गया।

विधायक श्री यशपालसिंह सिसौदिया तथा पूर्व मंत्री श्री नरेन्द्र नाहर ने भी भाग लिया। हींगड़ परिवार द्वारा स्वधर्मीवात्सल्य का आयोजन किया गया। संचालन श्री धर्मेन्द्र कर्नावट ने तथा आभार श्री श्रेयांस हींगड़ ने माना। चातुर्मास सफलतापूर्वक चल रहा है।

– सुधीर लोढ़ा

पर्वाधिराज पर्युषण में तप - जप आराधना का मेला लगा
तीन वर्ष की बालिका द्वारा भी अट्ठाई तपस्या पूर्ण की गई

अहमदाबाद। वचनसिद्ध पुण्य सम्राट के वचनों को साकार रूप देते हुए अहमदाबाद के राजनगर एवं अन्य क्षेत्रों में पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी म.सा., पूज्य आचार्यश्री जयरत्नसूरिश्वरजी म.सा. एवं वरिष्ठ गुरुभगवंतों के आशीर्वाद से पूज्य मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी आदि ठाणा तथा मोढ़ेरा, पालड़ी, खानपुर आदि स्थानों पर विराजमान साध्वीजी भगवंतों की निश्रा एवं सदुपदेश से पर्वाधिराज पर्युषण में तप – जप आराधना का मेला लग गया। चारों तरफ से तप सलिला बहकर सौधर्म वृत त्रिस्तुतिक जैन श्वेता. श्रीसंघ द्वारा व निर्धारित स्थल 'सरदार पटेल सेवा सदन मीठाखाली' में एकत्रित हो रही थी। पूज्य मुनिराज जिनागमरत्न विजयजी अपने गुरुभाइयों के साथ पर्व-पर्युषण की आराधना साधना में तल्लीन होकर श्रावकों को क्रिया करवा रहे थे। गुजरात, मालवा, राजस्थान, गोआ सहित अन्य स्थानों से 64 प्रहरी पौषध करने लगभग 144 श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया जिसमें युवावर्ग अधिकाधिक संख्या में था। मोढ़ेरा में पूज्य साध्वीजी भगवंत की निश्रा में श्राविकाएं तप-आराधना में जुड़ीं।

प्रथम दिवस लगभग 1500 से अधिक आराधकों के मध्य अष्ठानिका व्याख्यान की अमियधारा पूज्य मुनिराज श्री जिनागम रत्नविजयजी के मुखारबिंद से झरना आरम्भ हुई ! जीवदया में डीसा

गौशाला हेतु लाखों रुपयों का फण्ड एकत्रित हुआ ! श्रावकों के कर्त्तव्य के दौरान स्वधर्मी भाइयों की स्थिति जिनशासन की सेवा तथा विविध विषयों पर प्रासंगिक एवं मार्मिकता से चित्रण प्रस्तुत किया। इतिहास के पृष्ठों को खंगालते हुए उन्होंने श्रावकों को दायित्वों का बोध कराया। कल्पसूत्र वाचन में एक-एक बिन्दु को महत्वपूर्ण तरीके से समझाया। स्वप्नदर्शन, स्वप्नकाल के माध्यम से जीवन की गहराईयों का चित्रण किया। वह दृश्य बहुत ही अद्‌भुत-अविस्मरणीय एवं अनुमोदनीय था जब मुनिराजश्री ने सभी आराधकों को पच्चक्खान (सामूहिक) के लिए आमंत्रित किया। छोटे-छोटे नन्हें तप आराधकों की बाल चेष्टाएँ रूठना-मचलना- चरवला लेकर दौड़ना इन सभी दृश्यों ने सभी उपस्थितजनों की आँखों में हर्ष की अश्रुधारा बहा दी। पूज्य मुनिभगवंत की प्रेरणा से सैकड़ों श्रावकों ने इन तपस्वियों के अनुमोदनार्थ अनेक संकल्प धारण किये। त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजी भाई, संघ के अग्रणी एवं सक्रिय श्री शशीभाई सहित अनेक प्रमुखों ने अपने-अपने दायित्वों का बखुबी निर्वाह किया। युवा टीम ने वैय्यावच्च का अनुपम लाभ लिया। परिषद के भरतभाई लाडु सहित विभिन्न कार्यकर्ताओं ने एकासना आदि स्थानों पर अपनी सेवाएँ दीं। संवत्सरी पर्व पर सभी ने परस्पर क्षमा याचना की इसके पश्चात पूरे श्रीसंघ का तीन दिवसीय नवकारसी दोनों समय का स्वामीवात्सल्य का आयोजन भी रखा।

परम गुरुभक्त तपस्वीमना शांतिलाल डुंगरवाल नहीं रहे

इंदौर । संवत्सरी का महानपर्व, चौविहार उपवास, पौषध की भावना, बारसा सूत्र का श्रवण, पाना दर्शन, देसावगासिक सामायिक, तीन दिन पूर्व प्रभु महावीर के जन्मोत्सव पर पालना जागरण चढ़ावा लेकर अति उत्साह, उमंग व उल्लास से भगवान को घर ले जाना घर को सजाना हजारों की संख्या में भक्तों का निवास पर आकर पालना झुलाना भक्तिकर रात जागरण करना, संवत्सरी के दिन सभी जीवों से एवं उपस्थित सभी श्रावक-श्राविकाओं से हृदय से क्षमा याचना कर श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय गुमास्तानगर से नाकोड़ा मंदिर में चैत्य परिपाटी में उत्साहपूर्वक जिन दर्शन कर इस भावना के साथ परम गुरुभक्त, तपस्वीमना शांत व सरल स्वभावी ट्रस्टी व परिषद पदाधिकारी श्री शांतिलालजी डूंगरवाल घर गये कि पुनः जल्दी आकर देसावगासिक सामायिक लेकर संवत्सरी का प्रतिक्रमण करूंगा।

घर पर बेटा सौरभ पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिजी की

वैरागवासित तथा माता पिता का वियोग आदि की घटना सुना रहा था बहुत ही तन्मयता से सुनते-सुनते अचानक हिचकी आई, नमो अरिहंताणं का उच्चारण करते हुए यह शुद्ध भवों में आत्मा अनंत की ओर गमन कर गई। सभी स्तब्ध रह गये, सन्नाटा छा गया, पत्नी श्रीमती स्नेहलता डूंगरवाल व माता चन्दाबाई उपाश्रय में पूज्य साध्वीजी दर्शितकलाश्रीजी की निश्रा में दोपहर में सवत्सरी प्रतिक्रमण कर रहे थे। बहन को अठाई की तपस्या तथा परिवारजनों को सभी को चौविहार उपवास था। सभी हक्के-बक्के रह गये। पूज्य गुरुदेव श्री नित्यसेनसूरिजी, पूज्य जयरत्नसूरिजी तथा पूज्य चारित्र रत्नविजयजी व पू. वैभवरत्न विजयजी ने सुश्रावक, श्री शांतिलालजी के देहोत्सर्ग पर कहा ऐसी मृत्यु विरले भाग्यशालियों व पूण्यात्मा को ही मिलती है। पूज्य गुरुभगवन्तों ने कहा - श्री शांतिलालजी देव - गुरु धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित थे। वे राष्ट्रसंत श्री के चहेते थे। पिछले चार-पाँच वर्षों से तपस्या में अपना जीवन लगा दिया था।

अहमदाबाद के राजनगर में लगी तपस्या की झड़ी

* पुण्य सम्राट के पूज्य में हुए सभी आराधक तरबतर।
* 3 वर्ष की नन्ही तपआराधक ने की अठाई की तपस्या।
* साढ़े पाँच से लगाकर 12 वर्ष के कुल 230 बच्चों ने किये सिद्धी तप ।
* कुल सात सौ आठ तप आराधकों ने किया सिद्धीतप।
* 18 मासक्षमण : अठाई से 29 उपवास किये 560 तपस्वियों ने।
* 144 चौसठ प्रहरी पौषध : 375 अट्ठम तप।
* जीवदया स्वधर्मी सहायता एवं उपाश्रय हेतु लक्ष्मी की अनवरत वर्षा।
* 1500 से 2000 श्रावकों ने प्रतिदिन प्रवचन व प्रतिक्रमण का लिया लाभ।

काउस्सग्ग

काउस्सग्ग के प्रमाण श्वांसोच्छवास होते हैं, जैसे आठ, पच्चीस आदि श्वांसोश्वांसा सूत्र में एक पद का एक श्वांसोच्छवास माना जाता है याने लोगस्स की एक गाथा में चार पद होते हैं तो चार श्वांसोच्छवास हुए, इस तरह चंदेलु निम्मलपरातक याने छह गाथा तथा एक पद कुल 25 पद या 25 श्वांसोच्छवास। इस तरह नवकार के आठ, पूरे लोगस्स के सत्तावीस, लोगस्स (चंदेसु निम्मलपरा तक) बारह के तीन सौ एवं बीस पांच सौ श्वांस माने जाते हैं। चार पूर्ण लोगस्स व 108 श्वांस होते हैं।

श्री संघ सौरभ

बाबू के मंदिर में पुण्य सम्राट् की प्रतिमा स्थापित होगी

वीतराग परमात्मा प्रभु श्री आदिनाथ भगवान की पावन एवं शाश्वत भूमि श्री पालीताणाजी तीर्थ जहाँ पर विश्व वंदनीय दादा गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा विराजित है। श्री बाबू देरासर में पुण्य सम्राट आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की फोटो की श्रीमती छटी बेन गणेशमलजी रत्नाजी छाजेड़ परिवार हस्ते सागरमलजी अरविंद कुमारजी दिलीप कुमारजी जैन ने लाभ लेकर स्थापना की और परिवार के द्वारा ही वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में भविष्य में प्रतिमाजी की स्थापना (प्रतिष्ठा) की जाएगी। श्री राजेन्द्रसूरी कीर्ति मंदिर ट्रस्ट- भरतपुर इस सुकृत कार्य की अनंत अनुमोदना करता है।

राणापुर। में श्रीमती ज्योति दिनेश सालेचा तथा सुश्री सुदर्शना नाहर के नौ उपवास की तपस्या पर वरघोड़ा, शासनमाता की पूजन, देवपूजन हुए। वरघोड़े में युवाओं ने नाचते-झूमते अनुमोदना के जयकारे लगाये। तप अनुमोदना में श्री मनोहरलाल नाहर, श्री सोहनलाल सेठ, श्री राजेन्द्र सियाल, महेश जैन, पद्मासेठ, सीमा सालेचा, जितेन्द्र सालेचा, नेहा नाहर, पवन नाहर ने विचार प्रकट किये। श्री मुनिसुव्रत जैन श्वे. संघ, श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक व महिला परिषदों ने बहुमान किया। संचालन श्री रजनीश नाहर व आभार श्री जयप्रकाश सालेचा ने माना।

राणापुर में नौ दिवसीय श्री नवकार मंत्र आराधना में 15 तपस्वियों ने भाग लिया। प्रतिदिन तपस्वी एकासणें में रहे। समापन पर जुलूस निकला। कार्यक्रमों में समाज के अग्रणीय महानुभावों ने भाग लिया।

श्रीमती माणकबाई चत्तर नहीं रहीं

श्रीमती माणकबाई चत्तर ने अपने सम्पूर्ण आत्मीय दायित्वों का बखूबी निर्वाह कर मानव जीवन को सार्थकता दी। अंतिम समय तक स्वस्थता के रहते धार्मिक सामाजिक पारिवारिक कार्यों में सक्रिय भूमिका में रहीं। सामायिक, प्रतिक्रमण, नमस्कार महामंत्र का जाप आपकी नियमित दिनचर्या थी। स्वस्थ रहीं तब तक नियमित पूजन, प्रतिक्रमण, प्रवचन में आतीं थीं। श्री सीमंधर स्वामी जिनालय, गुमास्ता नगर इंदौर में रविवारीय सामूहिक सामायिक व भक्तामर में आप अवश्य उपस्थित रहतीं थीं। सरलता, सरसता, मिलनसार, आत्मीयता आपके गहने थे।

एक संस्कारी माता का दायित्व

निभाते हुए अपने बच्चों, पोते, पोती, पड़पोते, नवासी सभी को सुसंस्कारों से सिंचित कर माँ होने का फर्ज निभाया। आज आपके बेटे सामाजिक धार्मिक क्षेत्र में समाज में अग्रिम पंक्ति में हैं तथा आपकी प्रेरणा से विभिन्न धार्मिक आयोजन में अपनी सक्रिय हिस्सेदारी निभाते हैं, अभी-अभी ही श्री सीमंधर स्वामी गुमास्तानगर में सम्पन्न श्री अक्षय निधि तप में एक दिवस के आप लाभार्थी भी रहे।

स्व. श्री मगनलालजी की धर्मपत्नी श्रीमती माणकबाईजी चत्तर का सफर कुक्षी, बदनावर होते हुए इंदौर का रहा। जीवन का आरंभिक दौर संघर्षमय रहा। पति के साथ कदम-कदम पर साथ देते हुए अपने परिश्रम, पुरुषार्थ से घर परिवार की बुनियाद को मजबूती देती गईं। आपने जीवन को विभिन्न प्रकार की तप आराधना, तीर्थ यात्राएँ कर आत्मीय गुणों से पोषित किया।

श्री सिद्धाचल तीर्थ से काफी लगाव था और लगभग नियमित यात्राएँ करतीं थीं। स्व. श्री रमेशचन्द्रजी गांग की बहन माणक बाई बाल्यकाल से ही धार्मिक कार्यों से ओतप्रोत रहीं। आपका वियोग, संघ, समाज, परिषद व परिवार के लिए अपूर्णनीय क्षति है। 'शाश्वत धर्म' परिवार, त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ व परिषद परिवार की ओर से श्रीमती माणकबाई को शत्-शत् नमन करते हुए श्रद्धांजली अर्पित करता है।

श्री पेदमीरम तीर्थ। तीर्थाधिपति श्री आदिनाथ भगवान को स्वर्ण का मुकुट श्रावण सुद 5 शुक्रवार को शुभ बेला में वजावत परिवार- आहोर द्वारा चढ़ाया गया। इस अवसर पर अच्छी संख्या में भक्तगणों की उपस्थिति रही। इस तीर्थ पर आगामी कार्तिक पूर्णिमा दि. 19 नवम्बर 2021 को मेला का आयोजन होगा। गुरुसप्तमी पौष सुद सातम 9.1.2022 को मेला का आदेश कार्तिक पूर्णिमा के दिन दिया जायेगा ट्रस्ट मण्डल द्वारा । मेला का लाभ लेने के इच्छुक भाग्यशाली पेढ़ी से संपर्क करें।

- महेन्द्र. सी. कबडी

राणापुर। यहाँ महापर्व पर्युषण के आयोजन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। जैन ओसवाल पंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम के तीसरे दिन सूरत से पधारे श्री राज सेठ ने श्रावक के 11 कर्त्तव्यों तथा 14 नियमों का विस्तृत विवरण बताया। महिला परिषद के माध्यम से आठों दिन एकासने आयोजित किये गये जिसमें 80 गुरुभक्तों ने भाग लिया। विविध प्रतियोगिताएँ हुईं। प्रतिदिन भगवान की सुन्दर आंगी की गई। आठों दिन 12 घंटों का नवकार जाप भी किया गया। कार्यक्रमों का संचालन श्री सुरेश समीर, राजेश एम. जैन व राहुल नागौरी द्वारा किया गया। एकम को श्री महावीर जन्म वाचन हुआ। सूरत से पधारे

श्री राज सेठ, श्री मोक्ष भंसाली तथा श्री अक्षिल जैन की प्रेरणाएँ सराहनीय रहीं। श्री राजेन्द्र भवन में वीर जन्म का दृश्य प्रस्तुत किया गया।

जन्म वाचन के दिन प्रातः स्वधर्मीवात्सल्य का लाभ श्री राजेन्द्र जवेरीलालजी तलेरा ने तथा शाम का लाभ ओसवाल पंच द्वारा लिया गया। श्री शांतिलाल सकलेचा द्वारा निर्मित श्री सीमंधर राजेन्द्रसूरि दादावाड़ी पर उत्साहपूर्वक वीर जन्म वाचन हुआ। राणापुर में स्थित जैन श्वे. मंदिरों में प्रतिमाओं का शुद्धिकरण किया गया।

शुभम राजपूत के 68 दिवसीय एकासना का 30 सितम्बर को होगा पारणा

पाटण । गुजरात के पाटण नगर में युगप्रभावक पुण्यसम्राट गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज की दिव्य कृपा से एवं गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरिश्वरजी महाराज और आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वर महाराज के आशीर्वाद से मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज की पावन निश्रा में मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी की पावन प्रेरणा से नवकार महामंत्र के अडसठ अक्षर आराधनार्थ गुरु सेवक शुभम राजपूत (पिन्टु) के चल रहे 68 दिवसीय एकासना का पारणा 30 सितम्बर गुरूवार को संपन्न होगा। त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण आयोजित इस कार्यक्रम में गुरु सेवक शुभम का पारणा करवाने जिला कलेक्टर सुप्रीतसिंह गुलाटी एवं पोलिस अधीक्षक अक्षयभाई मकवाणा पधारेंगे, इस प्रसंग पर पाटण जैन संघ सहित अनेक धार्मिक सामाजिक अग्रणी उपस्थित रहेंगे, भाई शुभम तप धर्म के साथ प्रतिदिन परमात्मा की पूजा एवं दादा गुरुदेव और पुण्य सम्राट गुरुदेव का नित्य जाप एवं चातुर्मास प्रारंभ से प्रतिक्रमण श्रीसंघ के साथ कर रहे हैं।

पाटण नगर के त्रिस्तुतिक जैन संघ में विभिन्न कार्यक्रम के साथ हुई पर्युषण पर्व की आराधना

पाटण। गुजरात के पाटण नगर में त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में बिराजमान सौधर्म बृहत्तपागच्छीय त्रिस्तुतिक जैनाचार्य विश्वपूज्य मोहनखेड़ा तीर्थ प्रतिष्ठाचार्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेंद्रसूरीश्वरजी महाराजा के प्रशिष्य जैनाचार्य पुण्यसम्राट युगप्रभावक गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्त सेन सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्य एवं गच्छाधिपती श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी महाराज एवं आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज मुनिराज निपुणरत्नविजय जी महाराज आदि श्रमण भगवंत एवं साध्वी श्री शाशनलताश्रीजी महाराज आदि श्रमणी भगवंत ठाणा 34 की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण आयोजित पर्युषण पर्व की आराधना अनेक धार्मिक सामाजिक एवं जीवदया के कार्यक्रम के साथ संपन्न हुई, तप धर्म की आराधना में मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्नविजयजी महाराज, मुनिराज श्री पवित्ररत्नविजयजी महाराज साध्वी श्री कल्परेखाश्री जी म.सा,साध्वीजी श्री कुमदप्रियाश्री जी म.सा,साध्वी श्री तमीदर्शनाश्रीजी म.सा,साध्वी श्री रीतदर्शना श्री जी म.सा,साध्वी श्री विधिलता श्री

जी म.सा, एवं पाटण नगर पालिका मुख्य अधिकारी पांचाभाई माली, भरतकुमार लक्ष्मीचंदजी ,युगकुमार कमलेशभाई,आश्वीकुमारी कमलेशभाई, पलककुमारी अलकेशभाई,कोमलकुमारी दसरथभाई रावल(जैनेतर), विभाकुमारी सोलंकी,प्रनाली कुमारी आदि ने अठ्ठाई तप की तपस्या की , इसी क्रम में अनेक भाई बहनों ने पर्युषण तप,अठ्ठम तप, चौंसठ प्रहरी पौषध सहित अनेक आराधना की, सभी का पारणा त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से पंचासरा जैन यात्रिक भवन के होल में आयोजित कार्यक्रम में किया गया जिसमें पारणे एवं श्री संघ के सुबह का नास्ता ओर दोपहर की नवकारसी का लाभ त्रिस्तुतिक जैन संघ के पुर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्व.कीशोरमल खीमावत परिवार की ओर से खिमेल राजस्थान निवासी बसंतीबेन कीशोरमलजी खिमावत परिवार मुंबई की ओर से लिया गया पाटण के त्रिस्तुतिक जैन संघ में वर्तमान में सिर्फ 15 सदस्य यहां पर रहते हैं, फिर भी मुनिराज श्री की प्रेरणा से अनेक शासन प्रभावना के कार्य कर गुरु गच्छ महिमा में अभिवृद्धि कर अनुमोदनीय कार्य किए है स्मरण रहे कि पाटण नगर पालिका के मुख्य अधिकारी (चिफ ओफिसर) पांचाभाई माली ने पर्युषण पर्व में मुनिराज श्री की प्रेरणा से आठ उपवास (अठ्ठाई) की तपस्या की जिनके पारणा में अनेक साधु साध्वी भगवंतो की पावन निश्रा ओर जैन संघ एवं जैनेतर समाज के अनेक भाई बहनों की उपस्थिति रही, जन्म से जैन नहीं फिर भी संपुर्ण नियम पुर्वक तपस्या की ओर प्रतिदिन प्रवचन सुने, एवं मुनिराज श्री की निश्रा में संवत्सरी का प्रतिक्रमण श्रीसंघ के साथ किया, इस पर्व के आठों दिन में विभिन्न समुदायों के श्रमण श्रमणी भगवंतो एवं स्थानीय जैन संघ के अनेक संघो के सदस्यों ओर विभिन्न प्रसंगों पर जैनेतर समाज के 5300 से अधिक सदस्यों की उपस्थिति रही प्रतिदिन प्रवचन में नगद राशि सहित उत्तम द्रव्यों से प्रभावना, पर्व के आठों दिन पाटण सहित जिले के अनेक गांवों में बड़ी रकम का उपयोग कर जीवदया आदि के कार्यक्रम का लाभ पुण्यसम्राट गुरुदेव श्री के परम गुरुभक्त हिराणी परिवार से रेवतड़ा निवासी रमेशकुमार उकचंदजी हिराणी परिवार चौन्नई (हिराणी फाउंडेशन) की ओर से लिया गया ,प्रतिदिन विभिन्न जिनालयों में परमात्मा की अंगरचना एवं सभी की साधर्मिक भक्ति सहित धार्मिक सामाजिक कार्यक्रम एवं सात क्षेत्र में ओर चौत्य परिपाटी सहित अनेक लाभ त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण के सदस्यों ने लिए,पर्युषण पर्व के पांचवें दिन भगवान महावीर स्वामी जन्म वांचन का आयोजन हुआ जिसमें पुण्य सम्राट गुरुदेव श्री के जापान स्थित भक्तों सहित त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण के सदस्यों एवं आराधना करने पधारें भाई बहनों ने पालणा ओर स्वप्न आदि के अनेक लाभ लिए, स्वप्न एवं पारणा के दर्शनार्थ जिला कलेक्टर सुप्रितसिंह गुलाटी, पोलीस अधिक्षक अक्षयभाई मकवाणा,डी. वाय. एस. पी. सोनारा , जिला विकास अधिकारी रमेशभाई मेरजा, पालिका मुख्य अधिकारी पांचाभाई माली, पी आई परमार, पालिका प्रमुख स्मीताबेन पटेल आदि अनेक पधारे एवं मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी आदि के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किए ओर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण को पर्युषण पर्व की शुभकामनाएं प्रदान की, महावीर जन्म वांचन के दिन पालने के दर्शनार्थ जैन संघ के सदस्यों की अच्छी उपस्थित रहीं, एवं अन्य समाज के करीबन 2000 से ज्यादा भाई बहनों ने उपाश्रय में आकर लेनाजी के दर्शन का लाभ लिया,पर्युषण में मुमुक्षु बहनों ने प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की रंगोली ओर संवत्सरी के दिन बारसा सुत्र आधारित चित्रों की आकर्षक रंगोली बनाई गई।

जैन विश्व

* श्री आनन्दमलजी छल्लाणी को स्थानकवासी आचार्य डॉ. शिवमुनिजी म. के सान्निध्य में सर्वसम्मति से स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया गया।

* लोकसभाध्यक्ष श्री ओम बिड़ला ने कोटा में स्थित दिगम्बर मुनि श्री सुधासागरजी म. के चरणों में श्रीफल अर्पित कर कोटा चातुर्मास करने की विनंती की।

* पंजाब के मशूहर गायक श्री दलेर मेहन्दी जैसलमेर में पटवा हवेली देखकर बेहत अभिभूत हो उठे।

* गुजरात के मुख्यमंत्री पद से श्री विजय रूपाणी जैन हटा दिये गये हैं। श्री भूपेन्द्र पटेल नये मुख्यमंत्री होंगे।

* उदयपुर (राजस्थान) में धर्म, समाज, साधु-सन्तों एवं स्वधर्मी बन्धुओं की सहायता तथा रक्षा के उद्देश्य को लेकर श्री महावीर सेना का गठन किया गया है। सकल जैन समाज की बैठक में इस निर्णय में नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाबचंद कटारिया मुख्य संरक्षक बनाये गये हैं।

* वासणा (अहमदाबाद) में स्थित भाववर्धक श्री सुपार्श्वनाथ मंदिर के ताले तोड़कर चोर 15 जिनप्रतिमाएँ चार सिद्धचक्र भगवान, चांदी के आभूषण आदि चुरा ले गये। पुलिस में रिपोर्ट होने पर पुलिस ने सीसीटीवी के आधार पर मंदिर के निकट जमीन से मूर्तियां व चांदी बरामद की।

* **चेन्नई।** श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, नुंगम्बाक्कम (चेन्नई) की ओर से अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग एवं तरुण स्वाध्यायी प्रणत धींग का सम्मान किया गया। संघ ने शॉल, मुक्ताहार व प्रशस्ति पत्र के साथ उनका सम्मान किया। कवि डॉ. धींग ने क्षमा और प्रेम पर राजस्थानी छंद सुनाए।

* मदुरई नगर में यतीन्द्र भवन में चातुर्मासार्थ विराजमान मुनिराज श्री हितेशचन्द्रविजयजी म. के सान्निध्य में पर्युषण पर्व उत्साह से मनाया गया। प्रत्येक श्रावण को पांच कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। तेरापंथी मुनिश्री अर्हतकुमारजी का यतीन्द्र भवन पर आगमन हुआ। दो संतों का मिलन हुआ।

– दिनेश सालेचा

नाकोड़ा तीर्थ पर व्यवधान

विश्वविख्यात श्री नाकोड़ा तीर्थ पर दि. 23.08.2021 को प्रातः 10.50 बजे तीर्थ परिसर में चल रहे मंदिर जीर्णोद्धार कार्य को बन्द करवाये जाने के उद्देश्य से मेवानगर ग्राम के उगमसिंह पुत्र मुलसिंह एवं पाँच छः अन्य असामाजिक लोगों ने ईरादतन शांति भंग करने हेतु तीर्थ में काम कर रहे मजदूरों को कार्य करने से रोका एवं तीर्थ में दर्शनार्थ आई बहिन - बेटियों के सामने अभद्र भाषा का प्रयोग किया गया। जिस पर तीर्थ के पदाधिकारी एवं व्यवस्थापक द्वारा इस तरह के अभद्र कृत्य करने से रोके जाने पर तीर्थ के पदाधिकारियों के साथ हाथापाई एवं अभद्र व्यवहार किया गया। तीर्थ प्रशासन को धमकी दी गई तीर्थ परिसर में कोई भी कार्य करेगा तो हम उसके हाथ पांव तो देंगे।

शत्रुंजय पर्वत पर अवैध अतिक्रमण नहीं हो

शत्रुंजय शिखर के संबंध में गुजरात हाईकोर्ट ने महत्वपूर्ण फैसला देते हुए कहा है कि यह जैनों का अति यात्राधाम है। इसे स्वच्छ और व्यवस्थित रखने का कार्य जैन ट्रस्टों द्वारा किया जाता है। इसमें तलहटी से लेकर शिखर तक किसी प्रकार का अवैध अतिक्रमण हुआ है, तो उसे तुरंत हटाया जाए। हाईकोर्ट ने ब्राह्मणों के ही महादेव मंदिर में पुजारी बनने की दलील को भी खारिज कर दिया। पीठ ने ताकीद की कि ऐसा कोई नियम हो तो सरकार को इसके लिए जैन ट्रस्ट के साथ चर्चा करनी होगी।

जैन हेरिटेज चेयर की स्थापना

महू। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू (अम्बेडकर नगर), इंदौर की कुलपति प्रो. आशा शुक्ला द्वारा वि.वि. में अहिंसा, हारमोनी एवं जैन हेरिटेज चेयर की स्थापना की गई है। इस चेयर के अन्तर्गत अहिंसक जीवन शैली के सन्दर्भ में अनुसंधान, प्रचार-प्रसार, साम्प्रदायिक सौहार्द्र के विकास के साथ में जैन विरासत के सर्वेक्षण, संकलन एवं संरक्षण की अनेक योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जायेगा।

प्रसिद्ध गणित इतिहासज्ञ एवं जैन मनीषी प्रो. अनुपम जैन को इस चेयर का मानद चेयर प्रोफेसर मनोनीत किया गया है। म.प्र. शासन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा पुनर्गठित पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति में डॉ. अनुपम जैन को विशेषज्ञ रूप में मनोनीत किया गया है।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सरत

परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष संयम-वंदन यात्रा पर

मुंबई । अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा त्रिस्तुतिक पाट परंपरा के श्रवण भगवंत - श्रमणी भगवंतों की सुखशाता पृच्छा व दर्शनार्थ संयम वंदन यात्रा का आयोजन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू के नेतृत्व में दिनांक 1 अक्टूबर 2021 से किया जा रहा है। जालोर में चातुर्मासार्थ विराजित परम पूज्य गच्छाधिपति, धर्म दिवाकर श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की सुखशाता पृच्छा सह राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का आयोजन 1 अक्टूबर को प्रातः होगा। तत्पश्चात संयम वंदन यात्रा रवाना होगी। यात्रा प्रवास के कार्यक्रम तदनुसार हैं।

* दिनांक 1 अक्टूबर को सायं श्री नाकोड़ा तीर्थ आगमन व रात्रि विश्राम ।
* 2 अक्टूबर पुण्य सम्राट समाधि मंदिर दर्शन व आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. की सुखशाता पृच्छा पश्चात डीसा, लवाना व रात्रि में थराद विश्राम ।
* दिनांक 3 अक्टूबर 2021 को प्रातः मोटा महावीर दर्शन पश्चात् पाटण आगमन । मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी म.सा. व मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी के दर्शन व सुखसाता पृच्छा। भोजन-रात्रि छत्राल तीर्थ विश्राम ।
* दिनांक 4 अक्टूबर 2021 अहमदाबाद आगमन। चार्तुमासार्थ विराजित मुनिराज श्री जिनागमरत्न विजयजी आदि ठाणा व श्रमणी भगवंतों की सुखशाता पृच्छा व दर्शन। परिषद की राष्ट्रीय व प्रांतीय इकाइयों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि दर्शन वंदन यात्रा व राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सहभागिता करें ।

श्रीमती सकलेचा के निधन से शोक

बड़ावदा । नगर के कपड़ा व्यवसायी, समाजसेवी मोहनलाल सकलेचा की धर्मपत्नी श्रीमती मांगूबाई सकलेचा के निधन का समाचार मिलने के बाद आचार्य श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा., मालव केसरी श्री हितेशचन्द्र विजयजी म.सा., श्री विनयरत्नजी बापू महाराज सहित अनेकों साधु भगवंतों, समाजसेवियों ने शोक संदेश प्रेषित किये हैं। आचार्यश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी ने कहा कि धर्मनिष्ठ श्रीमती मांगूबाई एक धर्मनिष्ठ होकर तपस्विनी थीं। आपने अपने जीवनकाल में दो वर्षीतप, उपध्यान तप, 3 से 16 उपवास, नवपदजी की ओलीजी, बीस स्थानक की ओलीजी सहित कई तपस्या कर जिनशासन की शोभा बढ़ाई। आपने संदेश में बताया कि श्रीमती सकलेचा हमेशा साधु भगवन्तों की वेयावच्च में अग्रणी रहकर सेवा करती थीं।

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
ए/RNP/MP/MANDSAUR/113/ 2021-23
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- | वर्ष - 68, अंक 9 | कुल पृष्ठ कवर सहित - 92

68 अक्षर तीर्थ के निर्माण में तेजी लाने का संकल्प

तीर्थ ट्रस्ट मंडल के ट्रस्टी मार्गदर्शन हेतु गच्छाधिपति की सेवा में

मेघनगर । राजस्थान के जालोर जिले के ग्राम मोदरान से सटे श्री यतीन्द्र नगर रानीवाड़ा काबा में पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से निर्माणाधीन श्री नवकार 68 अक्षर तीर्थ धाम जो कि पुण्य सम्राट का दिव्य स्वप्न भी है के ट्रस्ट मंडल की बैठक 18 एवं 19 जुलाई 2021 को सम्पन्न हुई जिसमें ट्रस्ट मंडल के सभी ट्रस्टी उपस्थित हुए और तीर्थ विकास के कार्यों का अवलोकन भी किया और तीव्र गति से तीर्थ के निर्माण और अन्य प्रोजेक्ट को पूर्ण कर गुरुदेव के इस स्वप्न को शीघ्र साकार करने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय भी सर्वसम्मति से पारित किए गए।

जहाँ एक ओर तीर्थ परिसर में मंदिर निर्माण का कार्य तीव्र गति से जारी है तो वहीं धर्मशाला, भोजनशाला, उपाश्रय और प्रवचन हाल, बगीचा निर्माण आदि के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई। ट्रस्ट मंडल की बैठक में तीर्थ में जिनालय निर्माता टी. मांगीलालजी, बाबूलालजी रतनपुरा वोहरा सहित ट्रस्ट मंडल के भैरूलालजी सेठ, ओ.सी. जैन सा., रमेशजी लुक्कड़ भीनमाल, टाइगरजी भंडारी, रमेशजी वेदमुथा, जी.एम. रेवतड़ा, उत्तमजी बाफना, महावीरजी हीरानी, दीपचंदजी कटारिया संघवी, रमेशभाई वोरा नडियाद, सूर्यप्रकाशजी भंडारी, अश्विनभाई वोहरा, मुकेशजी जैन झाबुआ सहित तीर्थ में अन्य प्रोजेक्ट का कार्य कर रहे आर्किटेक्ट एवं इंजीनियर उपस्थित थे। इस दौरान तीर्थ ट्रस्ट मंडल के सभी सदस्यों ने जालोर में पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. का भी दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

भांडवपुरतीर्थ यात्रा पर कई संघ

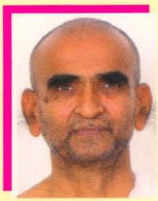

भांडवपुरतीर्थ । प्राचीन तीर्थ श्री भांडवपुरतीर्थ में दर्शनार्थ तथा जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. से मिच्छामी दुक्कडम कहने के लिये अहमदाबाद से 550 यात्री निजी बसों में पहुंचे। पर्युषण के पश्चात् जीरावला, जसवन्तपुरा,रामसींग, भीनमाल, पादरू, सायला, मेंगलवा, जीवाणा, पिपलौदा, मेघनगर आदि नगरों के श्रीसंघों का आगमन हुआ। टाण्डा, भीलवाड़ा, सांचोर, धानेरा आदि से सभी गुरुभक्त पधारे सभी का स्वागत किया गया।